



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 196]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, दिसम्बर 30, 2004/पौष 9, 1926

No. 196]

NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 30, 2004/PAUSA 9, 1926

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय

अधिसूचना

लखनऊ, 23 दिसम्बर, 2004

प्रथम शैक्षणिक अध्यादेश

क्रिस्त-1

प्रस्तुत :

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

भारत सरकार

नई दिल्ली

अक्टूबर, 1996

(16-10-1996 को भेजा गया)

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, भारत सरकार द्वारा
दिनांक 28-01-1997 के पत्र सं. एफ. 8-14/96-डेस्क(यू) (ए) के
अंतर्गत अनुमोदित)

अध्याय-I

अध्ययन विद्यापीठ और विभाग/केन्द्र

[धारा 4, 5(xii), 5(xiv) एवं

परिनियम 17(1) एवं 17(5)(क)]

अध्ययन विद्यापीठ

1. विश्वविद्यालय में निम्नलिखित विद्यापीठों की स्थापना की जाएगी :—
1. अंबेडकर अध्ययन विद्यापीठ
2. सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

3. पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ

4. भू-विज्ञान विद्यापीठ

5. जैव-विज्ञान और प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

6. गृह विज्ञान विद्यापीठ

7. ऊर्जा अध्ययन और ऊर्जा प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

8. सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

9. प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

10. पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ

11. मानविकी विद्यापीठ

12. भाषा और साहित्य विद्यापीठ

13. ललित कला विद्यापीठ

14. परफार्मिंग आर्ट विद्यापीठ

15. वाणिज्य विद्यापीठ

16. अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

17. विधि अध्ययन विद्यापीठ

स्थापित किए जाने वाले अन्य विद्यापीठों का निर्धारण बाद में किया जा सकता है।

विभाग

2. विश्वविद्यालय में निम्नलिखित विभागों की स्थापना की जाएगी :—

1. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

2. सूचना प्रौद्योगिकी विभाग

3. जन-संचार एवं पत्राचार विभाग
4. पर्यावरण प्रभाव अध्ययन विभाग
5. पारिस्थितिकी ऊद्धार एवं संरक्षण विभाग
6. अनुप्रयुक्त भू-विज्ञान विभाग
7. भू-भौतिकी विभाग
8. भू-रसायन विभाग
9. अनुप्रयुक्त पौध-विज्ञान विभाग
10. अनुप्रयुक्त पशु विज्ञान विभाग
11. जैव-प्रौद्योगिकी विभाग
12. मानव विकास और परिवार अध्ययन विभाग
13. गृह प्रबंध विभाग
14. खाद्य एवं पुष्टाहार विभाग
15. वस्त्र और कपड़ा विभाग
16. गृह विज्ञान विस्तार विभाग
17. नवीनीकरण ऊर्जा विभाग
18. गैर-नवीनीकरण ऊर्जा विभाग
19. अर्थशास्त्र विभाग
20. समाजशास्त्र विभाग
21. राजनीति विज्ञान विभाग
22. समाज कार्य विभाग
23. मानव-विज्ञान विभाग
24. कानून विभाग
25. बुद्धवादी अध्ययन विभाग
26. ग्रामीण प्रबंध विभाग
27. इलेक्ट्रानिक्स एवं दूरसंचार विभाग
28. अनुप्रयुक्त भौतिक विज्ञान विभाग
29. अनुप्रयुक्त रसायन-शास्त्र विभाग
30. अनुप्रयुक्त गणित एवं सांख्यिकी विभाग
31. इतिहास विभाग
32. शिक्षाशास्त्र विभाग
33. दर्शनशास्त्र विभाग
34. मनोविज्ञान विभाग
35. संस्कृत एवं पाली विभाग
36. हिन्दी विभाग
37. अंग्रेजी एवं यूरोपीय भाषा विभाग
38. उर्दू विभाग
39. एशियाई भाषा विभाग
40. चित्रकला विभाग
41. मूर्ति-कला विभाग
42. संग्रहालय विज्ञान विभाग

43. अनुप्रयुक्त कला विभाग
44. संगीत विभाग
45. नृत्य विभाग
46. नाट्य विभाग
47. लेखा एवं वित्त विभाग
48. व्यवसाय अध्ययन विभाग
49. बैंकिंग विभाग
50. औषधि विज्ञान विभाग
51. अंतरिक्ष विज्ञान विभाग
52. कम्प्यूटर विज्ञान विभाग
53. मानव अधिकार विभाग
54. पर्यावरण विज्ञान विभाग
55. सतत शिक्षा एवं सामुदायिक सेवा विभाग

विद्यापीठों को आवंटित विभाग

3. (I) सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :—
 - (क) पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
 - (ख) सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
 - (ग) जन-संचार एवं पत्रकारिता विभाग
 - (घ) कम्प्यूटर विज्ञान विभाग
 - (ङ) सतत शिक्षा एवं सामुदायिक सेवा विभाग
 - (च) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (II) पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :—
 - (क) पर्यावरण प्रभाव अध्ययन विभाग
 - (ख) पारिस्थितिकी पुनरुद्धार एवं संरक्षण विभाग
 - (ग) पर्यावरण विज्ञान विभाग
 - (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (III) पृथ्वी-विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :—
 - (क) अनुप्रयुक्त भू-विज्ञान विभाग
 - (ख) भू-भौतिकी विभाग
 - (ग) भू-रसायन विज्ञान विभाग, और
 - (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (IV) जीव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :
 - (क) अनुप्रयुक्त भू-विज्ञान विभाग
 - (ख) भू-भौतिकी विभाग
 - (ग) भू-रसायन विज्ञान विभाग, और
 - (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए

(V) गृह विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) मानव विकास एवं परिवार अध्ययन विभाग
- (ख) गृह प्रबंध विभाग
- (ग) खाद्य एवं पुष्टाहार विभाग
- (घ) कपड़ा और सूती वस्त्र विभाग
- (ङ) गृह विज्ञान विस्तार विभाग, और
- (च) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (VI) ऊर्जा अध्ययन एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) नवीनीकरण ऊर्जा विभाग
- (ख) गैर-नवीनीकरण ऊर्जा विभाग, और
- (ग) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (VII) सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) मानव-शास्त्र विभाग
- (ख) बुद्धवादी अध्ययन विभाग, और
- (ग) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (VIII) प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) ग्रामीण प्रबंध विभाग,
- (ख) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (IX) गृह विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) इलेक्ट्रॉनिक्स एवं दूरसंचार विभाग
- (ख) अनुप्रयुक्त भौतिक विज्ञान विभाग
- (ग) अनुप्रयुक्त रसायन विज्ञान विभाग
- (घ) अनुप्रयुक्त गणित एवं सांख्यिकी विभाग, और
- (ङ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (X) मानविकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) मनोविज्ञान विभाग, और
- (ख) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XI) भाषा और साहित्य विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) संस्कृत एवं पाली विभाग
- (ख) हिन्दी विभाग
- (ग) अंग्रेजी एवं यूरोपीय भाषा विभाग
- (घ) उर्दू विभाग
- (ङ) एशियाई भाषा विभाग, और
- (च) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए

(XII) ललित कला विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) चित्रकला विभाग
- (ख) मूर्ति-कला विभाग
- (ग) संग्रहालय विज्ञान विभाग
- (घ) अनुप्रयुक्त कला विभाग, और
- (ङ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XIII) प्रदर्शन कला विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) संगीत विभाग
- (ख) नृत्य विभाग
- (ग) नाट्य विभाग, और
- (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XIV) वाणिज्य विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) लेखाकरण एवं वित्त विभाग
- (ख) व्यवसायिक अध्ययन विभाग
- (ग) बैंकिंग विभाग, और
- (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XV) अंबेडकर अध्ययन विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) अर्थशास्त्र विभाग
- (ख) इतिहास विभाग
- (ग) राजनीति विज्ञान विभाग
- (घ) दर्शन शास्त्र विभाग
- (ङ) शिक्षा शास्त्र विभाग
- (च) समाज शास्त्र विभाग, और
- (छ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XVI) विधि अध्ययन विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) मानव अधिकार विभाग
- (ख) कानून विभाग, और
- (घ) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
- (XVII) अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (क) अंतरिक्ष विज्ञान विभाग
- (ख) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विभाग,
- (ग) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए

4. इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :

- (i) सतत् शिक्षा एवं सामुदायिक सेवा केन्द्र
- (ii) आपादा-प्रबंध केन्द्र
- (iii) दूरस्थ शिक्षा केन्द्र

- (iv) उपकरण व्यवस्था और अभिकल्प अभियंत्रण केन्द्र, और
- (v) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
5. (i) सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :
- (क) सतत शिक्षा एवं सामुदायिक सेवा केन्द्र, और
- (ख) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
5. (ii) पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :
- (क) आपदा प्रबंधन केन्द्र, और
- (ख) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
5. (iii) भौतिक विज्ञान विद्यापीठ में निम्नलिखित विभाग निर्दिष्ट किए जाएंगे :
- (क) उपकरण व्यवस्था और अभिकल्प अभियंत्रण केन्द्र, और
- (ख) ऐसे अन्य विभाग जिनका सृजन भविष्य में किया जाए
5. (iv) जैसे-जैसे अन्य केन्द्र बनाए जाएंगे वैसे-वैसे उन्हें उनकी शैक्षणिक प्रासंगिकता के अनुसार विभिन्न विद्यापीठों में निर्दिष्ट किया जाएगा।
6. केन्द्रों की संगठनात्मक संरचना और उनके शैक्षणिक कार्यक्रम उन विद्या परिषदों द्वारा निर्धारित किए जाएंगे जिनसे उन्हें संबद्ध किया गया है।

अध्याय-II

विद्यापीठ बोर्ड

[परिनियम 17 (2), (3), (4)]

संविधान

1. प्रत्येक विद्यापीठ में एक विद्यापीठ बोर्ड होगा। परिनियम के उपबंध 17(2) के अधीन बनाए गए पहले विद्यापीठ बोर्ड का कार्यकाल समाप्त हो जाने पर विद्यापीठ बोर्ड निम्नलिखित सदस्यों को शामिल करके गठित किया जाएगा :—
- (i) विद्यापीठ का संकायाध्यक्ष (पदेन अध्यक्ष)
- (ii) विद्यापीठ में विभागों के अध्यक्ष (पदेन)
- (iii) विद्यापीठ के सभी आचार्य
- (iv) वरिष्ठता के अनुसार बारी-बारी से प्रत्येक विभाग से एक उपाचार्य और एक प्राध्यापक
- (v) कुलपति द्वारा नामित किया गया विद्यापीठ से निर्दिष्ट केन्द्र का एक अध्यापक
- (vi) कुलपति द्वारा प्रत्येक ऐसी अन्य विद्यापीठ बोर्डों से एक प्रतिनिधि का नामांकन किया जाएगा जिनके साथ विद्यापीठ में अन्तर्शाखा कार्य होता है।
- (vii) कुलपति द्वारा नामित शिक्षाविद् (परन्तु दो से अधिक नहीं) विषयों के विशेषज्ञ को वरीयता।

- (viii) संबंधित विषयों में विशेष ज्ञान रखने वाले अथवा विशेषज्ञता रखने वाले विद्यापीठ बोर्ड द्वारा नामित किए गए ऐसे व्यक्ति जो विश्वविद्यालय के अथवा इसके किसी महाविद्यालय/संस्थान के कार्मिक न हों। परन्तु इनकी संख्या पांच से अधिक न होगी।

कार्यकाल

2. नामित सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। परन्तु वे पुनः नामित किए जाने के पात्र होंगे।

अध्यक्ष

3. विद्यापीठ का संकायाध्यक्ष बोर्ड का अध्यक्ष होगा और बोर्ड का अधिवेशन आहूत करेगा।

कार्य

4. विद्यापीठ बोर्ड के कार्य निम्न प्रकार होंगे :—

- (क) विद्यापीठ के विभागों/केन्द्रों में शिक्षण और अनुसंधान कार्य का समन्वय करना।
- (ख) विद्यापीठ में किसी विभाग के कार्यक्षेत्र में न आने वाले विषयों अथवा क्षेत्रों में शिक्षण और अनुसंधान कार्य आयोजित करने के लिए समितियां नियुक्त करना और कुलपति के अनुमोदन से ऐसी समितियों के कार्य का पर्यवेक्षण करना।
- (ग) विभागों/केन्द्रों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के अध्ययन/सार के पाठ्यक्रम शोध उपाधियों को शामिल करते हुए अनुमोदित करना।
- (घ) पीएच. डी. और अन्य शोध उपाधियों हेतु शोध-पत्रों के मूल्यांकन के लिए परीक्षकों के नाम प्रबंध बोर्ड को संस्तुत करना।
- (ङ) विभागों/केन्द्रों से प्राप्त प्रस्ताव पर विचार करने के उपरान्त शिक्षण कार्य के लिए पदों को सृजित करने अथवा समाप्त करने हेतु विद्यापीठ बोर्ड को संस्तुति देना।
- (च) विद्यापीठ के छात्रों के कल्याण के संबंध में किसी प्रस्ताव पर विचार करना और कार्यवाही करना।
- (छ) शिक्षण और शोध के मानकों के उन्नयन हेतु योजनाओं पर विचार करना और इस संबंध में विद्यापीठ बोर्ड को प्रस्ताव प्रस्तुत करना।
- (ज) ऐसे अन्य सभी कार्यों को करना जो अधिनियम, परिनियम और अध्यादेशों द्वारा निर्धारित किए जाएं तथा ऐसे सभी प्रकरणों पर विचार करना जिन्हें प्रबंध बोर्ड/विद्यापीठ परिषद् अथवा कुलपति द्वारा इसे संदर्भित किया जाए।
- (झ) सामान्य अथवा विशिष्ट, जैसा भी निर्णय किया जाए, ऐसी शक्तियों का संकायाध्यक्ष अथवा बोर्ड के किसी अन्य सदस्य अथवा किसी समिति को प्रत्यायोजित करना।

बैठक

5. बोर्ड की बैठकें सामान्य अथवा विशेष, दो तरह की होगी।

सामान्य अधिवेशन एक वर्ष में दो बार आयोजित किए जाएंगे, जिनमें से एक शैक्षणिक-सत्र के प्रथम त्रै-मास में आयोजित होगा।

6. विशेष अधिवेशन कुलपति के अनुमोदन से स्वयं पहले करके संकायाध्यक्ष अथवा कुलपति के सुझाव पर अथवा बोर्ड के कम से कम एक तिहाई सदस्यों से लिखित अनुरोध प्राप्त होने पर आहूत किया जा सकता है।

गणपूर्ति

7. विद्यापीठ बोर्ड के अधिवेशन के लिए गणपूर्ति कुल सदस्यों के एक तिहाई से होगी।

सूचना

8. विद्यापीठ बोर्ड के सामान्य अधिवेशन की नियत तिथि से कम से कम चौदह दिन पहले और विशेष अधिवेशन हेतु अधिवेशन की नियत तिथि से कम से कम पांच दिन पहले कुल सचिव कार्यालय द्वारा सूचना निर्गत की जाएगी।

कामकाज के नियम

9. अधिवेशनों को संचालित करने के नियम, इस संबंध में बनाए जाने वाले विनियमों द्वारा निर्धारित किए जाएंगे। विनियमों को विद्यापीठ बोर्ड द्वारा बनाया जाएगा।

अध्याय-III

विभाग

[खण्ड 2(छ) परिनियम 17(5) (ग) और परिनियम 8(5) के साथ पढ़ा जाए]

संविधान

1. परिनियम के उपबंध 17 (5) (ग) के अन्तर्गत वर्णित सदस्य विभागों के सदस्य होंगे :—

विभागों के अध्यक्ष और उनके कार्य

उपविधि 8(5)

2. विभागाध्यक्ष विभाग के अधिवेशन आहूत करेंगे और उनकी अध्यक्षता करेंगे।
3. विभागाध्यक्ष:

- (क) विभाग में शिक्षण और शोध कार्य आयोजित करेगा।
(ख) विभाग में शिक्षकों में शिक्षण कार्य का विभाजन करेगा और विभाग के समुचित संचालन के लिए यथा आवश्यक अन्य उत्तरदायित्वों को उन्हें निर्दिष्ट करेगा।
(ग) विशिष्ट उद्देश्यों हेतु नियुक्त की गई विभागीय समितियों के कार्य का समन्वय एवं संयोजन करेगा, और
(घ) संकायाध्यक्ष, विद्यापीठ बोर्ड, विद्या परिषद्, प्रबंध बोर्ड अथवा कुलपति द्वारा उसे सौंपे गए ऐसे सभी कार्यों को करना।

अध्याय-IV

परास्नातक अध्ययन बोर्ड

(उपविधि-18)

1. प्रत्येक विभाग हेतु एक परास्नातक अध्ययन बोर्ड होगा।

संविधान

2. परास्नातक अध्ययन बोर्ड के निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

- (i) विभागाध्यक्ष
(ii) विभाग के सभी आचार्य
(iii) दो उपाचार्य और दो प्राध्यापक वरिष्ठता के अनुसार बारी-बारी से।
(iv) कुलपति द्वारा नामित इसके महाविद्यालयों/संस्थानों में परास्नातक स्तर पर संबंधित विषय के चार शिक्षकों से अधिक नहीं। विभागाध्यक्षों और विभागों के अन्य वरिष्ठ अध्यापकों को बारी-बारी से प्रतिनिधित्व दिया जाए।
(v) विद्यापीठ बोर्ड द्वारा नामित संबंधित विभागों के विषयों में विशेष ज्ञान रखने वाले अथवा विशेषज्ञता रखने वाले ऐसे व्यक्ति जो विश्वविद्यालय के अथवा इसके किसी महाविद्यालय/संस्थान के कार्मिक न हों, परन्तु जिनकी संख्या तीन से अधिक न हो।
(vi) व्यावसायिक महाविद्यालयों के संबंध में संबंधित शाखा के प्रधानाचार्य अथवा विभागाध्यक्ष, जैसा भी मामला हो, अध्ययन बोर्ड का पदेन अध्यक्ष होगा।
(vii) कुलपति की पूर्व अनुमति से जब भी आवश्यक हो, इसकी विशिष्ट बैठकों में पर्यवेक्षकों के रूप में उपस्थित होने हेतु विशेषज्ञों को सहयोजित करने का अधिकार अध्यक्ष के पास होगा।

कार्यकाल

3. अध्ययन बोर्ड के सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष की अवधि के लिए होगा। उपर्युक्त धारा 2, पपपद्ध के तहत की गई नियुक्तियों को छोड़कर सदस्य पुनः नियुक्ति हेतु पात्र होंगे।
4. परिषद् के कार्य परिनियम 18(3) के अनुसार होंगे।

गणपूर्ति

5. अध्यक्ष बोर्ड के अधिवेशन के लिए गणपूर्ति कुल सदस्यों के एक तिहाई से होगी।

सूचना

6. बोर्ड के अधिवेशन की सूचना अधिवेशन की नियत तिथि से 14 दिन पहले कुल सचिव के कार्यालय द्वारा निर्गत की जाएगी।

कार्यवृत्त

7. बोर्ड का अध्यक्ष बोर्ड के अधिवेशनों के कार्यवृत्त निर्गत करेगा और उसकी एक प्रतिलिपि कुल सचिव को भेजेगा।

कामकाज के नियम

8. बैठक के संचालन के नियम, इस संबंध में विद्या परिषद् द्वारा निर्धारित किए गए विनियमों के अनुसार होंगे।

प्रथम शैक्षणिक अध्यादेश किस्त-2**अध्याय-V****स्नातक पूर्व अध्ययन बोर्ड****[परिनियम 18 (1) और (4)]**

1. स्नातक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले प्रत्येक विषय/शाखा हेतु एक स्नातक पूर्व अध्ययन बोर्ड बनाई जाएगी।

2. प्रत्येक बोर्ड में नौ से कम सदस्य नहीं होंगे। बोर्ड का गठन निम्न प्रकार होगा :—

- (i) विश्वविद्यालय में संबंधित विषय का विभागाध्यक्ष पदेन अध्यक्ष होगा।
- (ii) विभाग के आचार्य
- (iii) वरिष्ठता के अनुसार बारी-बारी से विभाग का एक उपाचार्य
- (iv) वरिष्ठता के अनुसार बारी-बारी से विभाग का एक प्राध्यापक
- (v) महाविद्यालयों/संस्थाओं में संबंधित विषय पढ़ाने वाले शिक्षक जिनकी संख्या छः से अधिक न हो।
- (vi) विभागाध्यक्ष के परामर्श से कुलपति द्वारा नामित दो बाहरी विशेषज्ञ।

विश्वविद्यालय के विभाग/विद्यापीठ में न पढ़ाए जाने वाले विषयों/शाखा के संबंध में, अध्ययन बोर्ड का गठन निम्नलिखित को शामिल करके किया जाएगा :—

- (i) प्रधानाचार्य अथवा संबंधित शाखा का विभागाध्यक्ष, जैसा भी मामला हो, अध्ययन परिषद् का पदेन अध्यक्ष होगा।
- (ii) इसके महाविद्यालयों/संस्थाओं में संबंधित विषय के छः शिक्षकों से अधिक नहीं, जो कुलपति द्वारा नामित किए जाएंगे।
- (iii) शाखा में विशेष ज्ञान रखने वाले बाहरी विशेषज्ञ कुलपति द्वारा नामित किए जाएंगे। इनकी संख्या तीन से अधिक नहीं होगी।

कार्यकाल

3. स्नातक पूर्व अध्ययन बोर्ड के सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा और वरिष्ठता के अनुसार बारी-बारी से नियुक्त सदस्यों को छोड़कर, वे सभी पुनर्नियुक्ति हेतु पात्र होंगे।

शक्तियाँ और कार्य

4. परिषद् की शक्तियाँ और कार्य निम्न प्रकार होंगे :—

- (क) विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के बारे में विनियमों के प्रावधानों के अनुसार, संबंधित विषय में परीक्षकों, प्रश्न पत्र तैयार करने वाले इत्यादि के रूप में नियुक्ति

हेतु उपयुक्त नामों की सूची प्रबंध बोर्ड को संस्तुत करना।

(ख) जहां आवश्यक हो, पाठ्य-पुस्तकों संस्तुत करना।

(ग) जब भी कोई आवश्यकता हो, ऐसे विशेषज्ञों से परामर्श करना, जो परिषद् के सदस्य नहीं हैं।

(घ) इससे संबंधित विषयों में अध्ययन के पाठ्यक्रमों के पाठ्य विवरण के संबंध में विद्या परिषद् को संस्तुतियां देना।

(ङ) स्नातक पूर्व पाठ्यक्रमों के मानकों में सुधार हेतु कदम/उपायों व विषय में शिक्षण हेतु विद्यापीठ बोर्ड को संस्तुत करना जिससे विद्या परिषद् को आवश्यक संस्तुतियां दी जा सकें और प्रबंध बोर्ड, विद्या परिषद् व संकायाध्यक्ष द्वारा संदर्भित प्रकरणों पर विचार करना व आख्या प्रस्तुत करना।

कुलपति की पूर्वानुमति से अध्यक्ष को, जब जैसी आवश्यकता हो, इसके अधिवेशन विशेष में पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित रहने हेतु विशेषज्ञों को सहयोजित करने का अधिकार रहेगा।

5. बोर्ड का अधिवेशन बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा आहूत किया जायेगा।

6. विशेष अधिवेशन, अध्यक्ष द्वारा स्वमेव अथवा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष के अनुरोध पर अथवा कुलपति के सुझाव पर अथवा बोर्ड के कम से कम चार सदस्यों से लिखित अनुरोध प्राप्त होने पर आहूत किया जा सकता है।

सूचना

7. बोर्ड के अधिवेशन की सूचना अधिवेशन हेतु निश्चित तिथि से कम से कम तीन सप्ताह पूर्व कुल सचिव कार्यालय द्वारा निर्गत की जायेगी।

गणपूर्ति

8. गणपूर्ति बोर्ड के चार सदस्यों से होगी।

कामकाज के नियम

9. अधिवेशन को संचालित करने के नियम इस संबंध में बनाए गए विनियमों के अनुसार होंगे।

अध्याय-VI**अध्ययन विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष****[परिनियम 7(3)]**

1. विद्यापीठ का संकायाध्यक्ष :

- (क) विभागाध्यक्षों के माध्यम से विद्यापीठ में शिक्षण और अनुसंधान कार्य का समन्वय और सामान्यतः पर्यवेक्षण करेगा।

- (ख) विभागाध्यक्षों के माध्यम से कक्षाओं में अनुशासन बनाएगा।
- (ग) सत्र संबंधी कार्य के मूल्यांकन और भाषणों, ट्यूटोरियलों और सेमीनारों में, जहां ये सभी विनिर्धारित किए गए हैं, में उपस्थिति का अभिलेख रखेगा।
- (घ) विद्या परिषद् द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार विद्यापीठ के छात्रों के संबंध में विश्वविद्यालय की परीक्षाओं की व्यवस्था करेगा।
- (ङ.) विद्यापीठ बोर्ड के अधिवेशन बुलाना और उनकी अध्यक्षता करना तथा बोर्ड के अधिवेशन का कार्यवृत्त बनाना।
- (च) अन्य ऐसे कर्तव्यों का निर्वहन करना जो उन्हें विद्या परिषद्, प्रबंध बोर्ड अथवा कुलपति द्वारा निर्दिष्ट किये जायेंगे।

अध्याय-VII

विश्वविद्यालय में छात्रों का प्रवेश

[खंड-5 (XX), 5(XXI) और 27 (1) (क)]

- विश्वविद्यालय के अधिनियम और परिनियम और अन्य नियमों के प्रावधानों के लिए, बिना किसी पूर्वाग्रह के, संबंधित पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित की गई, परीक्षा अथवा परीक्षाओं को, जब तक वह पास नहीं कर लेता, कोई भी छात्र विश्वविद्यालय के किसी स्नातक पूर्व अथवा परा स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययन के लिए प्रवेश पाने का पात्र नहीं होगा।
- विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र निर्धारित किए गए प्रपत्र पर और प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए नियत की गई तिथि को अथवा अंतिम तिथि से पहले संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष को भेजा जाएगा।
- इस प्रकार प्राप्त आवेदन पत्रों को संकायाध्यक्ष, कुलपति द्वारा गठित की गई, विद्यापीठ/संबंधित विभाग की प्रवेश समिति को अग्रसारित करेगा।
- प्रत्येक पाठ्यक्रम के संबंध में प्रवेश की कार्रवाई निर्धारित क्रिया विधियों के अनुसार, प्रवेश समिति द्वारा पूरी की जाएगी और प्रवेश हेतु संस्तुत किए गए उम्मीदवारों की सूची कुलपति को अनुमोदन हेतु अग्रसारित की जायेगी।
- प्रथम दृष्टांत में सभी प्रवेश अनंतिम होंगे तथा कुलपति द्वारा नियत की गई समय सीमा के अंदर पूरे कर लिए जाएंगे।
- कोई उम्मीदवार प्रवेश का दावा अधिकार के रूप में नहीं करेगा।
- विदेशी नागरिकों का प्रवेश, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर निर्गत किए गए दिशा निर्देशों के अनुसार नियंत्रित किया जाएगा।

- विश्वविद्यालय पीएच. डी. की उपाधि हेतु बाह्य पंजीकरण सहित, अंशकालिक और पूर्णकालिक दोनों आधार पर, विभिन्न विषयों/शाखाओं में पीएच. डी. कार्यक्रमों हेतु छात्रों का प्रवेश/पंजीकरण कर सकता है, जिनके विवरण समय-समय पर विनियमों के माध्यम से निर्धारित किए जाएंगे।

पीएच. डी. उपाधि हेतु पंजीकरण, सामान्यतः एक वर्ष में दो बार (अप्रैल और अक्टूबर में) किया जायेगा।

- विश्वविद्यालय में अध्ययन के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के उद्देश्यों हेतु 50 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए आरक्षित होंगी।

अध्याय-VIII

पंजीकरण पंजिका

पंजीकरण पंजिका का रखरखाव

- विश्वविद्यालय पंजीकरणों की एक पंजिका बनायेगा जिसमें निम्नलिखित श्रेणियों के व्यक्तियों के नाम पंजीकृत किये जायेंगे :—

- (क) विश्वविद्यालय में अध्ययन के किसी पाठ्यक्रम हेतु प्रवेश पाने पर वे सभी उम्मीदवार जिन्होंने उच्चतर माध्यमिक, इण्टरमीडियेट, स्नातक पूर्व, संबंधित बोर्डों की एस.एस. सी. अथवा उनके समकक्ष मान्यता प्राप्त कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण की हो।
- (ख) विश्वविद्यालय में अध्ययन के किसी पाठ्यक्रम में प्रथम प्रवेश पाने पर ऊपर (क) के उल्लेखों के अतिरिक्त किसी उपाधि, पदवी, डिप्लोमा अथवा प्रमाण पत्र रखने वाले।
- (ग) (क) अथवा (ख) में उल्लिखित व्यक्तियों के अतिरिक्त वे जिन्हें उपस्थिति प्रमाण पत्रों से छूट वाले अथवा बिना छूट के विश्वविद्यालय की किसी परीक्षा हेतु पहली बार बैठने के लिए अनुमत किया गया है।
- (घ) (क), (ख) अथवा (ग) में उल्लिखित व्यक्तियों के अलावा वे व्यक्ति जो विश्वविद्यालय की शोध उपाधि में प्रवेश हेतु उम्मीदवार हैं।

अध्याय-IX

छात्रों का प्रवजन

[(खण्ड 27) (1) (थ)]

अंतर्विश्वविद्यालय प्रवजन

- अन्य विश्वविद्यालयों से स्थानान्तरित और विश्वविद्यालय में प्रवेश मांगने वाले छात्रों को संबंधित पाठ्यक्रम में प्रवेश की अनुमति दी जा सकती है बशर्ते कि :—

- (क) संबंधित अर्हक परीक्षा/उपाधि की समकक्षता विश्वविद्यालय की समकक्षता समिति द्वारा अनुमोदित हो।

- (ख) इस संस्था के विभागाध्यक्ष से जिसमें वे अन्तिम बार अध्ययनरत थे, से निम्न प्रलेख प्रस्तुत करेंगे :-

; पद्ध स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र और

; पपद्ध चरित्र प्रमाण-पत्र

- (ग) उन्होंने पत्रिक विश्वविद्यालय में वहां किए गए अध्ययन के पाठ्यक्रम की अवधि हेतु सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। इस बारे में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र के साथ अभिलेखीय साक्ष्य प्रस्तुत करना होगा।

अध्याय-X

समकक्षता समिति

[खंड-27 (1) (घ)]

1. विश्वविद्यालय में सभी विद्यापीठों के संकायाध्यक्षों को सम्मिलित करते हुए एक समकक्षता समिति होगी और इसके कार्य निम्नानुसार होंगे :-

2. (i) अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित की जाने वाली परीक्षाओं और प्रदान की जाने वाली उपाधियों को पारस्परिक आधार पर मान्यता देना।

(ii) विदेशी विश्वविद्यालयों सहित ऐसी परीक्षाओं/उपाधियों की समकक्षता निर्धारित किया जाना जो समय-समय पर इसे संदर्भित की जाये।

(iii) किसी परीक्षा/उपाधि की मान्यता, ऐसे कारणों और इतने समय के लिए जिसे वह उचित समझे, रोकना, निलंबित करना अथवा निरस्त करना।

(iv) समकक्षता और/अथवा मान्यता के प्रकरणों पर विचार करते समय समिति पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या इत्यादि का अवलोकन कर सकती है और संबंधित विभागाध्यक्ष/संकायाध्यक्ष के विचार/विकल्प ले सकती है अथवा इस उद्देश्य के लिए स्पष्टीकरण मांग सकती है। समकक्षता समिति संबंधित विभागाध्यक्ष से समिति के अधिवेशन में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित होने का अनुरोध कर सकती है।

3. उपर्युक्त धाराओं के होते हुए भी कुलपति किसी परीक्षा/उपाधि को मान्यता/समकक्षता प्रदान कर सकता है और कुलपति द्वारा की गई कार्यवाई को समकक्षता समिति की अगली बैठक में प्रस्तुत किया जायेगा।

4. समिति विद्या परिपद के विचार और अनुमोदन हेतु कामकाज के नियम और दिशा निर्देश निर्धारित करेगी। इस बारे में विद्या परिपद अपनी किन्हीं भी शक्तियों को समकक्षता समिति को प्रत्यायोजित कर सकती है।

अध्याय-XI

अनुदेश और परीक्षा का माध्यम

[खंड-27 (1) (ग)]

विश्वविद्यालय के विद्यापीठों और महाविद्यालयों/संस्थाओं में संचालित भाषाओं में अध्ययन/अनुसंधान के प्रकरणों के अतिरिक्त सभी पाठ्यक्रमों के संबंध में अनुदेश का माध्यम अंग्रेजी/हिंदी होगा।

बशर्ते कि लिखित रूप में वर्णित आपवादिक परिस्थितियों में कुलपति किसी छात्र को किसी परीक्षा में अनुदेश की भाषा के अलावा किसी अन्य भाषा में लिखने की अनुमति दे सकता है।

अध्याय-XII

विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों/संस्थाओं के छात्रों द्वारा देय शुल्क

[खंड-27 (1) (ङ)]

1. शुल्क

विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों/संस्थाओं, जैसा भी मामला हो, के विभिन्न उद्देश्यों हेतु छात्रों द्वारा देय शुल्क परिशिष्ट-1, में यथावर्णित, होंगे जिसे प्रबंध बोर्ड द्वारा समय-समय पर संशोधित किया जा सकता है।

2. नियत तिथि तथा भुगतान का माध्यम

- (i) छात्र शिक्षण शुल्क दो किशतों में जमा करेंगे। पहली किशत अपने प्रवेश के समय और दूसरी 10 फरवरी के पहले।

परीक्षा शुल्क और अन्य जमा यदि कोई हो, प्रवेश के समय एक किशत में भुगतान किये जायेंगे।

- (ii) शुल्क नकद अथवा पोस्टल आर्डर अथवा रेखांकित बैंक ड्राफ्ट जो "वित्त अधिकारी, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ" के पक्ष में हो, के माध्यम से अथवा किसी अन्य रूप में जैसा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित किया जाएगा, देय होगा।

3. भुगतान में देरी अथवा भूल-चूक

- (i) यदि कोई विद्यार्थी समय पर शुल्क का भुगतान नहीं करता है तो भुगतान के समय निम्न प्रकार से विलंब भुगतान शुल्क लिया जाएगा:-

(क) प्रथम दस दिन हेतु 50 पैसे प्रति दिन की दर से,

(ख) उसके पश्चात् जिस माह में शुल्क देय है उसके अंतिम दिन तक दो रुपये प्रति दिन की दर से।

- (ii) कुलपति अथवा उसकी ओर से कोई अन्य

अधिकारी, जिसे शक्तियां प्रत्यायोजित की गई हैं, विशेष मामलों में शुल्क के भुगतान हेतु किसी शर्त में छूट दे सकता है।

- (iii) शुल्क अदायगी न करने वालों के नाम अगले माह की पहली तारीख से विश्वविद्यालय की उपस्थिति पंजिका से हटा दिये जायेंगे।
- (iv) कोई छात्र जिसका नाम उपर्युक्त धारा के अधीन विश्वविद्यालय की उपस्थिति पंजिका से हटाया जा चुका है, को संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष की संस्तुति और पूरी फीस का बकाया तथा अन्य बकायों सहित पुनः प्रवेश शुल्क रु. 10 के साथ विलंब भुगतान शुल्क का भुगतान करने पर पुनः प्रवेश दिया जा सकता है।
- (v) जब कभी भी कोई छात्र विश्वविद्यालय छोड़ना चाहता है तो उसे अपने छोड़ने की तिथि सूचित करते हुए विभागाध्यक्ष/केन्द्र के माध्यम से संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष को एक आवेदन प्रस्तुत करना होगा। यदि वह ऐसा करने में विफल रहता/रहती है तो उसका नाम अधिकतम एक माह की अवधि तक विश्वविद्यालय की उपस्थिति पंजिका में चढ़ा रहेगा, जब तक का उसने शुल्क जमा किया है। उसे इस अवधि के दौरान देय होने वाले सभी शुल्क/प्रभारों का भी भुगतान करना होगा।

4. नेत्रहीन, अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति छात्रों को रियायतें

- (i) नेत्रहीन छात्रों को शिक्षण शुल्क के भुगतान से छूट दी गई है।
- (ii) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति छात्रों को विनियमों के अनुसार शुल्क रियायत प्रदान की जाएगी।

5. (क) निम्नलिखित को शामिल करके बनाई गई समिति की संस्तुति पर विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय-समय पर इस संबंध में दिए गए दिशा निर्देशों के अनुसार एक निश्चित प्रतिशत तक शुल्क मुक्त कर सकेगा :—

- (i) कुलपति द्वारा नामित विश्वविद्यालय का एक संकायाध्यक्ष
- (ii) प्रबंध बोर्ड द्वारा नामित तीन विभागों/केन्द्रों के अध्यक्ष कृपया यही समिति अध्याय-13 के अनुसार छात्रवृत्तियां भी स्वीकृत करेगी।

(ख) यदि शुल्क मुक्ति हेतु आवेदकों की संख्या उपलब्ध

शुल्कमुक्तियों से अधिक होती है तो उपरिलिखित धारा 5(क) में संदर्भित समिति कुछ आवेदकों को अर्ध शुल्कमुक्ति की संस्तुति दे सकती है, परन्तु उसे ऐसा करते समय यह सुनिश्चित करना होगा कि शुल्क-मुक्ति की कुल संख्या निर्धारित सीमा से अधिक न हो।

- (ग) शुल्क में रियायत हेतु आवेदन पत्रों को निर्धारित प्रपत्र पर 31 अगस्त अथवा संकायाध्यक्ष द्वारा निर्धारित की गई किसी अन्य तिथि तक विभाग/केन्द्र के अध्यक्ष के माध्यम से संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष को प्रस्तुत किया जाना होगा। उस तिथि के उपरांत प्राप्त हुए आवेदन पत्रों पर सामान्यतः विचार नहीं किया जाएगा।
- (घ) शुल्क मुक्ति प्रदान करने हेतु छात्रों के आवेदन पत्रों पर संस्तुतियां करते समय निम्नलिखित तथ्यों पर विचार किया जाएगा :—

- (i) छात्र का शैक्षणिक अभिलेख
- (ii) उसकी वित्तीय स्थिति
- (iii) छात्र अथवा उसके माता-पिता/अभिभावक की वित्तीय स्थिति से संबंधित कोई अन्य प्रासंगिक तथ्य

जिन्हें रियायतें प्रदान की गई हैं उन छात्रों की सूची सामान्यतः 30 सितम्बर तक अधिसूचित की जाएगी।

- (ङ) पूर्व के शैक्षणिक वर्ष के दौरान प्रदान की गयी शुल्क मुक्ति आगामी वर्ष में अपने आप नवीनीकृत नहीं की जाएगी। इस प्रकार की रियायत की आवश्यकता वाले छात्रों को प्रत्येक वर्ष नया आवेदन देना होगा। जिन पर उस वर्ष प्राप्त नए आवेदनों के साथ विचार किया जाएगा।

- (च) किसी छात्र की स्वीकृति शुल्कमुक्ति निरस्त की जा सकती है, यदि उसका आचरण अथवा अध्ययन में प्रगति गैर संतोषजनक पाई जाती है अथवा उसके माता-पिता/अभिभावक की वित्तीय स्थिति सुधर जाती है और यदि उसे आगे शुल्क रियायत की आवश्यकता न हो।

6. (i) सुरक्षा राशि पुस्तकालय जमानत धनराशि और अन्य किसी प्रकार के

जमा छात्र के विश्वविद्यालय छोड़ने के उपरांत आवेदन देने पर उसके द्वारा देय सभी बकायों की कटौती करने के उपरांत वापस कर दिये जायेंगे।

- (ii) यदि कोई छात्र विश्वविद्यालय छोड़ने के एक वर्ष के अंदर अपने द्वारा जमा की गई धनराशि की वापसी का दावा पैश नहीं करता है तो यह मान लिया जाएगा

कि छात्र ने उस धनराशि को छात्र कल्याण निधि में दान कर दिया है।

स्पष्टीकरण :

एक वर्ष की अवधि की गणना उसके द्वारा दी जाने वाली परीक्षा के परिणाम घोषित होने अथवा विश्वविद्यालय की पंजीका से उसका नाम हटाए जाने की तिथि, जो भी पहले हो, से की जायेगी।

(iii) यदि शुल्क का भुगतान करने के उपरांत कोई छात्र अपना प्रवेश निरस्त करना चाहता है तो शिक्षण शुल्क, प्रवेश शुल्क, पंजीकरण और मान्यता शुल्क के अलावा उसे सभी शुल्क और जमा वापस दिए जाएंगे बशर्ते कि वापसी हेतु उसका आवेदन पत्र संबंधित शैक्षणिक सत्र शुरू होने के कम से कम ठीक पांच दिन पहले अथवा प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद ठीक पांच दिन के अंदर संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष के पास पहुंच जाए।

(iv) यदि अपने शुल्क का भुगतान कर देने पर भी कोई छात्र विश्वविद्यालय की कक्षाओं में उपस्थित नहीं होता है तो केवल खेलकूद शुल्क और सुरक्षा धनराशि ही वापस की जाएगी वह भी इस शर्त पर कि संबंधित शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ होने के उपरांत पूरे 15 दिन के अंदर ही धन वापसी हेतु उसका आवेदन संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष को प्राप्त हो जाए।

(v) शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ होने से 15 दिनों की समाप्ति के बाद धनराशि वापसी हेतु प्राप्त आवेदन पत्र पर छात्र मात्र सुरक्षा धनराशि/जमा धनराशि की वापसी का पात्र होगा।

(vi) यदि किसी छात्र पर विश्वविद्यालय संपत्ति को क्षति पहुंचाने के कारण कोई धनराशि विश्वविद्यालय को देय होगी तो इसे बकाया शिक्षण शुल्क और जुर्माना यदि कोई होता है, के साथ सुरक्षा जमा धनराशि से काटा जाएगा।

7. जब तक कि छात्र द्वारा अपने सभी बकायों का भुगतान न कर दिया हो, निर्धारित परीक्षा शुल्क न जमा कर दिया हो और संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष, विभाग/केन्द्र के विभागाध्यक्ष से अदेयता प्रमाणपत्र न प्रस्तुत कर दिया हो, तब तक छात्र को हाल टिकट निर्गत नहीं किया जायेगा अथवा परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

अध्याय-XIII

छात्रवृत्ति, अध्येतावृत्ति, पदक, पुरस्कार बंदोबस्ती इत्यादि प्रदान करना

[खंड-5 (13)]

1. विश्वविद्यालय में अध्ययन और अनुसंधान पाठ्यक्रमों को

आगे बढ़ाने के लिए प्रतिभाशाली और योग्य छात्रों को बिना किसी वित्तीय भार के प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, विश्वविद्यालय पर्याप्त संख्या में छात्रवृत्तियां, अध्येतावृत्तियां और शुल्क-मुक्तियां, वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान करने का प्रयास करेगा और देश के अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालय में प्रचलित प्रक्रिया का ध्यान रखते हुए पदक और पुरस्कार भी प्रदान करेगा।

छात्रवृत्ति पूर्ण शुल्क-मुक्ति की स्वीकृति

2. विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय प्रत्येक विषय में छात्रवृत्तियां आरम्भ करेगा।

यहां विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानकों के अनुसार प्रत्येक विद्यापीठ/विभाग/केन्द्र में शिक्षण शुल्क का आधा और पूर्ण शुल्क मुक्ति के रूप में रियायतें देने का प्रावधान होगा। यहां योग्यता छात्रवृत्ति की एक योजना होगी जिसके अन्तर्गत प्रत्येक विषय में पहला एवं दूसरा स्थान पाने वालों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। इसकी मात्रा समय-समय पर विश्वविद्यालय द्वारा निश्चित की जाएगी।

सभी प्रकार की छात्रवृत्तियों का प्रशासनिक संचालन अध्याय-XII में यथावर्णित कुलपति द्वारा गठित विश्वविद्यालय स्तर की एक समिति द्वारा किया जाएगा।

अध्येतावृत्ति

3. विश्वविद्यालय अनुदान के आयोग के मानकों अथवा समय-समय पर अन्य निधिदाता अभिकरणों के नियमों के अन्तर्गत, यथा अनुमोदित, विश्वविद्यालय में अध्ययन अथवा अनुसंधान हेतु अध्येतावृत्तियां आरम्भ की जायेंगी।

विद्यार्थित्व

4. विभिन्न विश्वविद्यालयी परीक्षाओं में उनके सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु विश्वविद्यालय के प्रतिभाशाली छात्रों को पदक/पुरस्कार देने की भी एक योजना होगी।

खंड 5 (xxvii) के तहत बंदोबस्ती

5. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुसार विश्वविद्यालय को समय-समय पर बंदोबस्तियां संस्थापित करने का अधिकार होगा।

इसमें प्रत्येक बंदोबस्ती का प्रशासन चलाने तथा बंदोबस्ती के उद्देश्यों को लागू करने के लिए, कुलपति द्वारा नामित की गई एक समिति होगी।

विश्वविद्यालय में सृजित की गई इन बंदोबस्तियों का प्रशासन चलाने के लिए विस्तृत दिशानिर्देश प्रबंध बोर्ड द्वारा समय-समय पर बनाए जाएंगे।

परिशिष्ट-I

शुल्क-अनुसूची

1. विश्वविद्यालय का प्रत्येक छात्र, शुल्क की पहली किस्त के साथ निम्नांकित प्रत्येक शीर्ष के अन्तर्गत निम्नलिखित धनराशियां जमा करेंगे :—
 - (1) प्रवेश शुल्क रु. 50
प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु मात्र एक बार प्रभार्य
 - (2) नामांकन/पंजीकरण शुल्क केवल रु. 50
विश्वविद्यालय के किसी पूर्व के पाठ्यक्रम में गैर नामांकित छात्रों द्वारा देय
 - (3) जमानत धनराशि :
 - (क) प्रत्येक प्रयोगशाला हेतु रु. 100
जहां छात्र को व्यावहारिक प्रशिक्षण लेना है।
 - (ख) प्रत्येक पुस्तकालय के लिये जिसका छात्र सदस्य हो सकता है। रु. 100
 - (ग) हाल/छात्रावास जमानत रु. 150
धनराशि सहित सामान्य जमानत धनराशि

इन शीर्षों के अन्तर्गत जमा की गई पूरी/आंशिक जमानत धनराशि, आगामी शैक्षणिक सत्र के विश्वविद्यालय के विवेक से वापस की जा सकती है।

- 2. व्यावसायिक अध्ययन और ग्रामीण प्रौद्योगिकी केन्द्र के साथ-साथ सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ के प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित अनुसूची के अनुसार प्रयोगशाला शुल्क का भुगतान करना होगा :—
 - (क) परास्नातक पाठ्यक्रम रु. 250 प्रति वर्ष
अथवा रु. 125 प्रति सेमेस्टर
 - (ख) परास्नातक डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु अथवा रु. 250 प्रति वर्ष
रु. 125 प्रति सेमेस्टर
 - (ग) परास्नातक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम हेतु रु. 125
- 3. विश्वविद्यालय के प्रत्येक छात्र को प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में (दो सेमेस्टर का) निम्नलिखित शुल्क का भुगतान करना होगा :—
 - (क) चिकित्सा जाँच शुल्क रु. 50
 - (ख) खेलकूद शुल्क रु. 50
 - (ग) पुस्तकालय/प्रयोगशाला/परिचय पत्र शुल्क रु. 10

(घ) डुप्लीकेट पुस्तकालय/प्रयोगशाला/

परिचय पत्र शुल्क रु. 50

(मूल के गायब हो जाने की स्थिति में प्रभार्य)

4. अंबेडकर अध्ययन विद्यापीठ में नामांकित छात्र निम्नलिखित शिक्षण शुल्क का भुगतान करेंगे :—

एम. फिल कार्यक्रम	रु. 1000 प्रति वर्ष
पीएच.डी. कार्यक्रम	रु. 1000 प्रति वर्ष
5. सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठों में नामांकित छात्र निम्नलिखित शिक्षण शुल्क का भुगतान करेंगे :—

डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 2000 प्रति वर्ष रु. 1000 प्रति सेमेस्टर
परास्नातक पाठ्यक्रम	रु. 2000 प्रति वर्ष रु. 1000 प्रति सेमेस्टर
एम. फिल कार्यक्रम	रु. 2500 प्रति वर्ष
पीएच. डी. कार्यक्रम	रु. 2500 प्रति वर्ष
6. मानव अधिकार केन्द्र में नामांकित छात्र निम्नलिखित शिक्षण शुल्क का भुगतान करेंगे :—

डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 1000 प्रति वर्ष
अथवा	रु. 500 प्रति सेमेस्टर
एम. फिल कार्यक्रम	रु. 1000 प्रति वर्ष
पीएच. डी. कार्यक्रम	रु. 1000 प्रति वर्ष
7. व्यावसायिक अध्ययन केन्द्र में नामांकित छात्र निम्नलिखित शिक्षण शुल्क का भुगतान करेंगे :—
 - (क) कंप्यूटर साफ्टवेयर अनुप्रयोग

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	रु. 2000
डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 4000 प्रति वर्ष, अथवा रु. 2000 प्रति सेमेस्टर
 - (ख) कार्यालय प्रबंध एवं सचिवीय पद्धति

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	रु. 1000
डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 2000 वार्षिक रु. 1000 प्रति सेमेस्टर
8. ग्रामीण प्रौद्योगिकी केन्द्र में नामांकित छात्र निम्नलिखित शिक्षण शुल्क का भुगतान करेंगे :—

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	रु. 1000
डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 2000 प्रति वर्ष अथवा रु. 1000 प्रति सेमेस्टर
9. विश्वविद्यालय के हर छात्र को विश्वविद्यालय के हाल/

छात्रावास में रहना होगा और विद्युत प्रभारों सहित हाल/ छात्रावास शुल्क के रूप में रु. 1000/- प्रत्येक छा:माही भुगतान करना होगा। उन्हें विनियमों द्वारा निर्धारित किए गये आहार प्रभारों का भी भुगतान करना होगा।

10. विश्वविद्यालय की परीक्षा देने वाले प्रत्येक छात्र निम्नांकित परीक्षा शुल्क का भुगतान करेंगे :—

सभी प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	रु. 150
सभी डिप्लोमा पाठ्यक्रम	रु. 300
सभी परास्नातक पाठ्यक्रम	रु. 300
सभी एम. फिल. कार्यक्रम	रु. 350
सभी पीएच. डी. कार्यक्रम (शोध पत्र के मूल्यांकन हेतु)	रु. 350
मौखिक परीक्षा हेतु	रु. 250

11. शुल्क के भुगतान की विधि इस हेतु बनाये गये अध्यादेश व विनियम में निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप होगी।

12. जब जैसी आवश्यकता हो, अतिरिक्त शीर्षों के अधीन शुल्क प्रभाषित करने और/अथवा विभिन्न शीर्षों के अधीन प्रभाषित किए जाने वाले शुल्कों की धनराशि बदलने का विश्वविद्यालय का अधिकार सुरक्षित है।

13. अन्य विद्यापीठों/केन्द्रों हेतु शिक्षण और परीक्षा शुल्क जैसा समय-समय पर निश्चित किया जाएगा, उस प्रकार होगा।

14. दृष्टिहीन और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति छात्रों को शुल्क रियायत अध्याय-XXII के अध्यादेश-पअ के अनुसार होगी (विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों/ संस्थाओं के छात्रों द्वारा देय शुल्क)

प्रथम शैक्षणिक अध्यादेश किस्त-III

अध्याय-XIV

विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कार्मिकों का सेवा वर्गीकरण, परिलब्धियां, योग्यताएं एवं अन्य नियम व शर्तें

[खंड-27 (1) (द) परिनियम 25 (1) के साथ पढ़ा जाए]

1. "विश्वविद्यालय शिक्षकों" से तात्पर्य प्राचार्य, उपाचार्य, प्राध्यापक और अन्य ऐसे लोगों से है, जिनकी नियुक्ति विश्वविद्यालय अथवा किसी महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित संस्थाओं में शिक्षण कार्य हेतु अथवा अनुसंधान कार्य आयोजित करने हेतु की गई हो और अध्यादेशों द्वारा शिक्षक के रूप में पदनामित किए गए हों, से है।

परिलब्धियां

शिक्षकों की परिलब्धियां निम्न प्रकार होंगी :—

उन्हें निम्नांकित वेतनमानों में वेतन का भुगतान किया जाएगा :—

प्राध्यापक रु. 2200-75-2800-ईबी-100-4000

प्राध्यापक (वरिष्ठ वेतनमान)	रु. 3000-100-3500-125-5000
प्राध्यापक (चयन ग्रेड)	रु. 3700-125-4590-150-5700
उपाचार्य	रु. 3700-125-4590-150-5700
आचार्य	रु. 4500-150-5700-200-7300

किसी शिक्षक की परिलब्धियों में वेतन के अतिरिक्त समान वेतन आहरित करने वाले केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को अनुमन्य महंगाई भत्ता और अन्य भत्ते सम्मिलित होंगे।

सीधी भर्ती पर किसी शिक्षक की नियुक्ति उस पद हेतु निर्धारित वेतनमान के न्यूनतम पर की जाएगी। तथापि चयन समिति की संसुति पर और प्रबंध बोर्ड के अनुमोदन पर किसी शिक्षक का वेतन उच्चतर स्थिति पर नियत किया जा सकता है।

शर्त है कि इस प्रकार स्वीकृत की गई वेतनवृद्धियां विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित की गई अधिकतम सीमा से अधिक नहीं होगी। आगे यह भी शर्त रहेगी कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों की नियुक्ति एवं पदोन्नति के प्रकरणों में वेतन नियत और अन्य संबद्ध मामलों के संबंध में केन्द्रीय सरकार के नियम लागू होंगे।

(ii) वेतन और अन्य परिलब्धियां विश्वविद्यालय अनुदान आयोग/मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दिशानिर्देशों के अनुसार समय समय पर किए गए वेतनमानों के पुनरीक्षण के अधीन होगी।

3. भर्ती और योग्यता

1. विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, उपाचार्य और आचार्य के पदों पर भर्ती अखिल भारतीय विज्ञापन और चयन के माध्यम से योग्यता के आधार पर की जाएगी।

2. प्राध्यापक, उपाचार्य और आचार्य के पदों पर नियुक्ति हेतु वांछित न्यूनतम योग्यता समय समय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारण के अनुसार होगी। ये निम्न प्रकार से हैं :—

(क) प्राध्यापक :—कम से कम 55 प्रतिशत अंकों अथवा इसके समकक्ष ग्रेड के साथ संबंधित विषय में परास्नातक डिग्री और अच्छा शैक्षणिक रिकार्ड

उपयुक्त योग्यताएं पूर्ण करने के अलावा प्राध्यापक पद के लिए उम्मीदवार प्राध्यापकों हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय उपयुक्तता परीक्षा (NET) अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय उपयुक्तता परीक्षा (NET) के समकक्ष घोषित की गई कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण किए होना चाहिए।

अथवा

अपना पीएच. डी. शोध पत्र प्रस्तुत किए होना चाहिए अथवा 31 दिसम्बर 1993 तक अपनी एम. फिल. डिग्री पूर्ण किए होना चाहिए।

(ख) उपाचार्य :—डाक्टरेट की उपाधि अथवा समकक्ष प्रकाशित कार्य सहित अच्छे शैक्षणिक रिकार्ड। सक्रियता से इन कार्यों में संबद्ध होने का साक्ष्य (i) अनुसंधान अथवा (ii) शिक्षण पद्धतियों में नवीनता अथवा (iii) शैक्षणिक सामग्री का प्रस्तुतीकरण।

शिक्षण और/अथवा अनुसंधान कार्य का पांच वर्षों का अनुभव, शर्त है कि इनमें से कम से कम तीन वर्ष किसी विश्वविद्यालय/संस्था में परास्नातक शिक्षण अथवा समकक्ष स्थिति में प्राध्यापक रहा हो। इस शर्त में शिक्षण/अनुसंधान का उत्कृष्ट कीर्तिमान रखने वाले उम्मीदवारों के मामले में छूट दी जा सकती है।

स्पष्टीकरण

उपाचार्यों और प्राध्यापकों के प्रकरणों में "अच्छा शैक्षणिक अभिलेख" निर्धारित करने हेतु निम्नलिखित मानदंड अपनाए जाएंगे।

(i) पीएच. डी. उपाधि वाले किसी उम्मीदवार को कम से कम द्वितीय श्रेणी (50 प्रतिशत) का परास्नातक उपाधिधारी होना चाहिए, अथवा

(ii) गैर पीएच. डी. उपाधि वाले उम्मीदवार को परास्नातक उपाधि में उच्च द्वितीय श्रेणी (55 प्रतिशत अथवा ऊपर) और स्नातक की उपाधि में द्वितीय श्रेणी (पचास प्रतिशत अथवा ऊपर) होना चाहिए।

(ग) प्राचार्य

उच्च गुणवत्ता के प्रकाशित कार्य वाला विशिष्ट विद्वान और अनुसंधान में सक्रियता से संबद्ध होना चाहिए। दस वर्ष से अधिक का शिक्षण का अनुभव और अथवा डाक्टरेट स्तर पर शोध के दिशा-निर्देशन का अनुभव,

अथवा

ख्याति प्राप्त उत्कृष्ट विद्वान जिसने ज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया हो।

वृत्तिका उन्नयन/पदोन्नति

(1) प्रत्येक प्राध्यापक रु. 3000-5000 का वरिष्ठ वेतनमान पाने का पात्र हो जाएगा, यदि उसने :—

(क) नियमित नियुक्ति के पश्चात् सेवा के 8 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

(ख) दो पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों/ग्रीष्मकालीन संस्थानों में शामिल हुए हों, जो प्रत्येक करीब 4 सप्ताह की अवधि के हों अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा, यथा उल्लिखित, तुलनीय गुणवत्ता के किसी अन्य उचित सतत् शिक्षा कार्यक्रम से संबद्ध हो, और

(ग) सुदृढ़ संतोषजनक कार्य निष्पादन रिपोर्टें।

स्पष्टीकरण

(i) ऊपर पैरा (क) में 8 वर्ष का तात्पर्य विश्व-विद्यालयों/मान्यताप्राप्त महाविद्यालयों अथवा राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों/प्रयोगशालाओं में समान/समकक्ष अथवा तुलनीय वेतनमान में कुल आठ वर्षों की सेवा है।

(ii) ऊपर पैरा (ग) के संदर्भ में सुदृढ़ संतोषजनक कार्य निष्पादन रिपोर्ट संबंधित विभागाध्यक्ष, विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष द्वारा प्राध्यापक को दी गई और कुलपति द्वारा प्रतिहस्ताक्षर की गई निष्पादन रिपोर्ट होगी।

(iii) वेतनमान रु. 3000-5000 में कार्यरत प्रत्येक प्राध्यापक, प्राध्यापक (चयन ग्रेड)/उपाचार्य वेतनमान रु. 3700-5700 का पात्र होगा, यदि उसने :—

(क) वरिष्ठ वेतनमान में 8 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है शर्त है कि यदि प्राध्यापक की कुल सेवा 16 वर्ष से कम नहीं होती है, तो ऊपर नोट (i) के तहत 8 वर्ष की आवश्यकता में छूट दी जा सकती है। और

(ख) पीएच. डी. डिग्री प्राप्त कर ली हो अथवा समकक्ष कार्य प्रकाशित हो चुका हो।

(iv) वरिष्ठ वेतनमान में प्रत्येक प्राध्यापक, वेतनमान रु. 3700-5700 में उपाचार्य के पद पर पदोन्नति हेतु पात्र होगा, यदि उसने :—

(क) वरिष्ठ वेतनमान में 8 वर्ष पूरा कर लिया है, शर्त है कि यदि प्राध्यापक की कुल सेवा 16 वर्ष से कम नहीं है तो 8 वर्ष की आवश्यकता में छूट दी जा सकती है।

(ख) पीएच. डी. डिग्री हो अथवा समकक्ष कार्य प्रकाशित हो चुका हो।

(ग) स्व-शिक्षा, नवीनीकरण, नये पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्याओं इत्यादि को डिजाइन करने में साक्ष्य के रूप में छात्रवृत्तियों और अनुसंधान के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान किया हो।

(घ) करीब 4-4 सप्ताह की अवधि के दो पुनश्चर्या पाठ्यक्रम/ग्रीष्मकालीन संस्थानों में भाग लिया हो अथवा वरिष्ठ वेतनमान में रखे जाने के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा, यथा उल्लिखित, तुलनीय गुणवत्ता के, अन्य उचित सतत् शिक्षा कार्यक्रमों से संबद्ध हो।

(ङ) सुदृढ़ अच्छा कार्य निष्पादन/मूल्यांकन रिपोर्टें।

5. प्राध्यापक (चयन ग्रेड)/उपाचार्य के पद पर पदोन्नति विश्वविद्यालय के परिनियम/अध्यादेश के अन्तर्गत विश्वविद्यालय द्वारा बनाई गई चयन समिति अथवा विश्वविद्यालय द्वारा गठित अन्य इसी प्रकार की समितियों के माध्यम से चयन पद्धति द्वारा होगा। इस उद्देश्य के लिए पद विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में प्राध्यापकों के पदों को उच्चिकृत किये जाने वाले पदों की संख्या के अनुरूप उच्चिकृत करके सृजित किए जायेंगे।

(क) प्राध्यापक (चयन ग्रेड)/उपाचार्य के पद पर पदोन्नति, एक चयन समिति द्वारा की जायेगी जिसमें निम्नलिखित शामिल होंगे :—

(i) कुलपति अथवा उसका नामित व्यक्ति

(ii) कुलपति द्वारा नामित एक संकायाध्यक्ष

(iii) संबंधित विभागाध्यक्ष

(iv) संबंधित विषय में विशेष ज्ञान अथवा रुचि रखने वाला प्रबंध बोर्ड द्वारा नामित एक ऐसा व्यक्ति जो विश्वविद्यालय सेवा में न हो।

(ख) उपाचार्य के पद पर पदोन्नति, विश्वविद्यालय के परिनियम/अध्यादेशों के अन्तर्गत गठित की गई चयन समिति द्वारा चयन पद्धति के माध्यम से किया जाएगा।

वरिष्ठ वेतनमान में वे प्राध्यापक जिनके पास पीएच. डी. उपाधि अथवा समकक्ष प्रकाशित कार्य नहीं है और जो एक उपाचार्य की अध्येतावृत्ति और अनुसंधान मानकों को पूरा नहीं करते हैं, परन्तु पैरा 3 (2) में वर्णित अन्य मापदंडों को पूरा करते हैं और शिक्षण कार्य का उनका अच्छा अभिलेख है, और/अथवा विस्तार गतिविधियों में भागीदारी है, उन्हें रु. 3700-5700 के ग्रेड में रख लिया जाएगा, शर्त है कि उपर्युक्त समिति की संस्तुति हो। उन्हें प्राध्यापक (चयन ग्रेड) का पदनाम दिया जाएगा। चयन ग्रेड में पदों, का सृजन उनके द्वारा धारित प्राध्यापक के पदों को उच्चिकृत करके किया जाएगा। पीएच. डी. उपाधि प्राप्त करने के उपरांत और/अथवा उपाचार्य के रूप में पदोन्नति हेतु अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने पर वे स्वयं को नए आंकलन हेतु प्रस्तुत कर सकते हैं और यदि उपयुक्त पाए जाते हैं तो उन्हें उपाचार्य का पदनाम दिया जा सकता है।

स्पष्टीकरण

प्राध्यापक (रु. 2200-4000) को प्राध्यापक (वरिष्ठ वेतनमान) (रु. 3000-5000) में और/अथवा प्राध्यापक (चयन ग्रेड) उपाचार्य रु. 3700-5700 के रूप में पदोन्नति हेतु, यदि उनके पास पीएच. डी. अथवा एम. फिल. उपाधि है तो वे सेवा के वर्षों में क्रमशः 3 वर्ष और 1 वर्ष की छूट पाने के पात्र होंगे। उचित सतत् शिक्षा कार्यक्रमों में नियमित अंतराल से शिक्षकों की भागेदारी, शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का एक अभिन्न अंग माना जाता है। औपचारिक कार्यक्रमों में भागीदारी की कोई कठोर आवश्यकता नहीं हो सकती और आवश्यक भी नहीं है। परन्तु वृत्तिका उन्नयन के लिए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जैसा भी निर्दिष्ट किया जाए, किसी मान्यताप्राप्त साधनों का सतत् शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का साक्ष्य एक आवश्यक जरूरत होगी। विशिष्ट अवधि और पदों की विशिष्ट कोटियों हेतु ऐसे कार्यक्रमों में भागीदारी की आवश्यकता से छूट विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्णित दिशा निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाएगी।

शिक्षकों को नियमित और सुव्यवस्थित कार्य निष्पादन मूल्यांकन शिक्षा के प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण तत्व होगा। जब तक यह परिचालित नहीं हो जाता ऊपर संदर्भित सभी नियुक्तियों, पदोन्नतियों में तब तक वर्तमान अथवा विश्वविद्यालय/केन्द्रीय सरकार द्वारा अनंतिम आधार पर निर्धारित की गई मूल्यांकन विधियाँ/चयन प्रक्रियाएं लागू होंगी।

6. परीक्षा

किसी शिक्षक की परीक्षा अवधि 12 माह होगी। परीक्षा पर नियुक्त प्राध्यापक तभी नियमित किया जाएगा तब कि उसने उचित अल्पावधि का अभिमुखीकरण कार्यक्रम पूर्ण किया हो और उसका कार्य निष्पादन मूल्यांकन संतोषजनक रहा है।

7. नियमितीकरण

- (क) कुल सचिव का यह कर्तव्य होगा कि किसी शिक्षक की परीक्षा की निर्धारित अवधि समाप्त होने से कम से कम 40 दिन पहले नियमितीकरण के मामले को प्रबंध बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करे।
- (ख) प्रबंध बोर्ड तब उस शिक्षक को या तो नियमित कर सकता है या उसे नियमित न करने का निर्णय ले सकता है या छः

माह/बारह माह की अवधि हेतु उसकी परीक्षा अवधि बढ़ा सकता है :

बशर्ते कि परीक्षा की कुल अवधि 48 माह से अधिक नहीं होगी। किसी शिक्षक को प्रबंध बोर्ड के नियमित न करने का निर्णय लेने के मामले में, चाहे वह 12 माह की समाप्ति पर अथवा बढ़ाई गई परीक्षा अवधि के समाप्त होने के पहले, जैसा भी मामला हो, उसे उस अवधि की समाप्ति के 30 दिन पहले लिखित सूचना दी जाएगी। शर्त है कि किसी शिक्षक को नियमित न करने के निर्णय हेतु, उपस्थित और मत कर रहे प्रबंध बोर्ड के सदस्यों के दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी।

- (ग) परिनियम 21 और 22 के अधीन प्रबंध बोर्ड द्वारा नियुक्त कोई शिक्षक उसके कार्यग्रहण की तिथि से नियमित माना जायेगा।
- (घ) विश्वविद्यालय में कोई शिक्षक किसी पद पर परीक्षा पर नियुक्त किया जाता है और उसकी परीक्षा की अवधि के दौरान उस पद पर बने रहने हेतु अनुपयुक्त पाया जाता है अथवा परीक्षा की अवधि संतोषजनक ढंग से पूरी नहीं की है, तब नियुक्ति प्राधिकारी—
 - (i) पदोन्नति द्वारा नियुक्त शिक्षक के मामले में उसे ऐसी नियुक्ति/पदोन्नति से ठीक पहले धारित किए गए पद पर पदावनत कर देगा।
 - (ii) सीधी भर्ती द्वारा नियुक्त हुए शिक्षक के मामले में एक माह का नोटिस देकर विश्वविद्यालय में उसकी सेवायें समाप्त कर सकता है।

8. वेतनवृद्धि

जब तक कि कुलपति के किसी अनुरोध पर और शिक्षक को अपना लिखित प्रतिवेदन देने हेतु समुचित अवसर दिए जाने के पश्चात्, प्रबंध बोर्ड के संकल्प द्वारा वेतनवृद्धि रोकी अथवा स्थगित न की गई हो, प्रत्येक शिक्षक अपने वेतनमान में वेतनवृद्धि आह्वित करेगा।

9. त्यागपत्र

- (क) विश्वविद्यालय का कोई भी स्थायी शिक्षक, प्रबंध बोर्ड को लिखित रूप में तीन माह का नोटिस देकर किसी भी समय अपने पद से त्यागपत्र दे सकता है।
- (ख) अस्थायी शिक्षक के मामले में, नोटिस की अवधि एक माह होगी शर्त है कि प्रबंध बोर्ड अपने विवेक से नोटिस अवधि की शर्त में छूट दे सकता है।

10. अधिवार्धिता और पुनर्नियुक्ति

शिक्षकों की अधिवार्धिता की आयु 60 वर्ष होगी और उसके बाद सेवा में कोई विस्तार नहीं दिया जाएगा।

बशर्ते कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा निर्देशों के अनुसार यदि प्रबंध बोर्ड संतुष्ट है कि ऐसी नियुक्ति विश्वविद्यालय के हित में है, तो यह कुलपति की संस्तुति पर ऐसे पूर्णतया स्वस्थ शिक्षकों की जिनकी आयु 60 वर्ष हो चुकी है और जो संतोषजनक ढंग से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में समर्थ हैं, विश्वविद्यालय के निःसर्वगीय पद

पर नियुक्ति प्रबंध बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट नियम और शर्तों पर पहली बार में, तीन वर्ष से अधिक न हो, कि लिए कर सकता है।

आगे यह भी शर्त है कि ऐसे शिक्षक जिन्होंने 65 वर्ष की आयु पूरी कर ली है उनके साथ आगे संविदा अथवा सेवा विस्तार नहीं प्रदान किया जाएगा। आगे यह शर्त है कि 60 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा पुनर्नियुक्त शिक्षक केन्द्र/विभाग के प्रधान अथवा डीन, विद्यापीठ के डीन अथवा मुख्य प्राक्टर, प्रोवेस्ट इत्यादि जैसा किसी अन्य प्रशासनिक पद ग्रहण नहीं करेंगे।

11. पुनर्नियुक्त पेंशनरों का वेतन निर्धारण

विश्वविद्यालय में पुनर्नियुक्त पेंशन लेने वाले शिक्षकों और अंशदायी भविष्य निधि पर सेवा निवृत्ति वालों सहित, पेंशनरों का प्रारंभिक वेतन जिस पद पर व्यक्ति पुनर्नियुक्त हुआ है, उसके निर्धारित वेतनमान की न्यूनतम स्थिति पर नियत किया जायेगा। इसके अतिरिक्त उसे अलग से कोई पेंशन स्वीकृत है तो उसे और सेवानिवृत्ति लाभ के किसी अन्य रूप में देयों (अंशदायी भविष्य निधि, ग्रेजुएट, पेंशन का परिवर्तित मूल्य इत्यादि) को आहरित करने की अनुमति दी जाएगी, बशर्ते कि प्रारंभिक वेतन की कुल धनराशि और पेंशन की कुल धनराशि और पेंशन की कुल धनराशि और/अथवा सेवानिवृत्ति लाभों के अन्य रूपों के समकक्ष पेंशन निम्न से अधिक न हो :-

- (i) अपनी सेवानिवृत्ति के पूर्व उसके द्वारा आहरित वेतन (सेवानिवृत्ति पूर्व वेतन)
- (ii) उस समय लागू केन्द्रीय सिविल सेवा आदेशों (पुनर्नियोजित पेंशनरों का वेतन निर्धारण) के अनुसार निर्धारित धनराशि

टिप्पणी

1. उन सभी मामलों में जिनमें ये सीमाएं पार होती हैं, पेंशन और अन्य सेवानिवृत्ति लाभ पूरा भुगतान किया जाएगा और आवश्यक समायोजन वेतन में यह सुनिश्चित करके किया जाएगा। कि वेतन और पेंशन संबंधी लाभों का योग निर्धारित सीमा के अन्दर हो।

जहां वेतन न्यूनतम अथवा उससे कम स्थिति पर नियत किया गया है, उपर्युक्त समायोजनों के परिणामस्वरूप यह न्यूनतम के नीचे हो गया है तो देय वेतनवृद्धियों की दर से प्रत्येक वर्ष वेतन में वृद्धि अनुमत की जा सकती है, जैसे कि वेतन न्यूनतम अथवा उच्चतर स्थिति, जैसा भी मामला हो, पर किया गया था।

2. सेवानिवृत्ति के पहले आहरित अंतिम वेतन को स्थानापन्न वेतन + विशेष वेतन, यदि कोई हो, के रूप में लिया जायेगा। स्थानापन्न नियुक्ति में आहरित वेतन को जोड़ा जाएगा, अगर सेवानिवृत्ति के पूर्व इसे कम से कम एक वर्ष तक आहरित किया गया हो।

ऐसे मामलों में जिनमें शिक्षक पुनर्नियोजित है उस पद का न्यूनतम वेतन संबंधित शिक्षा के अंतिम आहरित वेतन से अधिक होता है तो संबंधित शिक्षक को पद के निर्धारित वेतनमान के न्यूनतम (—) पेंशन और अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के समकक्ष पेंशन अनुमत की जा सकती है।

ऊपर दर्शाए गए ढंग से किसी पुनर्नियोजित पेंशनर का प्रारंभिक वेतन एक बार नियत कर दिया गया है तो उसे उस पद का जिस पर वह नियुक्त हुआ है उस समयबद्ध वेतनमान की सामान्य वेतन वृद्धियां दी जा

सकती हैं, बशर्ते कि वेतन और सकल पेंशन/अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के समकक्ष पेंशन एक साथ जोड़ने पर किसी भी समय केन्द्रीय सिविल सेवा (पुनर्नियोजित पेंशनरों का वेतन नियतन) आदेशों के अनुसार उस समय निर्धारित की गई धनराशि से अधिक न हो।

ऐसे मामले में जहां वेतन उपर्युक्त प्रावधानों के अन्तर्गत देय उच्चतर स्थिति में नियत करना प्रस्तावित किया जाता है तो ऐसे सभी मामले मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार/विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजे जाएंगे और अनुमोदन प्राप्त किया जाएगा। फिर भी विश्वविद्यालय के ऐसे शैक्षिक कार्मिकों के संबंध में सेवानिवृत्ति के पश्चात् पुनर्नियोजन पर जिनका वेतन सामान्य नियमों के अनुसार नियत करना प्रस्तावित किया गया हो, वे मामले नहीं भेजे जायेंगे।

3. किसी संदेह, अस्पष्टता की स्थिति, में उस समय लागू केन्द्रीय सिविल सेवा (पुनर्नियोजित पेंशनरों का वेतन निर्धारण) के आदेश लागू होंगे।

12. शिकायत निवारण क्रियाविधि

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जारी किये गये दिशा निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय में शिक्षकों की शिकायतों के निवारण हेतु उचित क्रियाविधि बनाई जाएगी।

13. सेवा की सामान्य शर्तें

- (i) विश्वविद्यालय का कोई शिक्षक प्रबंध बोर्ड की अनुमति के बिना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी व्यापार अथवा व्यवसाय अथवा किसी निजी शिक्षण अथवा अन्य कार्य में नहीं लगेगा, जिसके लिए परिलब्धियां अथवा मानदेय दिया जाता हो।

बशर्ते कि इसमें वर्णित विश्वविद्यालयों अथवा शिक्षण निगमों अथवा लोक सेवा आयोगों अथवा किसी साहित्यिक कार्य अथवा प्रकाशन अथवा रेडियोवाता अथवा विस्तार भाषण अथवा कुलपति के अनुमोदन से किसी अन्य शैक्षणिक कार्य के संबंध में किए गए कार्य पर लागू नहीं होगा।

- (ii) विश्वविद्यालय का प्रत्येक शिक्षक विश्वविद्यालय में लागू उस समय की परिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों द्वारा अनुमत सीमा में रहेगा।

बशर्ते कि शिक्षकों की सेवा शर्तों में उसके पदनाम, वेतनमान, वेतनवृद्धि, भविष्य निधि, सेवानिवृत्ति लाभ, सेवानिवृत्ति की उम्र, परीक्षा, नियमितीकरण, छुट्टी, छुट्टी वेतन, सेवा से हटना इत्यादि, जिससे उस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े, के संबंध में उसकी नियुक्ति के पश्चात् कोई परिवर्तन नहीं किए जाएंगे।

- (iii) प्रत्येक शिक्षक विश्वविद्यालय की गतिविधियों में भाग लेगा और विश्वविद्यालय में ऐसे कर्तव्यों को करेगा जो विश्वविद्यालय अधिनियम, परिनियम और अध्यादेशों के अनुसार वांछित होंगे और समय-समय पर लागू चाहे वे अनुदेश अथवा शिक्षण अथवा छात्रों की परीक्षा के अनुसंधान अथवा उनके अनुशासन, उनके कल्याण से संबंधित हो और सामान्यतः विश्वविद्यालय के प्राधिकारियों के निर्देशन के अनुसार कार्य करेगा।

स्पष्टीकरण

इस अध्यादेश के उद्देश्यों के लिए "शिक्षक" से तात्पर्य विश्वविद्यालय के पूर्णकालिक वेतनभोगी, शिक्षकों से है और इनमें अवैतनिक, आगंतुक अथवा अंशकालिक शिक्षक शामिल नहीं हैं।

14. व्यावसायिक आचार संहिता

सभी शिक्षक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय समय पर बनये तथा निर्धारित दिशा निर्देशों के अन्तर्गत व्यावसायिक आचार संहिता द्वारा प्रशासित होंगे।

15. छुट्टी

विश्वविद्यालय के शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की छुट्टियां देय हैं और इनसे संबंधित प्रावधान इन अध्यादेशों के अध्याय-XV में दिये गये हैं।

16. संविदा

किसी शिक्षक और विश्वविद्यालय के मध्य एक लिखित संविदा विश्वविद्यालय के परिनियम 25 की धारा (2) के अनुसार की जायेगी जो परिशिष्ट-II में दिये गये प्रारूप पर अथवा इसी के निकट तथा इन्हीं तथ्यों जैसी होगी।

17. विशेष संविदाएं

इन अध्यादेशों में किन्हीं बातों के होते हुए भी, विशेष मामलों में, प्रबंध बोर्ड ऐसे नियमों और शर्तों पर जो यह ठीक समझे, शिक्षकों को संविदा के आधार पर नियुक्त कर सकती है।

इस संबंध में संविदा का नमूना परिशिष्ट-III में दिया गया है। बशर्ते कि इस धारा के अन्तर्गत कोई भी नियुक्ति एक समय में पांच वर्ष से अधिक के लिए नहीं की जाएगी।

लिखित संविदा प्रपत्र

समझौता ज्ञापन आज दिनांक —————

————— माह ————— वर्ष ————— के दिन —————

(यहां इसके आगे "शिक्षक" कहा गया है) एक पक्ष के रूप में और "बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, अधिनियम 1994 संख्या 58 वर्ष 1994 के अधीन स्थापित एक कारपोरेट निकाय के रूप में "बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ" (यहां इसके आगे "विश्वविद्यालय" कहा गया है) दूसरे पक्ष के रूप में। एतद्वारा निम्नलिखित पर सहमति है :—

1. कि विश्वविद्यालय एतद्वारा —————

————— को विश्वविद्यालय के शिक्षण कार्मिक दिनांक —————

————— से सदस्य होते हैं और उक्त श्री —————

————— अपने पद के कर्तव्यों का कार्यभार लेते हैं

और उक्त श्री ————— एतद्वारा

नियुक्ति स्वीकार करते हैं और वचन देते हैं कि विश्वविद्यालय की

गतिविधियों में ऐसे भाग लेंगे और विश्वविद्यालय में ऐसे कर्तव्यों को पूरा

करेंगे जो उक्त अधिनियम, परिनियम और अध्यादेश के अधीन समय-समय पर लागू होंगे। चाहे वे शिक्षक के संगठन अथवा शिक्षण अथवा

अनुसंधान अथवा छात्रों की परीक्षाओं अथवा उनके अनुशासन अथवा

उनके कल्याण से संबंधित हों और सामान्यतः विश्वविद्यालय के

प्राधिकारियों के निर्देशों के अधीन कार्य करेंगे।

2. (क) शिक्षक 12 महीने की अवधि हेतु परीवीक्षा पर रखा जायेगा।

(ख) यदि स्थायीकरण हेतु शिक्षक के निष्पादन से विश्वविद्यालय संतुष्ट है तो परीवीक्षा की अवधि समाप्त होने, पर जिस पद पर वह नियुक्त हुआ/हुई है, उस पर स्थायी किया जायेगा।

(ग) यदि विश्वविद्यालय के शिक्षक के निष्पादन से संतुष्ट नहीं है तो उसका/उसकी परीवीक्षाधीन अवधि अगले 12 महीनों के लिए बढ़ाई जा सकती है।

(घ) ऐसे मामले में जबकि विश्वविद्यालय शिक्षक को स्थायी न करने का निर्णय लेता है, चाहे उसका/उसकी परीवीक्षाधीन अवधि के 12 महीने की समाप्ति पर हो अथवा बढ़ाई गई परीवीक्षाधीन अवधि की समाप्ति पर, जैसा भी हो, उस अवधि की समाप्ति के कम से कम 30 दिन पहले शिक्षक को लिखित सूचना दी जायेगी कि उसे स्थायी नहीं किया जायेगा और तदन्तर उसके/उसकी परीवीक्षा अवधि समाप्ति पर वह विश्वविद्यालय की सेवा में नहीं रहेगा।

3. कि उक्त —————

विश्वविद्यालय के एक पूर्णकालिक शिक्षक होंगे और जब तक कि प्रबंध बोर्ड अथवा शिक्षक द्वारा संविदा समाप्ति नहीं की जाती, जैसा यहां इसके बाद निर्दिष्ट है, जब तक वह 60 वर्ष की आयु नहीं पूरी करता/करती, विश्वविद्यालय की सेवा में बना रहेगा/रहेगी।

4. कि विश्वविद्यालय —————

————— को उसकी यहां नीचे उसके/उसकी नियुक्ति के स्थायीकरण के दौरान वह अपनी सेवा के लिए पारिश्रमिक के रूप में रु. ————— प्रति माह वेतन पावेगा, जो वार्षिक वेतनवृद्धि के द्वारा बढ़कर रु. ————— से अधिकतम वेतन रु. ————— प्रतिमाह तक हो जायेगा।

बशर्ते कि जो भी शिक्षक कि नियुक्ति की प्रकृति अथवा परिलब्धियों में कोई परिवर्तन होगा तो उस परिवर्तन के विवरण इसमें संलग्न अनुसूची में दोनों पक्षों के हस्ताक्षर के द्वारा अभिलिखित किये जायेंगे और इस करार की शर्तें, यथोचित परिवर्तनों के साथ, नये पद के लिये और उस पद से संबद्ध नियम और शर्तें लागू होंगी।

आगे यह भी शर्त है कि कोई वेतनवृद्धि रोकी अथवा स्थगित नहीं की जायेगी, सिवाय कुलपति से इस आशय का सदर्भ मिलने पर प्रबंध बोर्ड के संकल्प द्वारा ही होगा और शिक्षक को अपना लिखित प्रतिवेदन देने का समुचित अवसर दिया जायेगा।

5. कि उक्त शिक्षक परिनियमों, अध्यादेशों, विनियमों और नियमों, जो विश्वविद्यालय में उस समय लागू होंगे, के द्वारा बंधे होने से सहमत हैं, बशर्ते कि पदनाम, वेतनमान, वेतनवृद्धि, भविष्यनिधि, सेवानिवृत्ति लाभों, सेवानिवृत्ति की उम्र, परीवीक्षा, स्थायीकरण, छुट्टी वेतन और सेवा से हटाना, जिससे कि उस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े, के संबंध में उसकी नियुक्ति के उपरान्त शिक्षक की सेवा के नियमों व शर्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

कि शिक्षक, विश्वविद्यालय की सेवा में अपना पूरा समय देगा और विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी व्यापार अथवा व्यवसाय में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अथवा किसी गैर सरकारी

शिक्षण अथवा अन्य कार्य, जिसके लिये कोई परिलब्धि अथवा मानदेय मिलता हो, नहीं करेगा। परन्तु ये प्रतिबंध सेवा आयोगों अथवा किसी साहित्यिक कार्य अथवा प्रकाशन अथवा विस्तार भाषणों की रेडियो बातचीत अथवा कुलपति की अनुमति से किसी अन्य साहित्यिक कार्य पर लागू नहीं होगा।

6. आगे इस पर सहमति है कि यह संबद्धता विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नहीं की जायेगी, सिवाय निर्दिष्ट आधारों पर और परिनियम 28 की धारा (1), (2), (3), (4) और (5) में वर्णित प्रक्रिया के अनुसार (यथा नीचे उद्धृत) :—

(i) जहां किसी शिक्षक, किसी शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा विश्वविद्यालय के अन्य कार्मिकों के विरुद्ध कदाचार का आरोप लगता है तो शिक्षक अथवा शैक्षणिक कार्मिक सदस्य के मामले में कुलपति और अन्य कर्मचारियों के मामलों में नियुक्ति हेतु सक्षम प्राधिकारी (यहां इसमें आगे नियुक्ति प्राधिकारी) लिखित आदेश द्वारा, ऐसे शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा अन्य कर्मचारियों, जैसा भी मामला हो, को निलंबित कर सकता है और तुरन्त जिन परिस्थितियों में निलंबन का आदेश पारित किया गया है उनकी प्रबंध बोर्ड को रिपोर्ट देगा।

बशर्ते कि प्रबंध बोर्ड, यदि इस मत का है कि मामले कि परिस्थितियां शिक्षक अथवा शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य को निलंबित करने के लिये समुचित नहीं है तो ऐसे आदेश वापस ले सकती है।

(ii) नियुक्ति की संविदा शर्तों अथवा कर्मचारियों की सेवा के कोई अन्य नियमों और शर्तों में वर्णित किसी बात के होते हुए भी शिक्षकों और शैक्षणिक कार्मिकों के मामले में प्रबंध बोर्ड और अन्य कर्मचारियों के संबंध में नियुक्ति प्राधिकारी किसी शिक्षक अथवा शैक्षणिक कार्मिकों के किसी सदस्य अथवा जैसा भी मामला हो, अन्य कर्मचारियों को कदाचार के आधार पर सेवा से हटाने का प्राधिकारी होगा।

(iii) पूर्वोक्त के अतिरिक्त सिवाय किसी अच्छे कारण और तीन महीने का नोटिस देकर अथवा उसकी जगह तीन महीने के वेतन का भुगतान करने के बाद प्रबंध परिषद् अथवा, जैसा भी मामला हो, नियुक्ति प्राधिकारी, किसी शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा किसी कर्मचारी को सेवा से हटाने का पात्र नहीं होगा।

(iv) कोई शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों का सदस्य अथवा अन्य कर्मचारी धारा (ii) अथवा (iii) के अन्तर्गत सेवा से नहीं हटाया जाएगा, जब तक कि उसके संबंध में प्रस्तावित कार्रवाई के विरुद्ध कारण बताने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया जाता।

(v) किसी शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा अन्य कर्मचारियों को सेवा से हटाने का जिस तिथि को आदेश दिया गया है उसी से प्रभावी होगा।

बशर्ते कि जहां शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा अन्य कर्मचारियों उसकी सेवा समाप्त करते समय निलंबन के अधीन है, तो ऐसा सेवा से हटाने का आदेश, जब उसे निलंबित किया गया था, उसी तिथि से प्रभावी होगा।

(vi) इस परिनियम के पूर्वोक्त प्रावधानों में वर्णित किसी बात के होते हुए भी, कोई शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों का सदस्य अथवा अन्य कर्मचारी त्याग पत्र दे सकता है :—

(क) यदि वह स्थायी कर्मचारी है तो प्रबंध बोर्ड अथवा नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, को लिखित रूप से तीन माह का नोटिस देने के पश्चात् अथवा उसके स्थान पर तीन माह के वेतन का भुगतान करके।

(ख) यदि वह स्थायी कर्मचारी नहीं है तो प्रबंध बोर्ड अथवा नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, को मात्र एक माह की लिखित सूचना देने के बाद अथवा उसके स्थान पर एक माह के वेतन का भुगतान करके।

बशर्ते कि ऐसा त्याग पत्र प्रबंध परिषद् अथवा नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, जिस तिथि को त्याग पत्र स्वीकृत किया जाता है केवल उसी तिथि को प्रभावी माना जायेगा।

8. इस संविदा से उठा कोई विवाद खंड (31) की धारा (2) के प्रावधानों के अनुसार होंगे (नीचे पुनः उद्धृत है) :

“संविदा के संबंध में विश्वविद्यालय और किसी कर्मचारी के मध्य उठे किसी विवाद को कर्मचारी के अनुरोध करने पर प्रबंध बोर्ड द्वारा नियुक्त एक सदस्य और संबंधित कर्मचारी द्वारा नामित किया गया एक सदस्य और कुलाधिपति द्वारा नियुक्त मध्यस्थ को शामिल करके किसी मध्यस्थ न्यायाधिकरण को भेजा जाता है। ऐसे मामले में न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम होगा। मध्यस्थ अधिनियम, 1940 के अन्तर्गत इस खंड की शर्तों पर मध्यस्थ को किया गया कोई भी निवेदन, विनती के रूप में माना जाएगा।”

9. शिक्षक, किसी भी समय अपनी वचनबद्धता, प्रबंध बोर्ड को लिखित रूप से तीन माह का नोटिस देकर समाप्त कर सकता है, बशर्ते कि प्रबंध बोर्ड अपने विवेक से नोटिस की आवश्यकता को माफ कर सकता है।

10. जो भी कारण हो, इस वचनबद्धता की समाप्ति पर शिक्षक सभी पुस्तकें, उपकरण, अभिलेख और विश्वविद्यालय से संबंधित ऐसी अन्य सामग्रियां जो उसके पास हों, विश्वविद्यालय के सुपुर्द करेगा।

11. पक्षकारों और उनकी गवानी ने हस्ताक्षर किया तथा मुहर लगाई है।

हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. पदनाम

हस्ताक्षर

2. हस्ताक्षर

पदनाम

प्रबंध बोर्ड के प्राधिकार के अधीन विश्वविद्यालय की ओर से हस्ताक्षर किया और मुहर लगायी :

हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

पदनाम

2. हस्ताक्षर

पदनाम

अनुसूची

शिक्षक का पूरा नाम

पता

पदनाम

वेतन रु.

के ग्रेड में

टिप्पणी : ग्रेड वेतन अथवा पदनाम में परिवर्तनों को संक्षेप में वर्णित किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालय के अधिकारी के ग्रेड अथवा हस्ताक्षरी के पदनाम का परिवर्तन	प्रबंध बोर्ड के अनुमोदन की तिथि	परिवर्तन की प्रभावी तिथि	हस्ताक्षर शिक्षक

अनुबंध-III**शिक्षकों की अल्पकालीन नियुक्ति हेतु संविदा-प्रपत्र**

समझौता ज्ञापन आज दिनांक ----- माह -----

----- वर्ष ----- के दिन ----- (यहां इसके बाद 'शिक्षक' कहा गया है) एक पक्ष के रूप में और बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय अधिनियम-1994 संख्या 58 वर्ष 1994 के अधीन स्थापित एक कारपोरेट निकाय के रूप में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (यहां आगे "विश्वविद्यालय" कहा गया है) दूसरे पक्ष के रूप में एतद्वारा निम्नलिखित पर सहमति है :—

1. कि विश्वविद्यालय एतद्वारा ----- को विश्वविद्यालय के शिक्षण कर्मिकों का दिनांक ----- से सदस्य होते हैं और उक्त श्री ----- अपने पद के कर्तव्यों का कार्यभार लेते हैं, और उक्त श्री ----- एतद्वारा नियुक्ति स्वीकार करते हैं और वचन देता है कि विश्वविद्यालय की गतिविधियों में ऐसा भाग लेगा और विश्वविद्यालय में ऐसे कर्तव्यों को पूरा करेगा जो उक्त अधिनियम, परिनियमों और अध्यादेशों के अधीन समय-समय पर लागू होंगे। चाहे वे शिक्षक के संगठन अथवा शिक्षण अथवा अनुसंधान अथवा छात्रों की परीक्षाओं अथवा उनके अनुशासन अथवा उनके कल्याण से संबंधित हों और सामान्यतः विश्वविद्यालय के प्राधिकारियों के निर्देशों के अधीन कार्य करेगा।
2. कि उक्त ----- विश्वविद्यालय के एक पूर्णकालिक शिक्षक होंगे और जब तक जिस पद पर वह नियुक्त हैं उस नियुक्ति का समय समाप्त होने से पहले अथवा जैसा यहां इसमें आगे प्रावधान किया गया है, सेवाएं समाप्त करने से पहले प्रबंध

परिषद् अथवा शिक्षक द्वारा संविदा समाप्त नहीं की जाती, यथा पूर्वोक्त, उसकी नियुक्ति की अवधि हेतु विश्वविद्यालय की सेवा में बना रहेगा।

3. कि विश्वविद्यालय ----- को उनके सेवा पर बने रहने के दौरान वेतन रु. ----- और अधिकतम वेतन रु. ----- प्रति माह भुगतान करेगा।

आगे यह भी शर्त है कि कोई वेतनवृद्धि रोकी अथवा स्थगित नहीं की जायेगी, सिवाय कुलपति से इस आशय का संदर्भ मिलने पर प्रबंध बोर्ड के संकल्प द्वारा ही होगा और शिक्षक को अपना लिखित प्रतिवेदन देने का समुचित अवसर दिया गया हो।

4. कि उक्त शिक्षक परिनियमों, अध्यादेशों, विनियमों और नियमों, जो विश्वविद्यालय में उस समय लागू होंगे, के द्वारा बंधे होने से सहमत हैं बशर्ते कि पदनाम, वेतनमान, वेतनवृद्धि, जिससे कि उस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े, के संबंध में उसकी नियुक्ति के उपरान्त शिक्षक की सेवा के नियमों व शर्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

कि शिक्षक, विश्वविद्यालय की सेवा में अपना पूरा समय देगा और विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी व्यापार अथवा व्यवसाय में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अथवा किसी गैर सरकारी शिक्षण अथवा अन्य कार्य, जिसके लिए कोई परिलब्धि अथवा मानदेय मिलता हो, नहीं करेगा। परन्तु ये प्रतिबंध सेवा आयोगों अथवा किसी साहित्यिक कार्य अथवा प्रकाशन अथवा विस्तार भाषणों की रेडियो बातचीत अथवा कुलपति की अनुमति से किसी अन्य साहित्यिक कार्य पर लागू नहीं होगा।

5. आगे इस पर सहमति है कि यह संबद्धता विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नहीं की जायेगी, सिवाय निर्दिष्ट आधारों पर, और परिनियम 28 की धारा (1), (2), (3), (4) और (5) में वर्णित प्रक्रिया के अनुसार (यथा नीचे उद्धृत):—

- (i) जहां किसी शिक्षक, किसी शैक्षणिक कर्मिकों के सदस्य अथवा विश्वविद्यालय के अन्य कर्मिकों के विरुद्ध कदाचार का आरोप लगता है तो शिक्षक अथवा शैक्षणिक कर्मिक सदस्य के मामले में कुलपति और अन्य कर्मचारियों के मामलों में नियुक्ति हेतु सक्षम प्राधिकारी (यहां इसमें आगे नियुक्ति प्राधिकारी) लिखित आदेश द्वारा, ऐसे शिक्षक, शैक्षणिक कर्मिकों के सदस्य अथवा अन्य कर्मचारियों, जैसा भी मामला हो, को निलंबित कर सकता है और तुरन्त जिन परिस्थितियों में निलंबन का आदेश पारित किया गया है उनकी प्रबंध बोर्ड को रिपोर्ट देगा।

बशर्ते कि प्रबंध बोर्ड, यदि इस मत का है कि मामले कि परिस्थितियां शिक्षक अथवा शैक्षणिक कर्मिकों के सदस्य को निलंबित करने के लिए समुचित नहीं है तो ऐसे आदेश वापस ले सकती है।

- (ii) नियुक्ति की संविदा शर्तों अथवा कर्मचारियों की सेवा के कोई अन्य नियमों और शर्तों में वर्णित किसी बात के होते हुए भी शिक्षकों और शैक्षणिक कर्मिकों के मामले में प्रबंध बोर्ड और अन्य कर्मचारियों के संबंध में नियुक्ति प्राधिकारी किसी शिक्षक अथवा शैक्षणिक कर्मिकों के किसी सदस्य अथवा जैसा भी मामला हो, अन्य कर्मचारियों को कदाचार के आधार पर सेवा से

हटाने का प्राधिकारी होगा :

(iii) पूर्वोक्त के अतिरिक्त सिवाय किसी अच्छे कारण और तीन महीने का नोटिस देकर अथवा उसकी जगह तीन महीने के वेतन का भुगतान करने के बाद प्रबंध बोर्ड अथवा, जैसा भी मामला हो, नियुक्ति प्राधिकारी, किसी शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा किसी कर्मचारी को सेवा से हटाने का पात्र नहीं होगा।

(iv) कोई शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों का सदस्य अथवा अन्य कर्मचारी धारा; (ii) अथवा (iii) के अन्तर्गत सेवा से नहीं हटाया जाएगा, जब तक कि उसके संबंध में प्रस्तावित कार्रवाई के विरुद्ध कारण बताने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया जाता।

(v) किसी शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों के सदस्य अथवा अन्य कर्मचारियों को सेवा से हटाने का जिस तिथि को आदेश दिया गया था उसी से प्रभावी होगा :

बशर्ते कि जहां शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों का सदस्य अथवा अन्य कर्मचारी उसकी सेवा समाप्त करते समय निलंबन के अधीन है, तो ऐसा सेवा से हटाने का आदेश जब उसे निलंबित किया गया था उसी तिथि से प्रभावी होगा।

(vi) इस परिनियम के पूर्वोक्त प्रावधानों में वर्णित किसी बात के होते भी, कोई शिक्षक, शैक्षणिक कार्मिकों का सदस्य अथवा अन्य कर्मचारी त्याग पत्र दे सकता है:—

(क) यदि वह स्थायी कर्मचारी है तो प्रबंध बोर्ड अथवा नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, को लिखित रूप से तीन माह का नोटिस देने के पश्चात् अथवा उसके स्थान पर तीन माह के वेतन का भुगतान करके।

(ख) यदि वह स्थायी कर्मचारी नहीं है तो प्रबंध बोर्ड अथवा नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, को मात्र एक माह की लिखित सूचना के बाद अथवा उसके स्थान पर एक माह के वेतन का भुगतान करके :

बशर्ते कि ऐसा त्याग पत्र प्रबंध बोर्ड अथवा नियुक्ति प्राधिकारी जैसा भी मामला हो, जिस तिथि को त्याग पत्र स्वीकृत किया जाता है केवल उसी तिथि को प्रभावी माना जायेगा।

7. इस संविदा से उठा कोई विवाद खंड (31) की धारा (2) के प्रावधानों के अनुसार होंगे (नीचे पुनः उद्धृत है) :

“संविदा के संबंध में विश्वविद्यालय और किसी कर्मचारी के मध्य उठा किसी विवाद को कर्मचारी के अनुरोध करने पर प्रबंध बोर्ड द्वारा नियुक्त एक सदस्य और संबंधित कर्मचारी द्वारा नामित किया गया एक सदस्य और कुलाधिपति द्वारा नियुक्त मध्यस्थ को शामिल करके किसी मध्यस्थ न्यायाधिकरण को भेजा जाता है। ऐसे मामले में न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम होगा। मध्यस्थ अधिनियम 1940 के अन्तर्गत इस खंड की शर्तों पर मध्यस्थ को किया गया कोई भी निवेदन विनती के रूप में माना जायेगा।”

8. शिक्षक, किसी भी समय अपनी वचनबद्धता, प्रबंध बोर्ड को लिखित रूप से तीन माह का नोटिस देकर समाप्त कर सकता है, बशर्ते कि प्रबंध बोर्ड अपने विवेक से नोटिस की आवश्यकता को माफ कर सकती है।

9. जो भी कारण हो, इस वचनबद्धता की समाप्ति पर शिक्षक सभी पुस्तकें, उपकरण, अभिलेख और विश्वविद्यालय से संबंधित ऐसी अन्य सामग्रियां जो उसके पास हों, विश्वविद्यालय को सुपुर्द करेगा।

10. पक्षकारों और उनकी गवाही ने हस्ताक्षर किया तथा मुहर लगाई है।

हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

2. हस्ताक्षर

पदनाम

पदनाम

प्रबंध बोर्ड के प्राधिकार के अधीन विश्वविद्यालय की ओर से हस्ताक्षर किया और मुहर लगायी :

हस्ताक्षर

पदनाम

की उपस्थिति में

1. हस्ताक्षर

2. हस्ताक्षर

पदनाम

पदनाम

प्रथम

शैक्षणिक अध्यादेश

किश्त-IV

अध्याय-15

परीक्षाएं

[खंड-5 (11) के साथ खंड संख्या 27 (ग)]

1. डाक्टरेट परीक्षाओं को छोड़कर विश्वविद्यालय की परीक्षाएं नियमित छात्रों के लिए खुली रहेंगी अर्थात् उम्मीदवार जो विश्वविद्यालय अथवा किसी महाविद्यालय या संस्थान में विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार से किसी अवधि के लिए प्रवेश पाकर जो इस पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित हो, इस पाठ्यक्रम को नियमित रूप से किये हो।

2. कोई उम्मीदवार इस पाठ्यक्रम हेतु निर्दिष्ट अवधि के लिए अध्ययन को कोई नियमित पाठ्यक्रम किया हुआ तभी माना जायेगा यदि जबकि उसने निम्नांकित आवश्यकताएं पूरी कर ली हों—

(क) सभी उम्मीदवारों की प्रत्येक सेमेस्टर/वर्ष हेतु, जैसा भी मामला हो, उपस्थिति 75 प्रतिशत होनी चाहिए। उपस्थिति कार्य दिवसों की संख्या के अनुसार मानी जाएगी, विषयवार नहीं।

(ख) महाविद्यालयों/संस्थानों के प्राधानाचार्यों और विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष को प्रत्येक सेमेस्टर/वर्ष, जैसा भी मामला हो, दिनों की संख्या का अधिकतम 15 प्रतिशत तक उपस्थिति में कमी को माफ करने के लिए अधिकृत हैं। ऐसा माना गया है कि विश्वविद्यालय के महाविद्यालय/संस्थान सामान्यतः प्रति सेमेस्टर/वर्ष जैसा भी मामला हो, 90/180 से अधिक कार्य दिवसों तक खुले रहेंगे।

- (ग) परीक्षा में उपस्थित होने हेतु अनुमति के पहले सभी उम्मीदवारों को प्रधानाचार्य महाविद्यालय/संस्थान अथवा विभागाध्यक्ष, जैसा भी मामला हो, से उपस्थिति प्रमाण-पत्र तथा बेवाकी प्रमाण-पत्र और छात्रावास/पुस्तकालय/विद्यार्थी कल्याण प्राधिकारियों से भी बेवाकी प्रमाण-पत्र देना होगा।
3. आवेदन करने के दंग संबंधी शर्तें आवेदन के साथ भेजा जाने वाला प्रमाण-पत्र परीक्षा शुल्क इत्यादि समय-समय पर निर्धारित किये जाएंगे।
4. परीक्षा में उपस्थित होने की अनुमति हेतु आवेदन निर्धारित समय सीमा के अंदर निर्दिष्ट शुल्कों तथा प्रमाण पत्रों के साथ प्रस्तुत करना होगा। उम्मीदवार के किसी परीक्षा में उपस्थित होने से विफल होने पर उसके द्वारा भुगतान किया गया परीक्षा शुल्क वापसी का पात्र नहीं होगा।
5. उम्मीदवार जिसका आवेदन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, नियमों, विनियमों और अध्यादेश का अनुपालन करता है, उसे एक संख्या आवंटित की जाएगी। परीक्षा हाल में प्रवेश अनुक्रमांक वाला हाल टिकट प्रस्तुत करने पर ही प्रवेश दिया जाएगा।
6. सभी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र अंग्रेजी में बनाए जाएंगे और उम्मीदवार अंग्रेजी अथवा हिंदी लिपि में उत्तर दे सकेंगे। सभी भाषाओं के प्रश्न पत्र उसी भाषा में बनाए जाएंगे तथा उत्तर भी उसी भाषा में दिए जाएंगे।
- बशर्त कि अंग्रेजी/हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में परीक्षा में उपस्थित होने हेतु उम्मीदवारों को प्रश्न पत्र के एक भाग का उत्तर अंग्रेजी में तथा शेष भाग से संबंधित भाषा में देने की अनुमति दी जा सकती है।
- यह भी शर्त है कि कुलपति लिखित रूप में उल्लिखित आपवादिक परिस्थितियों में, छात्र को किसी परीक्षा में भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भाषा में उत्तर देने की अनुमति दे सकता है।
7. विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाएं विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित होंगी।
8. विभिन्न परीक्षाओं की अनुसूची ऐसी परीक्षाओं की संभावित तिथियां और उनके परिणामों का प्रकाशन, विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित किया जाएगा।

अध्याय-16

परीक्षक

[खंड-27 (जी) परिनियम 18 (3) (क) के साथ पढ़ा जाए]

- परीक्षकों की चयन और नियुक्ति हेतु समय-समय पर प्रबंध बोर्ड द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार प्रबंध बोर्ड द्वारा परीक्षकों की नियुक्ति की जाएगी।
- विद्या परिषद की संस्तुति पर प्रबंध बोर्ड किसी परीक्षक की किसी भी समय नियुक्ति निरस्त कर सकती है।
- प्रबंध बोर्ड द्वारा नियुक्त किए गए परीक्षक निम्नलिखित कोटि के होंगे :-
 - परीक्षक जो विभिन्न परीक्षाओं के प्रश्न पत्र बनाएंगे और/अथवा उत्तर पुस्तिकाओं के परीक्षक
 - व्यवहारिक/अभ्यास परीक्षाएं अथवा जहां आवश्यक हो मौखिक

परीक्षा आयोजित करने के उद्देश्य हेतु परीक्षक

- परीक्षकों के कर्तव्य निम्न प्रकार होंगे :-

- उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना
 - परीक्षा नियंत्रक को परीक्षार्थी के निष्पादन की रिपोर्ट देना
 - ऐसे अन्य कोई कार्य जो प्रबंध बोर्ड द्वारा उन्हें सौंपे जाएं
- प्रश्न पत्र तैयार करने वाला सामान्यतः विश्वविद्यालय के बाहर का ही होगा। परीक्षक एक वर्ष के लिए नियुक्त किए जाएंगे और पुनर्नियुक्ति के भी पात्र होंगे।

- प्रत्येक विभाग/केन्द्र में प्रश्न पत्रों के नियंत्रण के लिए परीक्षा नियंत्रक बोर्ड होगा।

प्रत्येक बोर्ड में शामिल होंगे :- 1. सभापति जो विभाग/केन्द्र का अध्यक्ष होगा और 2. विभाग/केन्द्र के दो वरिष्ठतम शिक्षक (अध्यक्ष के अलावा)

- निम्नलिखित व्यक्ति सामान्यतः परीक्षक के रूप में नियुक्ति के पात्र नहीं होंगे :-

- विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्थान में शिक्षण का पांच वर्ष से कम का अनुभव रखने वाले व्यक्ति।
- प्रबंध बोर्ड के सदस्य सिवाय किन्हीं विशेष कारणों से जिसे लिखित रूप में अभिलेखित किया जाए।
- ऐसे व्यक्ति जिनका कोई संबंधी प्रश्नाधीन परीक्षा में बैठ रहा हो। ऐसे संबंधियों की एक सूची विनियमों द्वारा वर्णित की जाएगी।

- इस अध्याय की धारा 1 और 6 के अधीन नियुक्त हुए परीक्षकों और नियंत्रकों को देय पारिश्रमिक और भत्तों का भुगतान परिशिष्ट-4 में यथावर्णित और समय-समय पर प्रबंध बोर्ड द्वारा किए गए संशोधन के अनुसार होंगे। परीक्षा कार्य से संबद्ध पारिश्रमिक और भत्तों के अन्य पैमाने परिशिष्ट-5 में यथावर्णित और प्रबंध परिषद द्वारा समय-समय पर किए गए संशोधन अनुसार देय होंगे।
- किसी एक व्यक्ति को एक शैक्षणिक वर्ष में सभी परीक्षा कार्यों हेतु कुल देय पारिश्रमिक रु. 10,000/- से अधिक नहीं होगा। सभी परीक्षक प्रबंध बोर्ड द्वारा समय-समय जारी किए गए अनुदेशों का पालन करेंगे।

अध्याय-17

परीक्षा समिति

[खंड-27 (छ) परिनियम 5(7) (ड.) के साथ पढ़ा जाए]

- विश्वविद्यालय में एक परीक्षा समिति होगी।
- समिति में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल होंगे :-
 - कुलपति अथवा उसका नामित व्यक्ति अध्यक्ष
 - प्रति कुलपति सदस्य-पदेन
 - विद्यापीठों के तीन संकायाध्यक्ष सदस्य-पदेन (कुलपति द्वारा नियुक्त)

- (iv) कुल सचिव सदस्य-पदेन
 (v) संकायाध्यक्ष छात्र कल्याण सदस्य-पदेन
 (vi) कुलपति द्वारा नामित महाविद्यालय/ संस्थानों के तीन प्रधानाचार्य सदस्य-पदेन
 (vii) विद्या परिषद द्वारा नियुक्त दो व्यक्ति सदस्य-पदेन
 (viii) परीक्षा नियंत्रक (सदस्य-सचिव पदेन)

3. नामित सदस्य और विद्या परिषद द्वारा नियुक्त सदस्य तीन वर्ष की अवधि तक अपने पद पर बने रहेंगे और पुनः नामित/पुनर्नियुक्ति के पात्र होंगे।

4. समिति के अधिवेशन हेतु चार सदस्यों की गणपूर्ति बनेगी।

5. विभिन्न परीक्षा बोर्डों द्वारा अग्रसारित समेकित परिणामों पर समिति विचार करेगी और अनुमोदित करने के उपरांत विश्वविद्यालय में सभी परीक्षा परिणाम घोषित करने की व्यवस्था करेगी।

6. समिति को सुपात्र मामलों में कृपांक इस संबंध में बनाए गए नियमों के अनुसार देने का अधिकार होगा।

7. विश्वविद्यालय परीक्षा की कार्यप्रणाली पर समिति विद्या परिषद को प्रति वर्ष एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी और सुधार लाने हेतु अपनी संस्तुतियां देगी।

8. समिति परीक्षाओं में अनुचित साधनों का प्रयोग अथवा परीक्षा के संचालन हेतु नियमों का किसी प्रकार उल्लंघन करने वाले उम्मीदवार के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई करने संबंधी नियम भी बनाएगी।

9. ऐसे अन्य कर्तव्यों एवं कार्यों को करेगी जो इसे विद्या परिषद द्वारा निर्दिष्ट किये जायेंगे।

बशर्ते कि परीक्षा समिति ऊपर वर्णित अपनी किसी अथवा सभी शक्तियों को विश्वविद्यालय के किसी अधिकारी को प्रत्यायोजित कर सकती है।

अध्याय-18

उपाधियां, डिप्लोमा प्रमाण पत्र और अन्य विशिष्टियां प्रदान करना

[खंड-27 (घ) परिनियम 29 एवं 30 के साथ पढ़ा जाए]

1. उपाधियां, डिप्लोमा, प्रमाण पत्र और अन्य शैक्षणिक विशिष्टियां विश्वविद्यालय द्वारा उन छात्रों को प्रदान की जाएगी, जिन्हें विद्या परिषद द्वारा ऐसे सम्मान के लिए भलीभांति प्रमाणित किया जा चुका है।

2. प्रबंध बोर्ड, विद्या परिषद की संस्तुति पर और उपस्थित तथा मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो तिहाई बहुमत से कुलाध्यक्ष को मानद उपाधि प्रदान करने का प्रस्ताव कर सकती है।

बशर्ते कि आपातकाल के मामले में प्रबंध बोर्ड, ऐसे प्रस्ताव अपनी ओर से ही कर सकती है। निम्नलिखित मानद उपाधियां इस आधार पर किसी व्यक्ति को प्रदान की जाएगी कि वह अपनी स्थिति और उपलब्धियों अथवा शिक्षण अथवा शिक्षा अथवा समाज

कार्य हेतु शिक्षण के क्षेत्र में अथवा उत्कृष्ट सेवाओं में योगदान के कारण ऐसी उपाधि (यां) पाने के लिए योग्य एवं सुपात्र है:

डाक्टर आफ लाज (एल.एल.डी.)

डाक्टर आफ लेटर्स

डाक्टर आफ लिटरेचर

डाक्टर आफ साइंस

3. मानद उपाधियां केवल दीक्षांत समारोह में प्रदान की जाएगी तथा व्यक्ति स्वयं अथवा अनुपस्थिति में भी ग्रहण कर सकता है।

अध्याय-19

उपाधियां प्रदान करने हेतु दीक्षांत समारोह

[परिनियम 32]

1. उपाधियां प्रदान करने के उद्देश्य से दीक्षांत समारोह एक वर्ष में सामान्यतः एक बार कुलाधिपति के पूर्व अनुमोदन से कुलपति द्वारा नियत की गई तिथि और स्थान पर आयोजित किया जाएगा।

2. मानद उपाधियां प्रदान करने के उद्देश्य से कोई विशेष दीक्षांत समारोह भी प्रबंध बोर्ड द्वारा निश्चित किये गए समय और स्थान पर आयोजित किया जा सकता है।

3. दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय की कारपोरेट निकाय शामिल होंगे।

4. कुलाधिपति, यदि उपस्थित है तो, उपाधि प्रदान करने हेतु विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करेगा। उनकी अनुपस्थिति में कुलपति दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करेगा।

5. दीक्षांत समारोह के सभी अधिवेशनों की सूचना कुल सचिव द्वारा चार सप्ताह से पहले दी जाएगी।

6. कुल सचिव सूचना के साथ दीक्षांत समारोह के प्रत्येक सदस्य को उसमें अपनाए जाने वाली कार्य विधि का कार्यक्रम भी भेजेगा।

7. (i) जिस वर्ष दीक्षांत समारोह आयोजित किया जा रहा है उस वर्ष विश्वविद्यालय में अपनी परीक्षाएं उत्तीर्ण करने वाले उम्मीदवार दीक्षांत समारोह में प्रवेश पाने के पात्र होंगे।

बशर्ते कि यह प्रथम दीक्षांत समारोह के लिए लागू नहीं होगा, जिसमें पूर्व के सभी वर्षों के उम्मीदवारों को उनकी उपाधियां हेतु प्रवेश दिया जाएगा।

यह भी शर्त होगी कि ऐसे मामले में जब किसी विशेष वर्ष में दीक्षांत समारोह आयोजित नहीं किया जा सका है तो कुलपति औपचारिक दीक्षांत समारोह की प्रतीक्षा किए बिना ही संबंधित उपाधियों में उम्मीदवारों को प्रवेश देने हेतु सक्षम होगा परन्तु निर्धारित शुल्क का भुगतान करने के उपरांत ही।

(ii) फिर भी ऐसे उपाधि प्राप्तकर्ता, सामान्य उपदेश पर हस्ताक्षर करेंगे जिसे उन्हें करना होता जब दीक्षांत समारोह सामान्य प्रकार से आयोजित होता।

यह भी इस शर्त पर कि यदि किसी वर्ष विशेष में दीक्षांत समारोह आयोजित नहीं किया जाता है तो

कुलपति उन सभी पात्र उम्मीदवारों को अगले दीक्षांत समारोह में प्रवेश अधिकृत करने हेतु सक्षम होगा जो इस प्रकार की इच्छा रखते हैं कि वे अपनी उपाधि दीक्षांत समारोह में ही लेंगे और संबंधित उपाधि निर्धारित शुल्क का भुगतान करने पर प्रदान करेगा।

आगे यह भी शर्त है कि वे जो अपनी उपाधि अनुपस्थिति में, जब कि दीक्षांत समारोह नियमित रूप से आयोजित होता है, प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो वे निर्धारित शुल्क का भुगतान करके ऐसा भी कर सकते हैं।

8. उपाधि प्राप्त करने हेतु उम्मीदवार को, इस उद्देश्य को इस उद्देश्य के लिए निश्चित की गई तिथि को अथवा पहले अपना आवेदन पत्र कुल सचिव को निर्धारित शुल्क के साथ स्वयं के दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने के लिए प्रवेश हेतु प्रस्तुत करना चाहिए।
9. ऐसे उम्मीदवार जो दीक्षांत समारोह में स्वयं उपस्थित होने में असमर्थ हैं तो उन्हें कुलाधिपति अथवा उनकी अनुपस्थिति में कुलपति द्वारा अनुपस्थिति में डिग्री हेतु प्रवेश दिया जाएगा और उनका डिप्लोमा, आवेदन पत्र और निर्धारित शुल्क के भुगतान के उपरांत कुल सचिव द्वारा दिया जाएगा।
10. दीक्षांत समारोह में व्यक्तिगत रूप से डिग्री के लिए प्रवेश हेतु शुल्क समय-समय यथा निर्दिष्ट होंगे।
11. मानद उपाधि केवल दीक्षांत समारोह में प्रदान की जाएगी तथा व्यक्तिगत रूप से अथवा अनुपस्थिति में प्राप्त की जा सकती है।
12. जिसको मानद उपाधि, दीक्षांत समारोह में दिया जाना है, उसका प्रतिवेदन कुलपति अथवा उसके द्वारा नामित व्यक्ति करेगा।
13. उम्मीदवार दीक्षांत समारोह में, जैसा कार्यकारी आदेश द्वारा निर्दिष्ट किया जाए, उनकी उपाधि के उपयुक्त गाउन और टोपी पहनेंगे। किसी भी उम्मीदवार को जो उचित वेशभूषा में नहीं है दीक्षांत

समारोह में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

14. दीक्षांत समारोह में उपाधियां प्रदान करने हेतु उपस्थित उम्मीदवार औपचारिक तौर पर कुलाधिपति को अथवा उनकी अनुपस्थिति में कुलपति को निम्न प्रकार उपाधि देने के लिए प्रस्तुत किये जायेंगे।

संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष डाक्टरेट, परास्नातक और स्नातक की उपाधियां देने के लिए उम्मीदवारों को इसी क्रम में प्रस्तुत करेंगे। कुलपति इस उद्देश्य के लिए नामित महाविद्यालय/संस्था के प्रधानाचार्य अपने महाविद्यालयों/संस्थाओं के उम्मीदवारों को स्नातक की उपाधि प्रदान करने हेतु प्रस्तुत करेंगे।

बशर्त कि विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों/संस्थाओं से संबंधित उम्मीदवारों को उनके विद्यापीठों/महाविद्यालयों/संस्थाओं के नामों के वर्णानुक्रम में प्रस्तुत किये जायेंगे।

पदकों और पुरस्कारों के प्राप्तकर्ताओं के नाम कुलसचिव अथवा कुलपति द्वारा नामित व्यक्ति द्वारा पढ़े जाएंगे।

कुलसचिव अथवा इसके लिए नियुक्त व्यक्ति अनुपस्थिति में उपाधि प्रदान करने हेतु उम्मीदवारों को प्रस्तुत करेगा।

उपाधि, प्रमाण पत्र, दीक्षांत समारोह समाप्त हो जाने के उपरांत, कुलपति द्वारा निर्धारित किए गए ढंग से, उम्मीदवार को प्रदान किया जायेगा।

कुलाधिपति, प्रमुख रिएक्टर, मुख्य अतिथि, कुलपति, प्रति कुलपति, विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष, निदेशक, कुल सचिव, वित्त अधिकारी, परीक्षाओं के नियंत्रक, विभागाध्यक्ष और विश्वविद्यालय प्राधिकरणों के सदस्य, विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित किए गए विशेष वस्त्र पहनेंगे और दीक्षांत समारोह के संचालन हेतु आगे की क्रियाविधि कार्यकारी आदेशों द्वारा निर्धारित की जाएगी।

परिशिष्ट-IV

परीक्षाओं के पारिश्रमिक का पैमाना

1. डी. लिट., एल.एल.डी. अथवा एस.सी. के शोध प्रबंध की जांच हेतु	रु. 1000 (प्रत्येक परीक्षक को)
2. पी.एच.डी. के शोध प्रबंध की जांच करने हेतु	रु. 500 (प्रत्येक परीक्षक को देय)
3. डाक्टरेट उम्मीदवारों की मौखिक परीक्षा आयोजित करने हेतु	रु. 400 (प्रत्येक परीक्षक को देय)
4. एम.फिल./एल.एल.एम. शोध प्रबंध के परीक्षण हेतु	रु. 300 (परीक्षक को प्रति उम्मीदवार देय)
5. एम.फिल. उम्मीदवार की मौखिक परीक्षा आयोजित करने हेतु	रु. 100 (प्रति उम्मीदवार प्रत्येक परीक्षक को देय)
एम. फिल., एम.एस.सी. भाग-I और II तथा अन्य परास्नातक उपाधि और परास्नातक डिप्लोमा परीक्षाओं हेतु	
6. प्रत्येक प्रश्न पत्र बनाने हेतु	रु. 500
7. प्रत्येक उत्तर पुस्तिकाओं की जांच करने हेतु	रु. 10/- (कम से कम 150/-)
8. एम.फिल./एल.एल.एम. को छोड़कर	रु. 100/-
प्रत्येक डिस्सर्टेशन अथवा परियोजना रिपोर्ट की जांच हेतु	
9. प्रायोगिक परीक्षा हेतु प्रति उम्मीदवार	रु. 10/- (कम से कम 150/-)
मौखिक परीक्षा हेतु प्रति उम्मीदवार	रु. 10/- (कम से कम 150/-)

परिशिष्ट-V

परिक्षा के उद्देश्य हेतु पारिश्रमिक और अन्य भत्तों का पैमाना

क्रम सं.	श्रेणी	संस्तुत पारिश्रमिक
1	केन्द्र अधीक्षक	रु. 150/- प्रति सत्र
2	सहायक अधीक्षक/पर्यवेक्षक	रु. 100/- प्रति सत्र
3	उड़नदस्ते /पर्यवेक्षकों के सदस्य	रु. 250/- प्रति सत्र
4	लिपिकीय सहायक	रु. 50/- प्रति 200 उम्मीदवार न्यूनतम रु. 50/- अधिकतम रु. 300/- प्रति दिन
5	दफ्तरी/मददगार	रु. 30/- प्रति सत्र
6	पानी पिलाने वाला	रु. 30/- प्रति सत्र
7	सामान्य, व्यवस्था (प्रारंभिक व्यवस्थाओं सहित जिसे उम्मीदवारों को अधिकतम संख्या के आधार पर गणना की गई और परीक्षा के दौरान व्यवस्था) जो परीक्षा के किसी एक सत्र में बैठे	रु. 50/- प्रति 100 उम्मीदवार अथवा उनके भाग पर
8	उत्तर पुस्तिकाएं भेजने हेतु कपड़े का थैला सिलने का मूल्य	रु. 7/- प्रति थैला
9	प्रयोग हेतु प्रयोगशाला सहायक	रु. 50/- प्रति दिन
10	सफाई कर्मचारी	रु. 10/- प्रति सत्र
11	सारिणीकरण प्रभार	रु. 1/- प्रति उम्मीदवार रु. 100/- न्यूनतम की शर्त पर
12	उत्तर पुस्तिकाओं को कोड/डिकोड करना	25 पैसे प्रति उम्मीदवार रु. 50/- कम से कम
13	वाहन भत्ता	रु. 25/- प्रति सत्र ग्रुप ए अधिकारियों हेतु व रु. 10/- प्रति सत्र अन्य कर्मचारी जो परीक्षा कार्य से सम्बद्ध हों
14	अध्यक्ष परीक्षा नियंत्रक परिषद/अनुचित साधन समिति	रु. 150/- प्रति पाली
15	सदस्य परीक्षा नियंत्रक परिषद/अनुचित साधन समिति	रु. 100/- प्रति पाली

अध्याय-XX**विश्वविद्यालय के शिक्षकों को स्वीकार्य छुट्टियां**

सारणी

धारा संख्या

विवरण

(क) स्थायी शिक्षक

1. स्वीकार्य छुट्टियों के प्रकार
2. आकस्मिक छुट्टी
3. विशेष आकस्मिक छुट्टी
4. कार्य छुट्टी
5. अर्जित छुट्टी
6. अर्ध वेतन छुट्टी
7. परिवर्तित छुट्टी
8. असाधारण छुट्टी
9. अदेय छुट्टी
10. अध्ययन छुट्टी
11. सैबथ छुट्टी
12. मातृत्व छुट्टी
13. विशेष अशक्तता छुट्टी
14. संगरोध छुट्टी
15. विश्राम छुट्टी
- (ख) परिवीक्षा पर नियुक्त शिक्षक
16. परिवीक्षा पर नियुक्त शिक्षक
- (ग) सेवानिवृत्ति उपरांत पुनर्नियोजित शिक्षक
17. शिक्षक सेवा निवृत्ति उपरांत पुनर्नियोजित
- (घ) अस्थायी शिक्षक
18. अस्थायी शिक्षक
- (ङ) संविदा आधार पर नियुक्त शिक्षक
19. संविदा आधार पर नियुक्त शिक्षक
- (च) अवैतनिक तथा अंशकालिक शिक्षक
20. अवैतनिक और अंशकालिक शिक्षक
- (छ) सामान्य
21. छुट्टी स्वीकृति संबंधी सामान्य शर्तें
22. छुट्टी स्वीकृति करने हेतु अधिकृत/सक्षम प्राधिकारी
23. छुट्टी वेतन
24. सेवानिवृत्ति अथवा सेवा छोड़ने की तिथि के बाद छुट्टी का नकदीकरण भुगतान
25. अध्यादेश के अधीन नियम बनाना
26. परिशिष्ट

विश्वविद्यालय के शिक्षकों को स्वीकार्य छुट्टी**(क) स्थायी शिक्षक****1. स्वीकार्य छुट्टी के प्रकार :—**

स्थायी शिक्षकों को निम्नलिखित प्रकार की छुट्टियां स्वीकार्य होंगी :—

- (i) कार्य के रूप में मानी गई छुट्टी
- आकस्मिक छुट्टी
- विशेष छुट्टी
- कार्य छुट्टी

(ii) कार्य द्वारा अर्जित छुट्टी

अर्जित छुट्टी
अर्ध वेतन छुट्टी
परिवर्तित छुट्टी

(iii) कार्य द्वारा अर्जित न की गई छुट्टी

असाधारण छुट्टी
अदेय छुट्टी

(iv) छुट्टी खाते में न चढ़ाई जाने वाली छुट्टी

(क) शैक्षणिक लक्ष्यों हेतु छुट्टी
अध्ययन छुट्टी
सैबथ छुट्टी/शैक्षणिक छुट्टी
(ख) स्वास्थ्य के आधार पर छुट्टी
मातृत्व छुट्टी
विशेष अशक्तता छुट्टी
संगरोध छुट्टी

प्रबंध बोर्ड आपवादिक मामलों में, अभिलेखित किए गए कारणों से जो यह लगाना ठीक समझे, ऐसे नियम और शर्तों के आधार पर, किसी अन्य प्रकार की छुट्टी स्वीकृत कर सकता है।

2. आकस्मिक छुट्टी

- (i) आकस्मिक अवकाश कार्य द्वारा अर्जित नहीं किया जाता है किसी शिक्षक को एक शैक्षणिक वर्ष में कुल आठ से अधिक आकस्मिक छुट्टी स्वीकृत नहीं की जा सकती।
- (ii) आकस्मिक छुट्टी, सिवाय विशेष आकस्मिक छुट्टी के अन्य किसी प्रकार की छुट्टी के साथ जोड़कर नहीं लिया जा सकता। इन्हें रविवार सहित छुट्टियों में शामिल किया जा सकता है। रविवार छुट्टियां अथवा आकस्मिक छुट्टी की अवधि के अंदर आने वाली छुट्टियां आकस्मिक छुट्टी के रूप में नहीं गिनी जायेंगी।

3. विशेष आकस्मिक छुट्टी

- (i) किसी शिक्षक को एक शैक्षणिक वर्ष में निम्नांकित कारणों से दस से अधिक विशेष आकस्मिक अवकाश दिए जा सकते हैं जो दस दिन से अधिक नहीं होंगे :—
- (क) किसी विश्वविद्यालय, लोक सेवा आयोग परीक्षा परिषद् अथवा अन्य इसी प्रकार के संस्थानों/निकायों की परीक्षा आयोजित कराने के लिए।
- (ख) किसी वैधानिक परिषद् इत्यादि से संबद्ध शैक्षणिक संस्थानों का निरीक्षण करने के लिए।
- (ग) विश्वविद्यालय प्राधिकारियों द्वारा मान्यता प्राप्त निकायों द्वारा आयोजित की जाने वाली किसी साहित्यिक, वैज्ञानिक अथवा शैक्षिक सम्मेलन संगोष्ठी अथवा सेमिनार अथवा सांस्कृतिक अथवा खेलकूद गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए।
- (घ) ऐसे किसी अन्य कार्य को निष्पादित करने के लिए जिसे विश्वविद्यालय के कुलपति शैक्षणिक कार्य के रूप में अनुमोदित कर सकें।

टिप्पणी : स्वीकार्य दस दिनों की छुट्टी की गणना करने में वास्तविक यात्रा समय, यदि कोई है,

- ऐसे स्थानों तक जाने और आने की अवधि, जहां पर ऐसा सम्मेलन/गतिविधि होगी, नहीं गिना जाएगा।
- (ii) इसके अतिरिक्त निम्नांकित समय के लिए भी विशेष आकस्मिक छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है :—
- (क) परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत नसबंदी (वेसेकामी अथवा सेलेपिनागेकामी) आपरेशन कराने के लिए। इस मामले में केवल छः छुट्टी स्वीकृत की जाएगी।
- (ख) किसी महिला, शिक्षक को जो नान-प्यूरपेरल नसबंदी कराती है। इस मामले में केवल 14 दिन की छुट्टी स्वीकृत की जाएगी।
- (iii) विशेष आकस्मिक छुट्टी को संचय अथवा आकस्मिक छुट्टी के अलावा किसी भी अन्य छुट्टी के साथ जोड़ा नहीं जा सकता है। इसे छुट्टियों के साथ जोड़कर स्वीकृत किया जा सकता है।

4. कार्य छुट्टी

- (i) निम्न कारणों से एक सेमेस्टर में कार्य छुट्टी दी जा सकती है जो 14 दिन से अधिक नहीं होगी :—
- (क) विश्वविद्यालय की ओर से अथवा विश्वविद्यालय की पूर्व अनुमति से आमंत्रण स्वीकार कर लिया गया है, ऐसे सम्मेलनों/कांग्रेस/संगोष्ठी/सेमीनार अथवा इसी तरह की अन्य गतिविधियों में उपस्थित रहने हेतु।
- (ख) इस विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए और कुलपति द्वारा स्वीकृत किए गए उन संस्थाओं अथवा विश्वविद्यालयों के आमंत्रण पर संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में भाषण देने हेतु।
- (ग) किसी अन्य भारतीय अथवा विदेशी विश्वविद्यालय, किसी अन्य अधिकरण, संस्था अथवा संगठन में विश्वविद्यालय द्वारा भेजे जाने पर कार्य करने अथवा विश्वविद्यालय के लिए कोई अन्य कार्य करने हेतु।
- (घ) किसी प्रतिनिधि मंडल अथवा भारत सरकार, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विश्वविद्यालयों अथवा किसी अन्य शैक्षणिक अथवा लोक उपक्रम द्वारा गठित समिति में कार्य करने के लिए।
- (ङ) सांस्कृतिक/द्विपक्षीय विनियम कार्यक्रम जिसमें यह शर्त रहती है कि भेजे गए शिक्षक कार्य छुट्टी पर जाएंगे, के अधीन विदेश भेजे गए शिक्षक और
- (च) भारत अथवा विदेश में क्षेत्र कार्य करने हेतु।
- (ii) छुट्टी पूर्ण वेतन पर स्वीकृत की जा सकती है बशर्ते कि यदि शिक्षक सामान्य व्ययों हेतु आवश्यक धनराशि से अधिक अध्येतावृत्ति अथवा मानदेय अथवा अन्य कोई वित्तीय सहायता प्राप्त करता है तो इस संबंध में विश्वविद्यालय विनियम के अनुसार उसे घटे वेतन और भत्तों पर कार्य छुट्टी स्वीकृत की जाएगी।
- (iii) कार्य छुट्टी, अर्जित छुट्टी, अर्ध वेतन छुट्टी अथवा असाधारण छुट्टी के साथ मिलाकर ली जा सकती है।

5. अर्जित छुट्टी

- (1) किसी शिक्षक को प्रति कलेन्डर वर्ष 12 दिनों की अर्जित छुट्टी देय होगी।
- (2) (क) शिक्षकों के छुट्टी में प्रति वर्ष पहली जनवरी को अग्रिम रूप से 12 दिनों की अर्जित छुट्टी जमा की जाएगी।
- (ख) यदि किसी शिक्षक ने आकस्मिक छुट्टी, विशेष आकस्मिक छुट्टी अथवा कार्य छुट्टी के अलावा अन्य कोई छुट्टी मनाई हो अथवा पूर्व के वर्ष में उसकी अनुपस्थिति की अवधि को छुट्टी माना गया हो तो उसके छुट्टी खाते में आगे जमा की जाने वाली छुट्टी में उस छुट्टी की अवधि अथवा अनुपस्थिति की अवधि का 1/30 हिस्सा, अधिकतम 12 छुट्टी की शर्त पर कम किया जाएगा।
- (ग) जिस कलेन्डर वर्ष में कोई शिक्षक नियुक्त हुआ/सेवा में नहीं रहता है, उसमें अर्जित छुट्टी को उसके द्वारा की गई सेवा अथवा उस वर्ष जितनी सेवा होना संभावित है, के प्रत्येक कलेन्डर माह हेतु एक दिन की दर से छुट्टी जमा अनुमत की जाएगी।
- (घ) जिसे कलेन्डर वर्ष में किसी शिक्षक को सेवानिवृत्त होना है अथवा सेवा से त्याग पत्र देता है तो ऐसे मामले में सेवानिवृत्ति अथवा त्यागपत्र की तिथि तक प्रत्येक पूरे किए गए कलेन्डर माह के लिए एक दिन की दर से अर्जित छुट्टी जमा अनुमत किया जाएगा।
- (ङ) जब किसी शिक्षक को सेवा से हटाया अथवा पदच्युत किया जाता है अथवा सेवाकाल में ही उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसके सेवा से हटाये जाने अथवा पदच्युत किए जाने अथवा सेवा काल में ही मृत्यु हो जाने वाले कलेन्डर माह के पहले वाले माह की समाप्ति तक पूरे किए गए प्रत्येक कलेन्डर माह पर एक दिन की दर से अर्जित छुट्टी जमा अनुमत की जाएगी।

3. कोई शिक्षक दीर्घावकाश की अवधि में जितने समय के लिए उसे कार्य पर बुलाया जाता है उस अवधि के 1/3 की दर से अर्जित छुट्टी का पात्र होगा।

बशर्ते कि विश्वविद्यालय के शिक्षक दीर्घावकाश की दौरान प्रवेश परीक्षा के मूल्यांकन कार्य में सक्रियता से, उनके भाग लेने हेतु जहां भी निर्दिष्ट है, दीर्घावकाश के दौरान अधिकतम 30 दिन अथवा कम तक कार्य पर माने जायेंगे।

शिक्षक के खाते में 300 दिनों से अधिक की अर्जित छुट्टी संचित नहीं होगी। एक समय में अधिकतम अर्जित छुट्टी 120 दिनों से अधिक की नहीं स्वीकृत की जाएगी। फिर भी 120 दिनों से अधिक की अर्जित छुट्टी उच्च शिक्षा अथवा प्रशिक्षण अथवा चिकित्सा प्रमाणपत्र के आधार

पर तब कि पूरी छुट्टी अथवा उसका कोई भाग भारत के बाहर बिताया गया हो, स्वीकृत की जा सकती है।

टिप्पणी-1—जब कोई अध्यापक अर्जित छुट्टी को दीर्घावकाश के पहले या बाद में जोड़कर लेता है तो औसत वेतन पर छुट्टी की अधिकतम राशि की गणना करने में दीर्घावकाश की अवधि को छुट्टी के रूप में माना जाएगा, जिसे छुट्टी की अवधि में शामिल किया जा सकता है।

टिप्पणी-2 ऐसे मामले में जब छुट्टी का कोई हिस्सा ही भारत के बाहर बिताया गया है, तो 120 दिनों से अधिक छुट्टी की स्वीकृति इस शर्त पर की जाएगी कि भारत में मनाई गई छुट्टी का भाग कुल मिलाकर 120 दिनों से अधिक न हो।

6. अर्धवेतन छुट्टी

- (1) प्रत्येक स्थायी शिक्षक के अर्धवेतन छुट्टी खाते में प्रत्येक कलेन्डर वर्ष के जनवरी और जुलाई के पहले दिन प्रत्येक 10 दिनों की 2 किश्तों में अर्धवेतन छुट्टी अग्रिम में खाते में जमा की जाएगी। इस प्रकार की छुट्टी चिकित्सा प्रमाण पत्रों, पर व्यक्तिगत मामलों अथवा शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत की जा सकती है।
- (2) (i) उक्त छुट्टी खाते में छुट्टी सेवा के जो जिस वर्ष शिक्षक नियुक्त हुआ है उस कलेन्डर वर्ष में आधे वर्ष में जितनी सेवा की जानी है उसके पूरे किए गए प्रत्येक कलेन्डर माह हेतु 5/3 दिनों की दर से जमा किया जाएगा।
- (ii) शिक्षक को सेवानिवृत्त होना है अथवा सेवा से त्याग पत्र देना है उसके आधे वर्ष हेतु जमा सेवानिवृत्ति अथवा त्याग पत्र तक प्रति पूर्ण किए गए कलेन्डर माह हेतु 5/3 की दर से अनुमत की जाएगी।
- (iii) जब कोई शिक्षक सेवा से हटया अथवा पदच्युत कर दिया जाता है अथवा सेवाकाल में ही उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसके सेवा से हटाए जाने, पदच्युत किए जाने अथवा सेवाकाल में ही मृत्यु हो जाने वाले कलेन्डर माह के पूर्व वाले माह की समाप्ति तक पूर्ण किए गए प्रत्येक कलेन्डर माह पर 5/3 दिनों की दर से अर्धवेतन छुट्टी जमा अनुमत की जाएगी।

7. परिवर्तित छुट्टी

निम्नलिखित शर्तों पर किसी स्थायी शिक्षक को चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर शेष अर्धवेतन छुट्टी की मात्रा से आधे से अधिक की परिवर्तित छुट्टी नहीं दी जा सकती है :—

- (i) जब परिवर्तित छुट्टी स्वीकृत की जाती है तो अर्धवेतन छुट्टी में से ऐसी छुट्टी का दोगुना खाते से घटाई जाएगी।
- (ii) इस अध्यादेश के अन्तर्गत कोई परिवर्तित छुट्टी तब तक स्वीकृत नहीं की जाएगी जब तक कि छुट्टी स्वीकृत करने वाले प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण हो कि इसकी समाप्ति पर शिक्षक कार्य पर वापस आ जाएगा।
- (iii) जहां कोई शिक्षक जिसे परिवर्तित छुट्टी स्वीकृत की जा चुकी है, सेवा से त्याग पत्र दे देता है अथवा स्वयं के

अनुरोध पर बिना कार्य पर वापस आए, स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्ति हेतु अनुमत किया जाता है, तो ऐसी हालत में परिवर्तित छुट्टी को अर्धवेतन छुट्टी माना जाएगा और परिवर्तित छुट्टी के संबंध में छुट्टी वेतन और अर्धवेतन छुट्टी के मध्य अंतर की धनराशि वसूली जाएगी।

बशर्ते कि इस प्रकार की कोई वसूली नहीं की जाएगी, यदि सेवानिवृत्ति शिक्षक के अशक्त एवं खराब स्वास्थ्य के कारणों से अथवा उसकी मृत्यु के कारण हो।

- (iv) अधिकतम 180 दिनों तक की अर्धवेतन छुट्टी पूरे सेवाकाल के दौरान परिवर्तित करना अनुमत किया जा सकता है। (चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए बिना) जहां ऐसी छुट्टियों का प्रयोग अध्ययन के किसी अनुमोदित पाठ्यक्रम हेतु किया जाता है और छुट्टी स्वीकृतदाता प्राधिकारी द्वारा इसे विश्वविद्यालय के हित में होना प्रमाणित किया जाए।
- टिप्पणी :** शिक्षक के अनुरोध पर परिवर्तित छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है, भले ही उसे अर्जित छुट्टी देय हो।

8. असाधारण छुट्टी

- (i) किसी स्थायी शिक्षक को असाधारण छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है—
 - (क) जब कोई छुट्टी देय न हो अथवा
 - (ख) जब अन्य छुट्टी शेष है, परन्तु शिक्षक लिखित रूप से असाधारण छुट्टी की स्वीकृति हेतु आवेदन देता है।
- फिर भी, बशर्ते कि नीचे उप धारा; (ii) से; (iv) के प्रावधानों के अलावा, किसी शिक्षक को किसी नियुक्ति होने की स्थिति अथवा विश्वविद्यालय के बाहर किसी अध्येतावृत्ति के लिए कोई असाधारण छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
- (ii) संबंधित संस्था के अनुरोध और शिक्षक के आवेदन पर प्रबंध बोर्ड किसी सरकारी विश्वविद्यालय अथवा अनुसंधान संस्थान अथवा अन्य इसी प्रकार की महत्वपूर्ण संस्थाओं के अधीन नियुक्ति होने की स्थिति में अथवा अध्येता हेतु यदि प्रबंध बोर्ड की राय में ऐसी छुट्टी से विश्वविद्यालय का हित प्रभावित नहीं होता है तो असाधारण छुट्टी स्वीकृत कर सकता है। इस प्रकार की छुट्टी उन्हीं शिक्षकों को दी जाएगी जो अपने पद पर नियमित किए जा चुके हैं, और विश्वविद्यालय में कम से कम 2 वर्षों की सेवा पूरी कर चुके हैं। यह भी व्यवस्था है कि बहुत आपवादिक मामलों में दो वर्षों की आवश्यकता से प्रबंध बोर्ड छूट प्रदान कर सकती है। आगे यह भी प्रावधान है कि इस उप धारा और नीचे उप धारा (iii) के अन्तर्गत स्वीकृत की गई असाधारण छुट्टी की पूर्व की अवधि से वापसी के उपरांत पांच वर्ष तक इस प्रकार की छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी। आगे यह भी शर्त है कि पांच वर्ष के अंतराल की अनुप्रयोज्यता एक माह तक की असाधारण छुट्टी पर जाने वाले संकाय सदस्य के मामले में लागू नहीं होगी और आगे यह कि यदि कोई संकाय सदस्य एक माह से अधिक और एक वर्ष से कम की असाधारण छुट्टी पर

जाता है तो वह अगले तीन वर्ष तक असाधारण छुट्टी का पात्र नहीं होगा और वे जो एक वर्ष अथवा इससे अधिक की असाधारण छुट्टी पर जाएंगे उनके लिए विद्यमान प्रावधान कि वे पांच वर्ष तक असाधारण छुट्टी की स्वीकृति हेतु पात्र नहीं होंगे, लागू होगा।

ऐसी छुट्टी का आवेदन पत्र संबंधित विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष के माध्यम से भेजा जाएगा और वह उस विशेष केन्द्र/विभाग के शिक्षण कार्मिकों की संख्या को ध्यान में रखते हुए अपनी संस्तुतियां देगा। विशेष मामले के अलावा असाधारण छुट्टी, अध्ययन छुट्टी और अथवा संबध छुट्टी पर किसी केन्द्र/विभाग के शिक्षकों की कुल संख्या के 20 प्रतिशत से अधिक को एक समय में अनुपस्थित रहने हेतु अनुमति नहीं दी जाएगी। आगे यह भी शर्त है कि यदि किसी केन्द्र/विभाग में चार अथवा इससे कम शिक्षक हैं तो विशेष मामलों को छोड़कर किसी भी समय केन्द्र/विभाग में एक शिक्षक से अधिक असाधारण छुट्टी पर केन्द्र/विभाग से अनुपस्थित रहने हेतु अनुमति नहीं किया जाएगा।

स्वीकृत की गई छुट्टी की समाप्ति पर तुरंत कार्य पर वापस आने में विफल होने के मामले में संबंधित शिक्षक की सेवायें उसे स्वीकृत की गई छुट्टी की अवधि शुरू होने की तिथि से ही समाप्त की जा सकती है। उसे स्वीकृत छुट्टी के दौरान (क्रम में ली गई अन्य छुट्टियों सहित) भुगतान किए गए वेतन एवं भत्तों, यदि कुछ है, को विश्वविद्यालय को वापस करना होगा।

- (iii) प्रबंध बोर्ड अपने विवेक से, किसी स्थायी शिक्षक को जो किसी विश्वविद्यालय अनुसंधान संस्थान अथवा अन्य इसी प्रकार की महत्वपूर्ण संस्था में शिक्षण अथवा अनुसंधान कार्य हेतु चयनित किया गया है, भी असाधारण छुट्टी स्वीकृत कर सकता है बशर्ते कि उसने विश्वविद्यालय में कम से कम दो वर्ष की अवधि तक सेवा की हो और उसका आवेदन विश्वविद्यालय के माध्यम से अग्रसारित किया गया हो। ऐसे मामलों में छुट्टी की अधिकतम अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होगी। अन्य किसी छुट्टी के होते हुए भी जो किसी शिक्षक को देय हो सकती है, वह पूरी अवधि जिसके लिए अध्यापक विश्वविद्यालय के बाहर नियुक्त रहा है, वह बिना वेतन के होगी। इस प्रकार बिताया गया समय वरिष्ठता के लिए गिना जाएगा। इस अवधि को पेंशन संबंधी/अंशदायी भविष्य निधि लाभों के लिए तब तक नहीं गिना जाएगा जब तक कि शिक्षक अथवा बाहरी नियोजक द्वारा इसका भुगतान नहीं किया जाता है।

यदि शिक्षक को स्वीकृत की गई असाधारण छुट्टी की अवधि की समाप्ति पर वह विश्वविद्यालय में अपना कार्यभार पुनर्ग्रहण नहीं करता है तो यह मान लिया जाएगा कि विश्वविद्यालय में उसके द्वारा धारित पद से उसने त्याग पत्र दे दिया है।

- (iv) नीचे उपधारा (vii) के प्रावधानों की शर्त पर किसी

शिक्षक को ऊपर उपधारा (ii) और (iii) के अन्तर्गत स्वीकृत की गई असाधारण छुट्टी का कुल योग उसकी सम्पूर्ण सेवा के दौरान पांच वर्ष से अधिक नहीं होगी।

- (v) बशर्ते कि विश्वविद्यालय के शिक्षक जिन्हें वृत्तिका पुरस्कार दिया गया है, वह उपर्युक्त प्रावधानों के अतिरिक्त पुरस्कार की अवधि हेतु असाधारण छुट्टी का पात्र इस शर्त पर होगा कि इस पुरस्कार की अवधि के दौरान वे विश्वविद्यालय में ही रहे हों।
- (vi) असाधारण छुट्टी हमेशा बिना वेतन के ही होगी। असाधारण छुट्टी की अवधि के दौरान भत्तों का भुगतान लागू नियमों द्वारा शासित होंगे।

सिवाय निम्नलिखित मामलों के, असाधारण छुट्टी, वेतनवृद्धि के लिए गिनी नहीं जाएगी :—

- (क) चिकित्सा प्रमाण पत्र पर ली गई छुट्टी

(ख) ऐसे मामले जहां कुलपति इस बात से संतुष्ट है कि छुट्टी शिक्षक के नियंत्रण से बाहरी कारणों की वजह से ली गई थी, जैसे कि नागरिक उपद्रव अथवा प्राकृतिक विपत्ति के कारण कार्य पर उपस्थित अथवा पुनः उपस्थित होने में असमर्थ होना, बशर्ते कि शिक्षक के खाते में किसी अन्य प्रकार की छुट्टी शेष न हो।

- (ग) अध्ययन आगे बढ़ाने के लिए ली गई छुट्टी।

(घ) किसी शिक्षण पद अथवा अध्येता अथवा अनुसंधान व शिक्षण पद अथवा महत्व के तकनीकी अथवा शैक्षणिक कार्य हेतु कोई नियत कार्य के लिए आमंत्रण स्वीकार करने के लिए स्वीकृत की गई छुट्टी।

- (vii) साधारण छुट्टी को आकस्मिक छुट्टी और विशेष आकस्मिक छुट्टी के अलावा किसी अन्य छुट्टी के साथ जोड़कर लिया जा सकता है, बशर्ते कि छुट्टी पर (दीर्घकालीन अवकाश की अवधि जबकि इसे छुट्टी के साथ जोड़कर लिया गया हो) कार्य से अनवरत अनुपस्थिति तीन वर्ष से अधिक नहीं होगी, सिवाय उस मामले के जिसमें छुट्टी चिकित्सा प्रमाण पत्र पर ली गई है। कार्य से अनवरत अनुपस्थित की कुल अवधि किसी भी स्थिति में कुल मिलाकर पांच वर्ष से अधिक नहीं होगी।

- (viii) छुट्टी स्वीकृत करने हेतु अधिकृत प्राधिकारी बिना छुट्टी अनुपस्थिति की अवधि को पूर्व प्रभावी रूप से असाधारण छुट्टी में परिवर्तित कर सकता है।

9. अदेय छुट्टी

- (i) अदेय छुट्टी, कुलपति के विवेक से, किसी स्थायी शिक्षक को उसकी संपूर्ण सेवा में 360 दिन की अवधि से अधिक नहीं, के लिए स्वीकृत की जा सकती है, जिसमें एक समय में 90 दिनों से अधिक की नहीं और अन्यथा चिकित्सा प्रमाण पत्र पर कुल मिलाकर 180 दिनों के लिए स्वीकृत की जा सकती है। इस प्रकार की छुट्टी

उसके द्वारा बाद में अर्जित की गई अर्ध वेतन छुट्टी में से घटाई जाएगी।

- (ii) अदेय छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी जब तक कुलपति संतुष्ट न हों जैसा कि यथार्थ रूप में पूर्वाभास किया जा सकता है, शिक्षक छुट्टी समाप्त होने पर कार्य पर आएगा और स्वीकृत की गई छुट्टी अर्जित करेगा।

- (iii) कोई शिक्षक जिसे अदेय छुट्टी स्वीकृत की गई है उसे सेवा से त्याग पत्र देने की अनुमति उस समय तक नहीं दी जाएगी जब तक कि उसके छुट्टी खाते का नाम शेष सक्रिय सेवा द्वारा समाप्त नहीं हो जाता अथवा वह इस प्रकार की अवधि अर्जित न करने हेतु वेतन और भत्तों के रूप में भुगतान की गई धनराशि वापस नहीं कर देता। ऐसे मामले में जिसमें सेवानिवृत्त, खराब स्वास्थ्य के कारण शिक्षक के आगे सेवा हेतु अशक्त हो जाने से, अपरिहार्य है, अर्जित की जाने वाली छुट्टी की अवधि हेतु छुट्टी वेतन वापस करने से, प्रबंध बोर्ड छूट दे सकता है।

आगे शर्त यह है कि प्रबंध बोर्ड किसी अन्य आपवादिक मामले में अभी अर्जित की जाने वाली छुट्टी की अवधि हेतु छुट्टी वेतन की वापसी, इसके कारणों को अभिलेखित करते हुए, से छूट दे सकता है।

10. अध्ययन छुट्टी

- (i) (क) किसी स्थायी पूर्णकालिक आचार्य/उपाचार्य को जिसकी सतत सेवा तीन वर्ष से कम न हो, को अध्ययन अथवा अनुसंधान की विशेष शाखा अथवा विश्वविद्यालय/संगठन के विविध पहलुओं और शिक्षा की पद्धतियों के विशेष अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए जिसे उम्मीदवार करना चाहता है और यदि विश्वविद्यालय को अध्ययन पाठ्यक्रम अथवा अनुसंधान कार्यक्रम द्वारा लाभ होने की संभावना हो, अध्ययन छुट्टी प्रदान की जा सकती है।
- (ख) किसी स्थायी पूर्णकालिक प्राध्यापक जिसकी सतत सेवा दो वर्ष से कम न हो, विश्वविद्यालय/संगठन में उसके कार्य से सीधे संबंधित अनुसंधान के अध्ययन की किसी विशेष शाखा और शिक्षा की पद्धति को आगे बढ़ाने के लिए कार्य की पूर्ण योजना देने पर अध्ययन छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है।

स्पष्टीकरण :

सेवा अवधि की गणना करने में वह समय जिसमें कोई व्यक्ति परीक्षा पर, अथवा अनुसंधान सहायक के रूप में कार्यरत था, को गिना जा सकता है बशर्ते कि :

- (क) आवेदन पत्र की तिथि को व्यक्ति शिक्षक है।
(ख) उसकी सेवा भंग नहीं हुई है।
(ii) अध्ययन छुट्टी उन्नत अध्ययन और अनुसंधान समिति की

सिफारिश पर स्वीकृत की जाएगी। छुट्टी दो वर्ष से अधिक की अवधि के लिए नहीं दी जाएगी। सिवाय बड़े आपवादिक मामले में जिसमें कि प्रबंध बोर्ड संतुष्ट है कि ऐसा विस्तार शैक्षणिक आधारों पर अपरिहार्य और विश्वविद्यालय के हित में आवश्यक है। अध्ययन छुट्टी, किसी भी मामले में, तीन वर्ष से अधिक की नहीं होगी।

- (iii) अध्ययन छुट्टी किसी ऐसे शिक्षक को जो अध्ययन छुट्टी के बीत जाने के बाद जिस तिथि को उसका कार्य पर वापस आना अपेक्षित है उससे तीन वर्षों के अंदर उसकी सेवानिवृत्ति है, नहीं स्वीकृत की जाएगी।

- (iv) अध्ययन छुट्टी एक से अधिक बार स्वीकृत की जा सकती है बशर्ते कि पिछली अध्ययन छुट्टी की अवधि पूर्ण होने पर शिक्षक के कार्य पर वापस आने के बाद पांच वर्ष से अधिक बीत चुका हो। शिक्षक पिछली छुट्टी की अवधि के दौरान किए गए कार्य के साथ ही अध्ययन छुट्टी की प्रस्तावित अवधि के दौरान किए जाने वाले कार्य का भी ब्यौरा देगा।

- (v) जिसे अध्ययन छुट्टी स्वीकृत की गई है ऐसे किसी शिक्षक को अध्ययन पाठ्यक्रम अथवा अनुसंधान कार्यक्रम में प्रबंध बोर्ड की अनुमति के बिना भारी फेरबदल करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। जब अध्ययन पाठ्यक्रम के लिए स्वीकृति अध्ययन छुट्टी कम पड़ जाए तो शिक्षक अध्ययन पाठ्यक्रम के निष्कर्ष पर पहुंचकर कार्य ग्रहण कर लेगा जब तक कि कमी की अवधि को साधारण छुट्टी मानने के लिए प्रबंध बोर्ड का पूर्ण अनुमोदन नहीं ले लिया जाए।

- (vi) (क) नीचे उपधारा, अपरुद्ध और अपपद्ध पद के प्रावधानों की शर्त पर आचार्यों और उपचार्यों को पहले वर्ष के लिए पूर्ण वेतन पर, दूसरे वर्ष के लिये आधे वेतन पर और तीसरे वर्ष बिना वेतन अध्ययन छुट्टी स्वीकृत किया जाना अनुमत्त होगा। अध्ययन छुट्टी स्वीकृत किए गए प्राध्यापक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संकाय सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्येतावृत्ति प्रदान किए गए शिक्षकों को जैसा लागू है अध्ययन छुट्टी की अवधि हेतु अपनी कुल परिलब्धियां लेना जारी रखने के पात्र होंगे। (सिवाय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानकों के अनुसार रहन-सहन व्यय भत्ते के)

टिप्पणी : "वेतन" शब्द का अर्थ औसत वेतन से है और इसकी गणना प्रासंगिक अध्यादेश में यथार्थरूप से की जाएगी।

- (ख) अध्ययन छुट्टी की अवधि के दौरान शिक्षक सामान्यतः मकान किराया भत्ता अथवा नगर प्रतिपूर्ति भत्ते का पात्र नहीं होगा। बशर्ते कि कुलपति, किसी मामले की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ऐसे भत्ते के किसी भाग अथवा पूरे का भुगतान स्वीकृत कर सकते हैं।

- (vii) छात्रवृत्ति, अध्येतावृत्ति अथवा अन्य वित्तीय सहायता की धनराशि जो किसी अध्ययन छुट्टी प्राप्त शिक्षक को प्रदान की जा चुकी है वह उसके वेतन और भत्ते सहित अध्ययन छुट्टी स्वीकृत करने में बाधक नहीं बनेगा। परन्तु इस प्रकार प्राप्त छात्रवृत्ति इत्यादि, उस वेतन और भत्ते का निर्धारण करने हेतु लेखे में लिया जाएगा जिस पर अर्जित छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है।
- (viii) यदि कोई शिक्षक, जिसे अध्ययन छुट्टी स्वीकृत की गई है, को अध्ययन छुट्टी की अवधि के दौरान अंशकालिक रोजगार के लिए कोई पारिश्रमिक प्राप्त करने और रखने हेतु अनुमत किया गया है तो उसे सामान्यतः कोई अध्ययन छुट्टी वेतन स्वीकृत नहीं किया जाएगा। परन्तु ऐसे मामलों में जिनमें अंशकालिक रोजगार के संबंध में प्राप्त पारिश्रमिक की धनराशि पर्याप्त नहीं मानी जाती तो प्रबंध बोर्ड प्रत्येक मामले में भुगतान किए जाने वाले अध्ययन छुट्टी वेतन का निर्धारण कर सकता है।
- टिप्पणी : अध्ययन छुट्टी प्राप्त किए शिक्षक का यह कर्तव्य होगा कि वह अध्ययन छुट्टी की अवधि में किसी व्यक्ति अथवा संस्था, जो भी हो, से किसी भी रूप में उसके द्वारा प्राप्त की गई वित्तीय सहायता के बारे में विश्वविद्यालय को तत्काल सूचित करेगा।
- (ix) तीन वर्ष से अधिक नहीं की छुट्टी पर कार्य से अनुपस्थित रहने की अधिकतम अवधि की शर्त पर अध्ययन छुट्टी, अर्जित छुट्टी, अर्ध वेतन छुट्टी, असाधारण छुट्टी अथवा ग्रीष्मकालीन दीर्घावकाश के साथ जोड़ी जा सकती है, बशर्ते कि शिक्षक के खाते में जमा अर्जित छुट्टी, अध्ययन छुट्टी के शुरू होने से पहले ले ली जाएगी। जब अध्ययन छुट्टी, दीर्घावकाश के क्रम में ली गई हो, तो अध्ययन छुट्टी की अवधि की शुरुआत, दीर्घावकाश की समाप्ति पर शुरू हुई मानी जाएगी।
- (x) अध्ययन छुट्टी स्वीकृत शिक्षक को जब और जैसी वेतनवृद्धि (या) देय होंगी स्वीकृत की जाएंगी। फिर भी, अध्ययन छुट्टी पर शिक्षक को देय परिलब्धियों की राशि ऊपर उपधारा, अपपद्ध (और अपप) के प्रावधानों की शर्त पर कम कर दी जाएगी।
- (xi) पेंशन/अंशदायी भविष्य निधि हेतु अध्ययन छुट्टी सेवा के रूप में गिनी जाएगी, बशर्ते कि शिक्षक अध्ययन छुट्टी की समाप्ति पर विश्वविद्यालय में पुनः कार्य ग्रहण करे और जिस अवधि के लिए बंध पत्र भरा है उस अवधि तक सेवा करे।
- (xii) किसी शिक्षक को स्वीकृत की गई अध्ययन छुट्टी निरस्त मान ली जाएगी, यदि उसे स्वीकृत होने से 12 माह के अंदर उपयोग नहीं कर लिया जाता। बशर्ते कि जहां स्वीकृत अध्ययन छुट्टी इस प्रकार निरस्त की जा चुकी है तो शिक्षक इस तरह की छुट्टी के लिए पुनः आवेदन दे सकता है।
- (xiii) अध्ययन छुट्टी लेने वाला कोई शिक्षक यह वचन पत्र देगा कि वह अध्ययन छुट्टी की अवधि की दुगुनी अवधि हेतु अथवा तीन वर्ष की अवधि जो भी कम हो, अनवरत

विश्वविद्यालय की सेवा करेगा जो अध्ययन छुट्टी की समाप्ति के बाद कार्य ग्रहण करने की तिथि से गिनी जाएगी।

(xiv) कोई शिक्षक :

- (क) जो उसे स्वीकृत की गई अध्ययन छुट्टी की अवधि के अंदर अपना अध्ययन पूर्ण करने में असमर्थ होता है, अथवा
- (ख) जो अध्ययन छुट्टी की समाप्ति पर विश्वविद्यालय की सेवा में पुनः कार्य ग्रहण करने में विफल होता है, अथवा
- (ग) जो विश्वविद्यालय में पुनः कार्यग्रहण करता है परन्तु सेवा में पुनः आने के बाद सेवा की निर्धारित अवधि पूर्ण किए बिना सेवा छोड़ दे, अथवा
- (घ) जो उक्त अवधि में विश्वविद्यालय द्वारा पदच्युत अथवा सेवा से हटा दिया जाता है।
- उसे छुट्टी वेतन और भत्तों तथा पाठ्यक्रम के संबंध में शिक्षक पर किए गए अथवा उसे अथवा उसकी ओर से किए गए अन्य व्ययों की धनराशि विश्वविद्यालय को वापस करनी होगी। बशर्ते कि यदि कोई शिक्षक ने अध्ययन छुट्टी से वापस आकर, बंध पत्र के अधीन सेवा की अवधि के आधे से अधिक की अवधि तक विश्वविद्यालय की सेवा कर ली हो तो वह ऊपर की गणना के अनुसार आई धनराशि की आधी राशि विश्वविद्यालय को वापस करेगा। यदि किसी शिक्षक को बिना वेतन और भत्तों के अध्ययन छुट्टी स्वीकृत की गई है तो उसे अंतिम आहरित उसके चार माह के वेतन और भत्तों के बराबर की धनराशि के साथ-साथ अध्ययन के पाठ्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अन्य व्ययों का भुगतान विश्वविद्यालय को करना होगा।

स्पष्टीकरण :

यदि कोई शिक्षक अध्ययन छुट्टी बढ़ाने का अनुरोध करता है और बढ़ाना स्वीकृत नहीं किया जाता, परन्तु फिर भी मूल रूप से स्वीकृत छुट्टी की समाप्ति पर कार्य पर पुनः उपस्थित नहीं होता तो उसे इस अध्यादेश के अधीन देयों की वसूली के उद्देश्य हेतु उसकी छुट्टी की समाप्ति पर सेवा में पुनः आने में विफल माना जाएगा।

- (क) उपर्युक्त के होते हुए भी, प्रबंध बोर्ड, यह आदेश दे सकता है कि किसी शिक्षक पर इस अध्यादेश में उल्लिखित कुछ नहीं लागू होगा, जिसे बंधक पत्र में सेवा की निर्धारित अवधि के अंदर चिकित्सा आधारों पर सेवा से सेवानिवृत्त होने की अनुमति दे दी गई हो। आगे शर्त है कि प्रबंध बोर्ड, किसी अन्य आपवादिक मामले में, इस अध्यादेश के अधीन किसी शिक्षक द्वारा वापस की जाने वाली धनराशि से, कारण अभिलिखित करते हुए छुटकारा दे सकता है अथवा कमी कर सकता है

(xv) छुट्टी स्वीकृत किए जाने के बाद, शिक्षक छुट्टी मनाने के पहले ऊपर उपधारा; गपपपद्ध और; गपअद्ध में वर्णित शर्तों को पूर्ण करने हेतु अपने आपको बाध्य करते हुए विश्वविद्यालय के पक्ष में एक बंध पत्र निष्पादित करेगा और वित्त अधिकारी की संतुष्टि हेतु अचल संपत्ति की सुरक्षा देगा अथवा किसी बीमा कंपनी का निष्ठा बंध-पत्र अथवा किसी अनुसूचित बैंक द्वारा गारंटी अथवा ऊपर की उपधाराओं के अनुसार विश्वविद्यालय को वापस की जाने वाला धनराशि हेतु दो स्थाई शिक्षकों की जमानत देगा।

(xvi) शिक्षक अपने पर्यवेक्षक अथवा संस्थान के प्रधान से अपने अध्ययन में प्रगति की छमाही रिपोर्टें कुलसचिव को प्रस्तुत करेगा। यह रिपोर्ट अध्ययन छुट्टी के प्रत्येक छमाही की समाप्ति पर एक माह के अंदर कुलसचिव के पास पहुंच जाएगी। यदि निर्दिष्ट अवधि में रिपोर्ट कुलसचिव के पास नहीं पहुंचती है तो ऐसी रिपोर्ट की प्राप्ति तक छुट्टी वेतन का भुगतान टाला जा सकता है।

11. सैबथ (विश्राम) छुट्टी

- (i) विश्वविद्यालय के स्थायी पूर्णकालिक शिक्षक जिन्होंने, आचार्य के मामले में 3 वर्ष की सेवा, उपाचार्य के मामले में पांच वर्ष की सेवा और प्राध्यापक के मामले में दस वर्षों की सेवा पूर्ण कर ली हो, उन्हें विश्वविद्यालय के लिए अपनी दक्षता और उपयोगिता बढ़ाने के उद्देश्य हेतु अध्ययन अथवा अनुसंधान अथवा अन्य शैक्षणिक खोज करने के लिए, विश्राम छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है। यह छुट्टी किसी ऐसे शिक्षक को स्वीकृत नहीं की जाएगी जिसको विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने में एक वर्ष से कम अवधि रह गयी हो।
- (ii) किसी शिक्षक को विश्राम छुट्टी की अवधि के दौरान छुट्टी हेतु लागू दरों पर (निर्धारित शर्तों को पूर्ण करने की शर्त पर) वेतन और भत्तों का भुगतान किया जाएगा। फिर भी, विश्वविद्यालय, उसका पद भरने अथवा अन्य वैकल्पिक व्यवस्था, जिससे अतिरिक्त व्यय हो, नहीं करेगा।
- (iii) कोई शिक्षक जो विश्राम छुट्टी पर है, अपनी छुट्टी की अवधि के दौरान भारत अथवा विदेश में अन्य दूसरे संगठन में कोई नियमित नियुक्ति ग्रहण नहीं करेगा। फिर भी उसे अध्येतावृत्ति अथवा अनुसंधान छात्रवृत्ति अथवा मानदेय सहित तृतीय शिक्षण और अनुसंधान कार्य अथवा सहायता का कोई अन्य रूप उन्नत अध्ययन की किसी संस्था में नियमित रोजगार के अलावा स्वीकार करने की अनुमति दी जा सकती है। बशर्त कि ऐसे मामलों में, प्रबंध बोर्ड, यदि वह ऐसा चाहें, तो कम वेतन और भत्तों पर विश्राम छुट्टी स्वीकृत कर सकती है।
- (iv) विश्राम छुट्टी की अवधि के दौरान शिक्षक को देय तिथि से ही वेतनवृद्धि अनुमत की जाएगी। पेंशन/अंशदायी भविष्य निधि के उद्देश्य से छुट्टी की अवधि सेवा के रूप में गिनी जाएगी बशर्त कि शिक्षक अपनी छुट्टी समाप्त होते ही विश्वविद्यालय में अपना कार्यभार पुनः ग्रहण कर ले।

संपूर्ण सेवाकाल के दौरान दो बार ही विश्राम छुट्टी अनुमत की जाएगी। पहली विश्राम छुट्टी मनाने से छः वर्ष के अंदर कोई विश्राम छुट्टी नहीं दी जाएगी।

टिप्पणी :

1. छुट्टी स्वीकृति के लिए आवेदन पत्र के साथ विश्राम छुट्टी के दौरान का कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया जाएगा।
2. छुट्टी से वापस आने पर शिक्षक छुट्टी की अवधि के दौरान किए गए अध्ययन, अनुसंधान अथवा अन्य कार्य की प्रकृति विश्वविद्यालय को रिपोर्ट करेगा।

12. प्रसूति छुट्टी

- (i) दो से कम जीवित बच्चे वाली किसी महिला शिक्षक को छुट्टी के प्रारंभ की तिथि से 135 दिनों की अवधि के लिए पूर्ण वेतन पर प्रसूति छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है।
- (ii) प्रसूति छुट्टी चिकित्सा गर्भ समाप्ति अधिनियम, 1971 के अधीन प्रवृत्त गर्भपात सहित गर्भसंस्त्राव के मामलों में, आवेदित छुट्टी छः सप्ताह से अधिक न हो और छुट्टी के आवेदन पत्र के साथ चिकित्सा प्रमाण पत्र संलग्न होने की शर्त पर, भी प्रसूति छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है।
- (iii) प्रसूति छुट्टी के साथ अर्जित छुट्टी, अर्ध वेतन छुट्टी अथवा असाधारण छुट्टी जोड़ी जा सकती है परन्तु प्रसूति छुट्टी के क्रम में आवेदित कोई छुट्टी तभी स्वीकृत की जा सकती है जब आवेदन के साथ चिकित्सा प्रमाण पत्र लगा हो।
- (iv) धारा 12 (पपपद्ध) में वर्णित प्रावधानों के होते हुए भी, कोई छुट्टी (प्रसूति छुट्टी के क्रम में आवेदित साठ दिनों से कम की अवधि हेतु परिवर्तित छुट्टी सहित) चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए बिना स्वीकृत की जा सकती है।
- (v) धारा 12 (पअद्ध) के अन्तर्गत स्वीकृत छुट्टी के अगले क्रम में छुट्टी महिला विश्वविद्यालय की महिला शिक्षक की बीमारी हेतु चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर स्वीकृत की जा सकती है। ऐसी छुट्टी नवजात शिशु की बीमारी के मामले में भी स्वीकृत की जा सकती है, इस शर्त पर कि उसे इस बात का चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा कि बीमार बच्चे को मां के व्यक्तिगत ध्यान रखने और बच्चे के पास उसकी उपस्थिति पूर्णतः आवश्यक है।
- (vi) दो जीवित बच्चों वाले किसी पुरुष शिक्षक को उसकी पत्नी की प्रसवावस्था के दौरान 15 दिनों की अवधि हेतु पितृत्व छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है। ऐसी छुट्टी की अवधि के दौरान उसे छुट्टी पर जाने के तुरंत पहले आहरित किए जा रहे वेतन के बराबर छुट्टी वेतन का भुगतान किया जाएगा। पितृत्व छुट्टी, छुट्टी खाते में नाम नहीं डाली जाएगी और किसी अन्य प्रकार की छुट्टी के साथ मिलाया जा सकता (प्रसूति छुट्टी के मामले के समान) है। किसी भी परिस्थिति में, सामान्यतः ऐसी छुट्टी मना नहीं की जाएगी।

13. विशेष अशक्तता छुट्टी

- (क) इरादे से पहुंचाई गई चोट हेतु विशेष अशक्तता छुट्टी :—
- (i) किसी शिक्षक को जो इरादतन लगाई गई अथवा पहुंचाई गई अथवा अपने सरकारी कर्तव्यों के सम्यक निष्पादन

अथवा अपनी सरकारी स्थिति की परिस्थितियों के कारण लगी चोट द्वारा अशक्त हो गया है, उसे विशेष विकलांगता छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है।

- (ii) वह घटना जिसे इसका कारण बताया जा रहा उसके तीन माह के अंदर यदि अपने आप अशक्तता स्पष्ट न हो जाए और अशक्त व्यक्ति ने इस तथ्य को सूचना में लाने में पूरी तत्परता से कार्रवाई न की हो तो, ऐसी छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी।

बशर्ते कि छुट्टी स्वीकृत करने वाला सक्षम प्राधिकारी यदि अशक्तता के कारणों से संतुष्ट है तो उन मामलों में जिनमें कारण के घटित होने के तीन माह बाद अशक्तता स्पष्ट होने पर भी छुट्टी स्वीकृत होने की अनुमति दे सकता है।

- (iii) छुट्टी स्वीकृत की अवधि अधिकृत चिकित्सा अधिकारी द्वारा यथा प्रमाणित किया गया है वैसी होगी और किसी भी मामले में 24 माह से अधिक नहीं होगी।

- (iv) विशेष अशक्तता छुट्टी को किसी अन्य तरह की छुट्टी के साथ जोड़ा जा सकता है।

- (v) विशेष अशक्तता छुट्टी एक से अधिक बार स्वीकृत की जा सकती है, यदि अशक्तता बढ़ जाती है अथवा बाद की तिथि में उन्हीं परिस्थितियों में पुनः प्रकट हो जाती है। परन्तु किसी एक अशक्तता के परिणामस्वरूप 24 माह से अधिक ऐसी छुट्टी स्वीकृत नहीं की जा सकती है।

- (vi) विशेष अशक्तता छुट्टी को पेंशन हेतु सेवा की गणना करने में कार्य अवधि के रूप में गिना जाएगा और इस अध्यादेश की उपधारा (ख) के प्रावधानों के अधीन स्वीकृत की गई छुट्टी को छोड़कर, छुट्टी खाते में नहीं घटाई जाएगी।

- (vii) ऐसी छुट्टी की अवधि में छुट्टी वेतन निम्न प्रकार होगा :—

(क) ऊपर की धारा (v) के अन्तर्गत स्वीकृत ऐसी छुट्टी सहित ऐसी छुट्टी की किसी अवधि के पहले 120 दिनों हेतु, अर्जित छुट्टी की अवधि के छुट्टी वेतन के बराबर।

(ख) किसी ऐसी छुट्टी की शेष अवधि के लिए अर्ध वेतन छुट्टी की अवधि के छुट्टी वेतन के बराबर। बशर्ते कि कर्मचारियों के किसी सदस्य को अपने विकल्प पर अगले 120 दिनों के अंदर की अवधि हेतु ऊपर उपधारा (ख) के अनुसार छुट्टी वेतन की अनुमति दी जा सकती है और उस स्थिति में ऐसी छुट्टी की अवधि उसके अर्धवेतन छुट्टी खाते में चढ़ाया जाएगा।

- (ख) दुर्घटना क्षति हेतु विशेष अशक्तता छुट्टी

- (viii) इस धारा के भाग (क) के प्रावधान किसी ऐसे शिक्षक पर भी लागू होंगे जो दुर्घटना में हुई क्षति के कारण अशक्त हैं अथवा अपने सरकारी कर्तव्यों के सम्यक् निष्पादन के फलस्वरूप अथवा अपनी सरकारी स्थिति के फलस्वरूप अथवा किसी विशेष कार्य के निष्पादन में

हुई बीमारी द्वारा, जो कि उसके पद से संबद्ध साधारण खतरों के आगे, बीमारी अथवा क्षति के कारण उसका उत्तरदायित्व बढ़ाकर उसे प्रभावित करता है।

- (ix) विशेष अशक्तता छुट्टी की स्वीकृति, ऐसे मामलों में, आगे उल्लिखित दशाओं की शर्त पर होगी :—

(क) अशक्तता यदि बीमारी के कारण है, जो कि सीधे विशेष कर्तव्य के निष्पादन के कारण हुई है तो इसे किसी अधिकृत चिकित्सा अधिकारी द्वारा अवश्य प्रमाणित किया जाना चाहिए।

(ख) कि यदि शिक्षक को सेवा के दौरान ऐसे अशक्तता हुई है, तो इसे छुट्टी स्वीकृत करने वाले सक्षम प्राधिकारी की राय में आपवादिक मामला होना चाहिए।

(ग) कि किसी अधिकृत चिकित्सा अधिकारी द्वारा संस्तुत अनुपस्थिति की अवधि का कोई भाग, इस धारा के अन्तर्गत छुट्टी में और कुछ भाग किसी अन्य प्रकार की छुट्टी के अधीन हो सकता है और यह कि वेतन छुट्टी पर स्वीकृत विशेष अशक्तता छुट्टी की राशि अनुमन्य अर्जित छुट्टी के बराबर के वेतन पर राशि के 120 दिनों से अधिक नहीं होगी।

14. संगरोध छुट्टी

- (i) संगरोध छुट्टी कर्तव्य से अनुपस्थिति रहने की वह छुट्टी है जिसमें किसी शिक्षक के परिवार अथवा वंश में किसी संक्रामक बीमारी के हो जाने के फलस्वरूप उसे अनुपस्थित रहना आवश्यक हो गया हो।

- (ii) संगरोध छुट्टी चिकित्सा प्रमाण पत्र के आधार पर 21 दिनों की अवधि से अधिक स्वीकृत नहीं की जा सकती है। आपवादिक मामलों में यह सीमा 30 दिनों तक बढ़ाई जा सकती है। इस अवधि से अधिक संगरोध उद्देश्यों हेतु आवश्यक कोई छुट्टी साधारण छुट्टी मानी जाएगी। संगरोध छुट्टी अर्जित छुट्टी, अर्धवेतन छुट्टी अथवा असाधारण छुट्टी के साथ जोड़ी जा सकती है। संगरोध छुट्टी पर गये किसी शिक्षक को कार्य से अनुपस्थित नहीं माना जाता है और न ही उसका वेतन प्रभावित होता है।

15. दीर्घावकाश छुट्टी

- (i) दीर्घावकाश आकस्मिक छुट्टी और विशेष आकस्मिक छुट्टी को छोड़कर किसी प्रकार की छुट्टी के साथ जोड़कर लिया जा सकता है बशर्ते कि दीर्घावकाश के साथ छुट्टी आगे और पीछे दोनों ओर नहीं होनी चाहिए।

- (ii) विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, दीर्घावकाश और अर्जित छुट्टी यदि एक साथ ली जाए तो इसे एक सत्र से अधिक नहीं होना चाहिए।

- (iii) जब दीर्घावकाश छुट्टी दो अवधियों के बीच में पड़े जिससे कि पूरी अवधि के दौरान कार्य से लगातार अनुपस्थिति हो रही हो तो ऐसा दीर्घावकाश छुट्टी का एक भाग होगा।

- (iv) दीर्घावकाश की अवधि के लिए कोई शिक्षक कार्य पर रहने के बराबर ही उसी वेतन का पात्र होगा। फिर भी

कोई शिक्षक, यदि उसने त्याग पत्र देने का नोटिस दिया है और ऐसी नोटिस की अवधि दीर्घावकाश के दौरान समाप्त होती है अथवा उसके पिछले वेतन से एक माह के अंदर, तो ऐसे वेतन के आधे का ही पात्र होगा।

16. परिवीक्षा पर नियुक्त शिक्षक

स्थानापन्न रिक्त पर परिवीक्षाधीन व्यक्ति के रूप और परिवीक्षा के निश्चित शब्द सहित नियुक्त हुआ कोई शिक्षक परिवीक्षा की अवधि के दौरान छुट्टी स्वीकृत की जाएगी जोकि उसके द्वारा परिवीक्षाधीन के अन्यथा स्थानापन्न रूप से ग्रहण किए हुए पद पर उसे देय होती। यदि किसी कारणवश परिवीक्षाधीन व्यक्ति की सेवाएं समाप्त करने का प्रस्ताव किया जाता है तो उसे प्रदान की गई कोई छुट्टी, प्रबंध बोर्ड के आदेशों द्वारा जिस तिथि से उसकी सेवाएं समाप्त की गई हैं उससे आगे बढ़नी नहीं चाहिए। दूसरी ओर कोई शिक्षक जो उसकी उस पद पर उपयुक्तता का आंकलन करने के लिए "परिवीक्षा पर" नियुक्त किया गया है जो स्थानापन्न रिक्त नहीं है तो उसे जब तक स्थायी नहीं किया जाता तब तक उसे छुट्टी प्रदान करने के उद्देश्य से अस्थायी शिक्षक के रूप में समझा जाएगा। यदि विश्वविद्यालय का कोई स्थायी सेवा वाला व्यक्ति उच्च पद पर परिवीक्षा पर नियुक्त होता है तो परिवीक्षा के दौरान उसके स्थायी पद पर लागू छुट्टी नियमों के लाभ से वंचित नहीं किया जाएगा।

17. सेवानिवृत्ति उपरांत पुनर्नियोजित शिक्षक

सेवानिवृत्ति उपरांत किसी शिक्षक के पुनर्नियोजन के मामले में इन अध्यादेशों के प्रावधान ऐसे लागू होंगे जैसे कि उसके पुनर्नियोजन की तिथि को वह पहली बार सेवा में आया हो। पुनर्नियोजित पेंशनरों को जिन्हें छुट्टी के मामले में नया प्रवेशक माना जाता है उन्हें नीचे धारा 21 की उपधारा 12 के अन्तर्गत आवधिक छुट्टियां भी प्रदान की जा सकती हैं। इस शर्त पर कि यदि पुनर्नियोजन की अवधि के दौरान पेंशन आस्थगित कर दी गई है तो वे आवधिक छुट्टी के दौरान अपनी पेंशन आहरित करने के पात्र नहीं होंगे।

18. अस्थायी शिक्षक

निम्नलिखित शर्तों और अपवादों की शर्त पर, अस्थायी शिक्षक, इस अध्यादेश के भाग (क) के प्रावधानों से शासित होंगे :—

(1) अर्जित छुट्टी

(क) अस्थायी शिक्षक किसी स्थायी शिक्षक की तरह ही निम्नांकित अर्जित छुट्टी का पात्र होगा :—

- (i) दीर्घावकाश सहित वास्तविक सेवा अवधि का 1/30वां भाग
- (ii) दीर्घावकाश के दौरान जितनी अवधि के दौरान उसे कार्य करना पड़ा यदि कोई है, उस अवधि का 1/3वां भाग

(2) अर्धवेतन छुट्टी

अस्थायी शिक्षक को कोई अर्धवेतन छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी, जब तक कि छुट्टी स्वीकृत करने वाले प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने के कारण न हों कि शिक्षक ऐसी छुट्टी की समाप्ति पर कार्य पर वापस आ जाएगा।

(3) परिवर्तित छुट्टी

अस्थायी शिक्षक अर्धवेतन छुट्टी के किसी भाग को परिवर्तित करने के पात्र नहीं होंगे।

(4) असाधारण छुट्टी

अस्थायी शिक्षक के मामले में किसी भी अवसर पर असाधारण छुट्टी की अवधि निम्नलिखित सीमाएं पार नहीं करेंगी :—

- (क) एक समय में तीन माह
- (ख) जहां शिक्षक ने तीन वर्षों की सतत् सेवा पूर्ण कर ली हो और छुट्टी आवेदन के साथ चिकित्सा प्रमाण पत्र लगा है ऐसे मामलों में छः माह।
- (ग) क्षय रोग, कैंसर अथवा कुष्ठ रोग हेतु जब शिक्षक का किसी मान्यता प्राप्त चिकित्सालय में इलाज चल रहा हो, ऐसे मामले में 18 माह।

(घ) (1) 24 माह, यदि छुट्टी अध्ययन जो कि विश्वविद्यालय के हित में प्रमाणित हो, को आगे बढ़ाने हेतु आवश्यक हो, बशर्ते कि असाधारण छुट्टी की शुरुआत की तिथि को शिक्षक ने तीन वर्षों की सतत् सेवा पूरी कर ली हो। ऐसे मामले में जहां यह शर्त पूरी नहीं होती है, तो इस सीमा तक असाधारण छुट्टी, अन्य किसी प्रकार की देय और आवेदित छुट्टी के क्रम में, स्वीकृत की जा सकती है (ऊपर)

(क) के अन्तर्गत तीन माह की असाधारण छुट्टी सहित, यदि शिक्षक समाप्ति की तिथि को अथवा ऐसी छुट्टी में तीन वर्ष की सतत् सेवा पूरी करता है।

(2) जब कोई अस्थायी शिक्षक उसे स्वीकृत असाधारण छुट्टी की अधिकतम अवधि समाप्त हो जाने पर भी कार्य पर पुनः वापस आने में विफल होता है अथवा जहां कोई शिक्षक जिसे कम छुट्टी स्वीकृत की गई है, किसी ऐसी अवधि हेतु अपनी इच्छा से अनुपस्थित होता है जिसे स्वीकृत असाधारण छुट्टी के साथ मिलाने से वह सीमा पार कर जाता है जिसमें उसे ऊपर (1) के अनुसार छुट्टी स्वीकृत की जानी चाहिए थी, तो मामले की आपवादिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रबंध बोर्ड जब तक अन्यथा निश्चित न करे तब तक उसे नियुक्ति से त्याग पत्र दे चुका माना जाएगा और तदनुसार आगे वह विश्वविद्यालय का कर्मचारी नहीं रहता।

(5) अदेय छुट्टी, अध्ययन छुट्टी और विश्राम छुट्टी

अस्थायी शिक्षक अदेय छुट्टी, अध्ययन छुट्टी और विश्राम छुट्टी के पात्र नहीं होंगे।

(6) दीर्घकालावकाश

(i) अस्थायी व्यवस्था के रूप में नियुक्त कोई शिक्षक ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के वेतन का पात्र तभी होगा जब उसने शैक्षणिक वर्ष के शुरू होने के दो माह के अंदर कार्य ग्रहण कर लिया हो और कार्यग्रहण करने की तिथि से सत्र के अंतिम कार्य दिवस तक लगातार और संतोषजनक कार्य किया हो।

- (ii) अन्य मामलों में शिक्षक को दीर्घावकाश वेतन का भुगतान किया जा सकता है यदि अस्थायी नियुक्ति अगले शैक्षणिक सत्र के कुल में से किसी भाग तक चली हो और विश्वविद्यालय खुलने के दिन से ही कार्य पर तैनात रहे और दीर्घावकाश से पहले अंतिम कार्य दिवस को भी सेवा की हो।
- (ड) संविदा आधार पर नियुक्त शिक्षक
संविदा आधार पर नियुक्त किए गए शिक्षक, निम्न प्रकार की छुट्टियों के पात्र होंगे :—
19. (i) अर्जित छुट्टी/अर्धवेतन छुट्टी/आकस्मिक छुट्टी विश्वविद्यालय के पूर्णकालिक अस्थायी शिक्षकों को यथा देय :—
- (ii) (क) एक वर्ष अथवा कम हेतु संविदा नियुक्तियों के मामले में कोई असाधारण छुट्टी देय नहीं।
- (ख) एक वर्ष से अधिक परन्तु 5 वर्ष से अधिक नहीं की संविदा नियुक्ति के मामलों में अस्थायी शिक्षकों को यथा देय असाधारण छुट्टी, इस शर्त पर कि पूर्ण संविदा अवधि के दौरान असाधारण छुट्टी की कुल अवधि 90 दिनों से अधिक नहीं होगी।
- (ग) जहां संविदा नियुक्ति अनिश्चित अवधि के लिए की गई है अथवा 5 वर्ष से अधिक के लिए है, ऐसे मामलों में पूर्णकालिक अस्थायी शिक्षकों को यथा देय असाधारण छुट्टी दी जाएगी।
20. (च) अवैतनिक और अंशकालिक शिक्षक
विश्वविद्यालय के अवैतनिक और अंशकालिक शिक्षक उन्हीं शर्तों पर छुट्टी के पात्र होंगे, जैसा विश्वविद्यालय में पूर्णकालिक अस्थायी शिक्षकों पर लागू होता है।
21. (छ) सामान्य
सामान्य शर्तें :—
- (1) छुट्टी अर्जित करना
छुट्टी केवल सेवा द्वारा अर्जित होगी। विदेश सेवा में बिताई गई अवधि सेवा में गिनी जाएगी यदि ऐसी अवधि हेतु छुट्टी वेतन के अंशदान का भुगतान किया गया है।
- (2) छुट्टी का अधिकार
- (क) छुट्टी का दावा अधिकार के रूप में नहीं किया जा सकता है। किसी भी प्रकार की छुट्टी प्रदान करने हेतु विहित सक्षम प्राधिकारी, बिना कोई कारण बताए देने से मना अथवा रद्द कर सकता है, यदि प्राधिकारी ऐसी कार्यवाही को विश्वविद्यालय के हित में समझता है।
- (ख) जब सक्षम प्राधिकारी ने किसी शिक्षक को पदच्युत करने, सेवा से हटाने अथवा सेवा से अनिवार्य सेवानिवृत्ति करने का निश्चय कर लिया है तो ऐसे शिक्षक को कोई छुट्टी स्वीकृत नहीं की जाएगी और जब कोई शिक्षक निलंबनाधीन है तो भी कोई छुट्टी नहीं स्वीकार की जाएगी।

(3) छुट्टी पर सेवा से अनुपस्थित रहने की अधिकतम अवधि :—

- (क) पांच वर्ष से अधिक की सतत अवधि हेतु किसी प्रकार की छुट्टी किसी शिक्षक को नहीं दी जाएगी।
- (ख) जब कोई शिक्षक पांच वर्षों की सतत अवधि हेतु छुट्टी पर रहने के बाद सेवा में पुनः नहीं आता है अथवा जहां कोई शिक्षक अपनी छुट्टी की समाप्ति के बाद कार्य से अनुपस्थित रहता है अन्यथा कि विदेश में कार्य हेतु अथवा निलंबन के कारण, किसी अवधि के लिए, जिसे उसे स्वीकृत छुट्टी की अवधि सहित पांच वर्ष से अधिक होती है तो वह जब तक मामले की आपवादिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, प्रबंध बोर्ड अन्यथा निश्चित न करे उसे निर्धारित प्रक्रिया अपना कर सेवा से हटा दिया जाएगा।
- (4) छुट्टी हेतु आवेदन
छुट्टी हेतु आवेदन हमेशा अग्रिम रूप में दिया जाएगा और मनाने से पहले संभव कारणों सहित, सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति प्राप्त कर ली जाए सिवाय आपात परिस्थिति में और संतोषजनक कारणों हेतु।
- टिप्पणी : संकाय सदस्य बिना सक्षम प्राधिकारी को सूचित किए मुख्यालय नहीं छोड़ेंगे अथवा प्राधिकारी द्वारा छुट्टी की स्वीकृति तक छुट्टी नहीं मनाएंगे।
- (5) छुट्टी का प्रारंभ और रद्दीकरण
- (क) छुट्टी मूलतः उस तारीख से मानी जाएगी जब से उसे वास्तव में मनाया गया है और उस दिन समाप्त होती है, जब शिक्षक कार्य पर वापस आता है।
- (ख) परिवार और अन्य मान्यता प्राप्त छुट्टियों को छुट्टी के आगे अथवा पीछे स्वीकृत हेतु सक्षम प्राधिकारी की अनुमति से जोड़ा जा सकता है। दीर्घावकाश अध्यादेश 5, 8 और 14 के प्रावधानों की शर्त पर छुट्टी के साथ जोड़ा जा सकता है।
- (6) छुट्टी समाप्ति के पहले कार्य का पुनर्ग्रहण
- (क) छुट्टी पर गया कोई शिक्षक उसे स्वीकृत की गई छुट्टी की अवधि की समाप्ति से पहले कार्य पर वापस लौट सकता है, यदि स्वीकृत छुट्टी करने वाले प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा करने की अनुमति दी जाती है।
- (ख) ऊपर (क) में किसी बात के होते हुए भी, कोई शिक्षक जो सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी पर है उसे सेवानिवृत्ति और कार्य पर वापस आने की अनुमति हेतु उसका आवेदन वापस लेने से मना किया जाएगा, इस शर्त पर कि प्रबंध बोर्ड की राय हो।
- (7) चिकित्सा आधार पर छुट्टी के साथ चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना :
कोई शिक्षक जो चिकित्सीय आधार पर छुट्टी आवेदन करता है उसे विश्वविद्यालय के अधिकृत चिकित्सा

अधिकारी का अथवा जहां चिकित्सा अधिकारी की नियुक्ति नहीं की गई है वहां किसी पंजीकृत चिकित्सक का चिकित्सा प्रमाण पत्र अपने आवेदन के साथ लगाना होगा। फिर भी छुट्टी स्वीकृत करने का सक्षम प्राधिकारी आवेदक को चिकित्सा परिषद के समक्ष उपस्थित होने को कह सकता है। चिकित्सा प्रमाण पत्र के आधार पर छुट्टी अथवा छुट्टी का विस्तार उस तिथि से आगे नहीं स्वीकृत किया जाएगा जिस तिथि से कोई शिक्षक चिकित्सा अधिकारी अथवा परिषद द्वारा आगे सेवा हेतु स्थायी रूप से अक्षम घोषित कर दिया जाता है।

- (8) चिकित्सा आधार पर छुट्टी से वापस होने पर कार्य पुनर्ग्रहण करना :

कोई शिक्षक जिसे छुट्टी (आकस्मिक छुट्टी के अतिरिक्त) चिकित्सा आधार पर स्वीकृत की गई है उसे ठीक होने का चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए बिना कार्य पर वापस आने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

- (9) छुट्टी के दौरान रोजगार :

छुट्टी पर गया कोई शिक्षक, विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी तरह के व्यापार अथवा व्यावसाय अथवा किसी गैर सरकारी शिक्षण अथवा अन्य कार्य जिससे कोई परिलब्धि अथवा मानदेय जुड़ा हुआ हो, नहीं करेगा। परन्तु यह प्रतिबंध किसी विश्वविद्यालय, लोक सेवा आयोग, शिक्षा परिषद अथवा ऐसे निकायों संस्थाओं अथवा कोई साहित्यिक कार्य अथवा प्रकाशन अथवा रेडियो अथवा विस्तार भाषणों अथवा कुलपति की अनुमति से किसी अन्य शैक्षिक कार्य के संबंध में किए गये किसी कार्य पर लागू नहीं होगा। कोई शिक्षक, जिसे छुट्टी के दौरान कोई रोजगार लेने की अनुमति दी गई है, का छुट्टी वेतन प्रबंध बोर्ड द्वारा निर्धारित किए गए प्रतिबंधों की शर्त पर होगा।

- (10) बिना छुट्टी अनुपस्थिति अथवा छुट्टी से अधिक रुकना: कोई शिक्षक जो उसे स्वीकृति छुट्टी की समाप्ति के बाद बिना छुट्टी के स्वयं को अनुपस्थित रखता है अथवा बिना छुट्टी के अनुपस्थित रहता है तो वह इस प्रकार की अनुपस्थिति की अवधि हेतु किसी छुट्टी भत्ते अथवा वेतन का पात्र नहीं होगा। जब तक कि छुट्टी स्वीकृति हेतु विहित प्राधिकारी द्वारा उसकी छुट्टी बढ़ाई नहीं जाती, ऐसी अवधि बिना वेतन छुट्टी के रूप में उसके छुट्टी खाते में चढ़ाई जायेगी। कर्तव्य से जानबूझकर हुई अनुपस्थिति कदाचार के रूप में मानी जाएगी।

- (11) सेवानिवृत्ति की तिथि के बाहर छुट्टी:

(क) किसी शिक्षक के अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्ति की तिथि से बाहर कोई छुट्टी नहीं स्वीकृत की जायेगी। बशर्ते कि यदि अधिवापिता पर सेवानिवृत्ति की तिथि से पहले अपर्याप्त समय हो। किसी शिक्षक के विश्वविद्यालय के हित में उसे देय किसी छुट्टी के पूर्ण भाग अथवा किसी भाग को देने से

मना कर दिया गया हो और जिसे उसने सेवानिवृत्ति छुट्टी के रूप में लेने का आवेदन दिया हो तो उसे अधिवापिता की तिथि के बाद अधिकतम 120 दिनों की शर्त पर अर्जित छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है। यह सीमा 180 दिनों तक बढ़ाई जा सकती है, यदि पूरी छुट्टी अथवा उसका कोई भाग भारत के बाहर बिताया गया हो। बशर्ते कि जब इस अध्यादेश के अन्तर्गत 120 दिनों से अधिक की छुट्टी स्वीकृति की जाती है तो भारत में बिताई गई ऐसी अवधि का कुल योग 120 दिनों से अधिक नहीं होगा। जिस तिथि से सेवानिवृत्ति छुट्टी शुरू होना था और सेवानिवृत्ति की तिथि के मध्य उसे स्वीकृत की गई छुट्टी सहित, इस प्रकार स्वीकृत की गई छुट्टी, वास्तव में मना की गई सेवानिवृत्ति छुट्टी की संख्या से अधिक नहीं होगी, अर्धवेतन छुट्टी यदि कोई है, सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी के रूप में आवेदित और विश्वविद्यालय की सेवा की अनिवार्यता के कारण अस्वीकृत कर दी गई हो तो उसे अर्जित छुट्टी में अदला बदली उतने दिन तक की जा सकती है जो ऐसी छुट्टी सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी की तिथि से शुरू होने और सेवानिवृत्ति की तिथि के मध्य तक जितनी छुट्टी अर्जित की गई है।

- (ख) आगे यह शर्त है कि कोई शिक्षक :—

- (i) जो निलंबन के अधीन रखने के बाद अधिवापिता पर उसकी सेवानिवृत्ति की तिथि से पहले 120 अथवा 180 दिनों जैसा भी मामला हो, के अंदर बहाल किया गया हो और सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी का आवेदन देने से निलंबनाधीन रहने के कारण मनाही रही हो उसे जितने दिन की छुट्टी लेने पर प्रतिबंध था। अधिकतम 120 अथवा 180 दिन, जैसा भी मामला हो कि शर्त पर बहाली की तिथि और सेवानिवृत्ति की तिथि के बीच की अवधि कम करके उतनी मनाने की अनुमति दी जा सकती है।
- (ii) निलंबनाधीन रहते हुए जो अधिवापिता की आयु पूर्ण कर ले और सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी हेतु आवेदन देने से इस प्रकार रोका गया हो, को उसके खाते में जमा, अधिकतम 120 दिनों अथवा 180 दिनों, जैसा भी मामला हो, की शर्त पर कार्यवाही समाप्त करने के बाद, जैसे कि इसे मना किया गया हो, मनाने की अनुमति दी जा सकती है, यदि बहाली का आदेश करने में सक्षम प्राधिकारी की राय में उसे पूर्णतः दोषमुक्त कर दिया गया है तथा निलंबन पूर्णतः अन्यायोचित था।

आगे शर्त है कि कोई शिक्षक जिसकी सेवाएं विश्वविद्यालय के हित में अधिवापिता के बाद भी बढ़ाई जा चुकी है तो छुट्टी निम्न प्रकार स्वीकृत की जा सकती है :—

विस्तार की अवधि के दौरान ऐसे विस्तार की अवधि के संबंध में देय कोई छुट्टी और आवश्यक सीमा के अन्तर्गत अर्जित छुट्टी जो कि उसे ऊपर उपधारा (क) के अधीन स्वीकृत कर दी गयी होती यदि वह अधिवाषिर्ता की तिथि को सेवानिवृत्ति से गया होता।

स्पष्टीकरण :

विस्तार की अवधि के दौरान जो एकत्र हो सकती है उसे अर्जित छुट्टी की मात्रा निर्धारित करने में उपधारा (क) के अन्तर्गत देय छुट्टी, यदि कोई है, को भी जोड़ा जाएगा।

- (i) विस्तार की अवधि की समाप्ति के उपरान्त :—
- (क) यदि वह अधिवाषिर्ता की तिथि को सेवानिवृत्त हो गया होता तो ऊपर उपधारा (क) के अधीन जो अर्जित छुट्टी उसे स्वीकृत की गई होती उसमें से विस्तार की अवधि के दौरान मनाई गई छुट्टियों के दिनों को घटा कर, और
- (ख) विस्तार की अवधि के दौरान अर्जित की गई छुट्टी और उसके कर्तव्यों की अंतिम समाप्ति की तिथि से पर्याप्त समय पहले औपचारिक रूप से सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी का आवेदन दिया हो और विश्वविद्यालय के हित में अस्वीकृत कर दी गई हो।

टिप्पणी : कोई शिक्षक जो अस्वीकृत की गई छुट्टी पूरी अथवा उसका कोई भाग अपनी अधिवाषिर्ता की तिथि के तुरंत बाद अथवा सेवा के विस्तार की समाप्ति पर लेता है तो पेंशन संबंधी, अंशदायी भविष्य निधि लाभों और धारणाधिकार के अलावा उद्देश्यों के लिए उसे, अस्वीकृत छुट्टी की समाप्ति तक सेवा में माना जाएगा। वह इस प्रकार की छुट्टी की समाप्ति की तिथि से सेवानिवृत्त होगा और अधिवाषिर्ता (अथवा यदि सेवा का कोई विस्तार दिया गया है तो ऐसी कोई बाद की तिथि) की तिथि को उसे देय सभी पेंशन संबंधी लाभों का पात्र होगा।

- (12) एक तरह की छुट्टी का दूसरे में परिवर्तन :
- (क) संबंधित शिक्षक के अनुरोध पर, विश्वविद्यालय, असाधारण छुट्टी सहित किसी प्रकार की छुट्टी को जो छुट्टी के मूल रूप से लेते समय भी उसे देय हो, पूर्व व्यापि प्रभाव से दूसरी तरह की छुट्टी में बदल सकता है, परन्तु शिक्षक इस तरह का परिवर्तन करने का दावा अधिकार के रूप में नहीं कर सकता।
- (ख) यदि एक प्रकार की छुट्टी को दूसरे में परिवर्तित किया जाता है तो छुट्टी वेतन की धनराशि और यथा देय भत्तों की पुनः गणना की जाएगी और छुट्टी वेतन और भत्तों की बकाया धनराशि का जैसा भी मामला हो, भुगतान किया जाएगा अथवा अधिक आहरित धनराशि की वसूली की जाएगी।

- (13) छुट्टी के दौरान वेतन वृद्धि:

यदि आकस्मिक छुट्टी विशेष आकस्मिक छुट्टी, कार्य छुट्टी, अध्ययन छुट्टी अथवा विश्राम छुट्टी के अलावा किसी छुट्टी के दौरान वेतन की वेतन वृद्धि आती है, उन मामलों के अलावा जिनमें छुट्टी वेतन वृद्धि हेतु नहीं गिनी जाती, उसकी वेतनवृद्धि की सामान्य तिथि से बिना किसी पूर्वाग्रह के शिक्षक के कार्य पर वापस आ जाने की तिथि से वेतन का बढ़ाया जाना प्रभावी किया जाएगा।

- (14) छुट्टी वर्ष:

इन अध्यादेशों के उद्देश्यों के लिए जब तक कि अन्यथा वर्णित न हो, वर्ष का अर्थ शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से शैक्षणिक सत्र के अंत तक चलने वाले शैक्षणिक वर्ष से है।

22. छुट्टी स्वीकृत करने हेतु विहित प्राधिकारी:—

नीचे सारिणी के कालम (2) में उल्लिखित प्राधिकारी कालम (3) में दर्शाई गई सीमा तक छुट्टी स्वीकृत करने हेतु अधिकृत है इन सीमाओं से अधिक छुट्टी स्वीकृति के मामले अथवा नीचे उल्लिखित न की गई छुट्टी, प्रबंध बोर्ड को प्रस्तुत की जाएगी। छुट्टी स्वीकृत करने से पहले स्वीकृति प्राधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि आवेदित छुट्टी देय है और संबंधित शिक्षक के खाते में उपलब्ध है—

क्र. सं.	छुट्टी के प्रकार	स्वीकृति प्राधिकारी	सीमा
1	2	3	4
(i)	आकस्मिक/विशेष आकस्मिक छुट्टी		
	(क) विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष	कुलपति	पूर्ण
	(ख) विभागाध्यक्ष/केन्द्र अध्यक्ष	विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष	पूर्ण
	(ग) अन्य शिक्षक	अध्यक्ष केन्द्र/विभाग	पूर्ण
(ii)	कार्य छुट्टी विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष अन्य शिक्षक	कुलपति संकायाध्यक्ष कुलपति	पूर्ण 10 दिन तक 10 दिन से अधिक
(iii)	अर्जित छुट्टी/अर्धवेतन छुट्टी/परिवर्तित छुट्टी एवं प्रसूति छुट्टी		
	(क) विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष	कुलपति	पूर्ण

1	2	3	4
	(ख) अध्यक्ष केन्द्र/ विभाग	विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष कुलपति	90 दिन तक 90 दिन से अधिक
	(ग) अन्य शिक्षक	विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष	पूर्ण
(iv) असाधारण छुट्टी			
	(क) विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष	कुलपति प्रबंध बोर्ड	90 दिनों तक पूर्ण
	(ख) अन्य शिक्षक	विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष कुलपति प्रबंध बोर्ड	30 दिन तक 90 दिन तक पूर्ण

23. छुट्टी वेतन:—

- (1) किसी शिक्षक को स्वीकृत आकस्मिक छुट्टी अथवा विशेष आकस्मिक छुट्टी अनुपस्थित के रूप में नहीं मानी जाती और उसका वेतन रोका नहीं जाता है। कार्य छुट्टी, अध्ययन छुट्टी और विश्राम छुट्टी के दौरान शिक्षक वेतन पाएगा।
- (2) अर्जित अवकाश पर गया शिक्षक छुट्टी पर जाने से तुरंत पहले आहरित किए जा रहे वेतन के बराबर छुट्टी वेतन का पात्र है।
- (3) परिवर्तित छुट्टी पर गया शिक्षक उपधारा 23 (2) के अन्तर्गत देय धनराशि के बराबर छुट्टी वेतन का पात्र है।
- (4) अर्धवेतन छुट्टी अथवा अदेय छुट्टी पर गया शिक्षक उपधारा 23 (2) के अन्तर्गत निर्दिष्ट छुट्टी वेतन की आधे धनराशि का पात्र है।
- (5) असाधारण छुट्टी पर गया कोई शिक्षक किसी छुट्टी वेतन का पात्र नहीं होगा।
- (6) विशेष अशक्तता छुट्टी पर गया शिक्षक छुट्टी वेतन का पात्र है।
- (7) प्रसूति छुट्टी अथवा संगरोध छुट्टी पर गया कोई शिक्षक छुट्टी पर जाने से पहले के वेतन के बराबर वेतन पाने का पात्र है।
- (8) छुट्टी में मंहगाई, मकान किराया और नगर प्रतिपूर्ति भत्तों का भुगतान, उन भत्तों के भुगतान संबंधी नियमों के प्रावधानों द्वारा शासित होंगे।
- (9) कोई शिक्षक जिसे अध्यादेश 21 (ii) के अन्तर्गत यथा निर्दिष्ट अनिवार्य सेवानिवृत्ति अथवा सेवा छोड़ने जैसा भी मामला हो की तिथि से अधिक छुट्टी स्वीकृत की गई है, वह छुट्टी के दौरान पेंशन की धनराशि और अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के समकक्ष पेंशन संबंधी लाभों की धनराशि कम करके, इस अध्यादेश के अन्तर्गत यथादेय छुट्टी वेतन का पात्र होगा।
- (10) जहां ऐसी छुट्टी के दौरान, ऐसा शिक्षक पुनर्नियुक्ति किया जाता है तो छुट्टी वेतन, तब छुट्टी वेतन अर्ध वेतन छुट्टी पर देय राशि तक प्रतिबंधित रहेगा और पेंशन की राशि और अन्य सेवानिवृत्त लाभों के समकक्ष पेंशन भी कम की

जाएगी। बशर्ते कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों को यह विकल्प खुला होगा कि वे छुट्टी न लेकर पूर्ण पेंशन का लाभ ले सकते हैं।

यदि पुनर्नियुक्ति के दौरान उसे उसके द्वारा पुनर्नियुक्ति की अवधि में अर्जित की गई छुट्टी स्वीकृत की जाती है तो पेंशन और अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के समकक्ष पेंशन को निकालकर उसके द्वारा आहरित वेतन पर छुट्टी वेतन आधारित रहेगा।

24. सेवानिवृत्ति अथवा सेवा छोड़ने की तिथि के बाद छुट्टी के बदले नकद भुगतान:—

- (i) इनके बाद किसी शिक्षक को कोई छुट्टी नहीं दी जाएगी :
 - (क) उसकी सेवानिवृत्ति की तिथि, अथवा
 - (ख) उसके कर्तव्यों की अंतिम समाप्ति की तिथि, अथवा
 - (ग) विश्वविद्यालय को नोटिस देकर वह सेवानिवृत्त होता है उस तिथि अथवा उसे नोटिस देकर विश्वविद्यालय द्वारा अथवा सेवा के नियम और शर्तों के अनुसार ऐसी नोटिस के बजाय वेतन और भत्ते देकर सेवानिवृत्त कर दिये जाने की तिथि अथवा
 - (घ) सेवा से उसके त्यागपत्र की तिथि
- (ii) अधिवार्षिता पर सेवानिवृत्ति :

जहां कोई शिक्षक उसकी सेवा शासित नियम एवं शर्तों के अन्तर्गत सेवानिवृत्ति हेतु निर्धारित की गई सामान्य आयु प्राप्त करके सेवानिवृत्ति होता है, सक्षम प्राधिकारी अपनी ओर से शिक्षक की सेवानिवृत्ति की तिथि को उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टी यदि शेष है, तो अर्जित छुट्टी हेतु अधिकतम 300 दिनों की शर्त पर छुट्टी वेतन के बराबर नकद धनराशि प्रदान करने का आदेश जारी कर सकता है।
- (iii) निलंबन के अन्तर्गत सेवानिवृत्ति :

कोई शिक्षक जब निलंबनाधीन है, सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त करने पर सेवा से सेवानिवृत्त होता है, वह उसके विरुद्ध की गई कार्यवाहियों का निर्णय होने पर, यदि सेवा में उसे बहाल करने में सक्षम अधिकारी यह निर्णय करता है कि निलंबन पूर्णतः अन्यायोचित था, उसकी सेवानिवृत्ति तिथि को उसके खाते में जो जमा है उस अर्जित छुट्टी के बराबर नकद के लाभ हेतु पात्र होगा।
- (iv) अधिवार्षिता के पहले सेवानिवृत्ति :

धारा 24 (1) (ग) में वर्णित ढंग से कोई शिक्षक सेवा से निवृत्त होता है अथवा सेवा से सेवानिवृत्त कर दिया जाता है, छुट्टी स्वीकृत करने वाले सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपनी ओर से उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टी अधिकतम 300 दिनों की शर्त पर और उसके खाते में जमा अर्धवेतन छुट्टी के संबंध में छुट्टी वेतन के बराबर नकद राशि स्वीकृत की जा सकती है बशर्ते कि यह अवधि वह जिस तिथि को इस प्रकार सेवानिवृत्त होता है अथवा सेवानिवृत्त कर दिया जाता है और उसकी सेवा के नियम और शर्तों के अंतर्गत सेवानिवृत्ति हेतु निर्धारित उम्र प्राप्त करने के बाद सामान्य रूप से जिस तिथि को सेवानिवृत्त हो गया होता, के मध्य की

अवधि से अधिक न हो। नकद समकक्ष अर्जित छुट्टी हेतु अनुमन्य छुट्टी वेतन के बराबर होगा और/अथवा अर्धवेतन छुट्टी हेतु यथादेय छुट्टी वेतन के बराबर + पहले 300 दिनों हेतु छुट्टी वेतन पर स्वीकार्य मंहगाई भत्ता विश्वविद्यालय कर्मचारी की सेवानिवृत्ति की अथवा सेवानिवृत्त किए जाने की तिथि को लागू दर पर देय होगा। अन्य सेवानिवृत्ति लाभों की पेंशन अथवा पेंशन समकक्ष और पेंशन पर तदर्थ राहत/ग्रेडेड राहत, जिसके लिए नकद समकक्ष देय है, को अर्धवेतन छुट्टी की अवधि हेतु भुगतान दी जा रही वेतन छुट्टी से काटा जाएगा। इस प्रकार गणना की गई धनराशि का भुगतान एक मुश्त एक बारगी निपटान के रूप में किया जायेगा। मकान किराया भत्ता अथवा नगर प्रतिकर भत्ता भुगतान नहीं किया जाएगा।

बशर्ते कि यदि अर्धवेतन छुट्टी हिस्सा हेतु छुट्टी वेतन पेंशन और अन्य पेंशन संबंधी लाभों से कम आता है तो अर्धवेतन छुट्टी के समकक्ष नकद की स्वीकृति नहीं दी जाएगी।

आगे यह भी शर्त है कि कोई शिक्षक जिसे विश्वविद्यालय द्वारा नोटिस के विरुद्ध वेतन और भत्ते देकर, सेवानिवृत्त कर दिया जाता है, को छुट्टी वेतन के समकक्ष नकद अनुमत किया जायेगा उस अवधि के छोड़कर जिसमें नोटिस के विरुद्ध वेतन और भत्ते अनुमत किये गये थे।

(v) त्यागपत्र/पदच्युति/पुनर्नियोजन

(क) पदच्युति

जब किसी शिक्षक की सेवाएं नोटिस देकर अथवा नोटिस के बजाय वेतन और भत्ते के भुगतान द्वारा अथवा अन्यथा उसकी नियुक्ति के नियम एवं शर्तों के अनुसार, समाप्त कर दी जाती है, तो छुट्टी स्वीकृत करने का सक्षम प्राधिकारी अपनी ओर से उस तिथि को जब वह सेवा में नहीं रहता है, उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टियों, के संबंध में अधिकतम 300 दिनों की शर्त पर, बराबर की नकद धनराशि स्वीकृत कर सकता है।

(ख) त्यागपत्र

यदि कोई शिक्षक सेवा छोड़ देता है तो उसे छुट्टी स्वीकृत करने के सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपनी ओर से, उसकी सेवा समाप्ति की तिथि को उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टी के संबंध में उसके खाते में जमा ऐसी छुट्टी के आधे की सीमा तक अधिकतम 120 दिनों की शर्त पर समान नकद धनराशि स्वीकृत की जा सकती है।

(vi) सेवानिवृत्ति के बाद पुनर्नियोजन :

सेवानिवृत्ति पश्चात् कोई शिक्षक जिसे पुनर्नियोजित किया गया है, उसका पुनर्नियोजन समाप्त होने पर छुट्टी स्वीकृत करने हेतु सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपनी ओर से, उसकी सेवा समाप्ति अथवा पुनर्नियोजन की तिथि को उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टी के संबंध में अनुमत किये गये नकदीकरण को सम्मिलित करते हुए अधिकतम 300 दिन की समान नकद धनराशि स्वीकृत की जा सकती है।

(vii) संविदा पर नियुक्त शिक्षक :

संविदा पर नियुक्त शिक्षक को अपनी ओर से ही संविदा की समाप्ति की तिथि को उसके खाते में जमा अर्जित छुट्टी का निम्नलिखित सीमाओं की शर्त पर, नकदीकरण अनुमत किया जाएगा:—

संविदा की अवधि	संविदा समाप्ति के समय अधिकतम अर्जित छुट्टी जिसके लिए नकदीकरण अनुमत किया जाएगा
दो वर्ष से कम	कोई नहीं
दो वर्ष से अधिक पांच वर्ष तक	30 दिनों का
5 वर्ष से अधिक 10 वर्ष तक	60 दिनों का
10 वर्ष से अधिक 15 वर्ष तक	90 दिनों का
15 वर्ष से अधिक 20 वर्ष तक	120 दिनों का
20 वर्ष से अधिक 25 वर्ष तक	150 दिनों का
25 वर्ष से अधिक	180 दिनों का

(ख) फिर भी, उपर्युक्त के अनुसार अर्जित छुट्टी का नकदीकरण, इस शर्त पर किया जायेगा कि कुल अर्जित अवकाश जिस हेतु नकदीकरण अनुमत किया जायेगा वह शासकीय स्वायत्तशासी उपक्रम अथवा उपक्रमों अथवा सार्वजनिक उपक्रम/उपक्रमों में पूर्व नियुक्ति की अवधि में अर्जित अवकाश अथवा पूर्ण वेतन अवकाश हेतु अनुमत नकदीकरण यदि कोई हो तो के साथ 300 दिन से अधिक नहीं होगा।

(viii) छुट्टी के समकक्ष नकद राशि की गणना :—

धारा-24 के अन्तर्गत समकक्ष नकद की गणना निम्न प्रकार से की जाएगी और एक समय के निपटान के रूप में एक मुश्त भुगतान की जाएगी। कोई मकान किराया भत्ता और नगर प्रतिपूर्ति भत्ता देय नहीं होगा :—

नकद समकक्ष	सेवानिवृत्ति की तिथि को देय वेतन + उस तिथि को देय मंहगाई भत्ता	X	सेवानिवृत्ति की तिथि को उसके खाते में जमा न ली गई अर्जित छुट्टी के दिनों की संख्या, अधिकतम 240 दिनों की शर्त पर
30			

टिप्पण : स्थाई तौर पर अशक्त हो जाने पर छुट्टी का नकदीकरण :

(क) स्थाई अशक्तता

कोई शिक्षक जिसे चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा आगे सेवा हेतु पूर्णतः और स्थायी रूप से अशक्त घोषित कर दिया गया है, छुट्टी स्वीकृतदाता सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपनी ओर से, सेवा से उसके आयोग्य होने की तिथि को बकाया और देय अर्जित छुट्टी के संबंध में छुट्टी वेतन का नकदीकरण स्वीकृत किया जाएगा बशर्ते कि छुट्टी की अवधि जिसके लिए उसे नकदीकरण प्रदान किया जा रहा है, वह उसकी सेवा के नियम और शर्तों के अधीन सेवानिवृत्ति हेतु निर्धारित

आयु प्राप्त करने के उपरान्त सामान्य हालत में जिस तिथि को सेवानिवृत्त होता उस तिथि से आगे न बढ़ता हो। इस तरह भुगतान योग्य नकदीकरण धनराशि जैसा धारा अपपद्ध अथवा अध्यादेश 24 के अन्तर्गत गणना की जाएगी, छुट्टी वेतन के बराबर होगी।

(ख) पदच्युति/सेवा से हटाना

जब कोई शिक्षक सेवा से पदच्युत अथवा बरखास्त कर दिया जाता है तो वह छुट्टी नकदीकरण हेतु यात्र नहीं होगा।

(ग) सेवा करते हुए किसी शिक्षक की मृत्यु होने पर उसकी छुट्टी किसी शिक्षक की कार्य पर ही मृत्यु हो जाने के मामले में यदि वह अर्जित छुट्टी पर गया होता, उस स्थिति में मृतक शिक्षक को जितना छुट्टी वेतन के समकक्ष नकद मिलता, मृत्यु के लिए भी, मृत्यु के तुरन्त बाद की तिथि को देय एवं स्वीकार्य अधिकतम 300 दिनों हेतु छुट्टी वेतन की शर्त पर परिवार को भुगतान किया जाएगा।

आगे ऐसा नकद समकक्ष मृत्यु व सेवानिवृत्ति, ग्रेच्युटी की पेंशन के कारण कमी की शर्त पर नहीं होगा।

टिप्पणी : 1 उपर्युक्त प्रावधान प्रनियोजित पेंशनरों के मामलों में भी लागू है। फिर भी उनके मामलों में मृत्यु व सेवानिवृत्ति ग्रेच्युटी की पेंशन समकक्ष के कारण पुनर्नियोजन के दौरान अर्जित की गई ग्रेच्युटी छुट्टी के संबंध में नकद समकक्ष से कोई कटौती न की जाये। जिसकी पुनर्नियोजन की अवधि के दौरान उसके द्वारा आहरित वेतन के आधार पर गणना की जाएगी।

टिप्पणी : 2 अंशदायी भविष्य निधि नियमों द्वारा शासित शिक्षकों के मामलों में, अंशदायी भविष्य निधि के विश्वविद्यालय अंशदान के कारण छुट्टी वेतन के नकद समकक्ष से कोई कटौती नहीं की जाएगी।

25. परिशिष्ट-VI

एक वर्ष की अवधि से अधिक अध्ययन छुट्टी स्वीकृत किए जाने हेतु संकाय सदस्यों द्वारा भरा जाने वाला बंध पत्र

(कृपया नियम 10 (XV) देखें)

यह करार आज दिनांक ————— माह ————— वर्ष ————— को जो बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, अधिनियम, 1944 (1944 का 53) के अधीन एक कारपोरेट उपक्रम के रूप में स्थापित बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के बीच में (जिसे यहां आगे विश्वविद्यालय कहा गया है) एक पक्ष के रूप में और

(i)
निवासी —————

यहां आगे वचनदाता कहा गया है दूसरे पक्ष के रूप में और

(ii)
निवासी —————
और
(iii)
निवासी —————

और; पपपद्ध

(यहां आगे ;पपद्ध संयुक्त रूप से प्रतिभूतीसरे पक्ष के रूप में)

जबकि वचनदाता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में नियोजित है और जबकि वचनदाता ने निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए अध्ययन छुट्टी के लिए आवेदन दिया है।

और जबकि विश्वविद्यालय, इस शर्त पर कि अध्ययन पूर्ण होने के पश्चात्, वचनदाता विश्वविद्यालय में पुनः कार्यग्रहण करेंगे और 2 वर्षों की न्यूनतम अवधि तक विश्वविद्यालय की सेवा करेंगे, अध्ययन छुट्टी प्रदान करने पर सहमत हो गया है। वचनदाता इस शर्त से सहमत है और जमानतियों ने भी विश्वविद्यालय को आश्वस्त किया है कि वचनदाता इन जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक निभाएगा।

1. कि वचनदाता यह वचन देता है कि पूर्वोक्त अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात्, वह विश्वविद्यालय में पुनः कार्य पर आएगा और कम से कम 2 वर्षों हेतु विश्वविद्यालय के अधीन सेवा करेगा।
2. कि वचनदाता अध्ययन छुट्टी की अवधि के अंदर अध्ययन पूर्ण करने में विफल रहता है अथवा अध्ययन छुट्टी की समाप्ति पर विश्वविद्यालय की सेवा में पुनः योगदान देने में विफल रहता है अथवा विश्वविद्यालय की सेवा में वापस आने के बाद सेवा की सहमत अवधि की समाप्ति के पहले किसी भी समय विश्वविद्यालय की सेवा से त्याग पत्र देता है अथवा पूर्वोक्त अवधि के अंदर विश्वविद्यालय द्वारा सेवा से पदच्युत अथवा बरखास्त कर दिया जाता है, के मामलों में वचनदाता और जमानतदाता विश्वविद्यालय को तुरन्त भुगतान करेंगे अथवा विश्वविद्यालय द्वारा जैसा निर्देश दिया जाए रु. की धनराशि निर्णीत हर्जाने के रूप में देंगे और विश्वविद्यालय से वचनदाता द्वारा प्राप्त अग्रिम वापस करेंगे और अध्ययन छुट्टी स्वीकृत करने के उपरान्त वचनदाता पर विश्वविद्यालय द्वारा किये गये सभी व्ययों का भुगतान करेंगे, बशर्ते कि यदि वचनदाता अध्ययन छुट्टी से वापस होने के बाद 18 माह की सेवा पूरी कर लेता है तो तब जमानतदारों और वचनदाता को निर्णित हर्जाने की राशि का आधा भुगतान करना होगा।
3. हि वचनदाता और जमानतदार ऊपर धारा 2 के अनुसार देय धनराशि पर 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से व्याज का भुगतान करेंगे।
4. कि वचनदाता और जमानतदारों का विश्वविद्यालय को देय धनराशि के भुगतान करने का दायित्व संयुक्त और कई हैं और विश्वविद्यालय बकाया धनराशि सभी अथवा उनके किसी एक से वसूल करने को सक्षम होगा।

5. कि यहां ऊपर दी गई एक स्थायी जमानत है और दिए जा रहे समय अथवा किसी सहिष्णुता, विश्वविद्यालय अथवा इसके द्वारा अधिकृत किसी व्यक्ति के कृताकृत अथवा वचनदाता अथवा किसी जमानतदार को विश्वविद्यालय द्वारा दर्शाया गया कोई अन्य अनुग्रह अथवा रियायत से यह कम अथवा मुक्त नहीं होगी और विश्वविद्यालय सभी अथवा उनके किसी से बकाया धनराशि की वसूली करने में सक्षम होगा।
6. कि विश्वविद्यालय अपने विवेक से वचनदाता का अध्ययन छुट्टी का समय जमानतदारों बिना कोई सूचना दिए समय-समय पर बढ़ा सकता है और जमानतदार इन वर्तमान नियमों के अन्तर्गत देय धनराशि हेतु सभी मामलों में मूल अवधि के साथ ही साथ बढ़ी हुई अवधि के दौरान के भी उत्तरदायी होंगे।
7. कि यदि विश्वविद्यालय द्वारा कोई धनराशि भारत के बाहर भुगतान की जाती है तो वचनदाता और जमानतदार भुगतान के समय प्रचलित सरकारी विनियम दरों के अनुसार भारतीय मुद्रा में समान धनराशि के भुगतान करने का उत्तरदायी होगा।

गवाहों की उपस्थिति में पक्षों ने यहां अपने हस्ताक्षर किए।

गवाह सं. 1	हस्ताक्षर नाम	हस्ताक्षर
गवाह सं. 2	हस्ताक्षर नाम	वचनदाता
गवाह सं. 1	हस्ताक्षर नाम	जमानत सं. 1 हस्ताक्षर
गवाह सं. 2	हस्ताक्षर नाम	
गवाह सं. 1	हस्ताक्षर नाम	जमानत सं. 1 हस्ताक्षर
गवाह सं. 2	हस्ताक्षर नाम	जमानत सं. 2 हस्ताक्षर
गवाह सं. 2	हस्ताक्षर नाम	विश्वविद्यालय का अधिकारी

अध्याय-XXI

परास्नातक उपाधि कार्यक्रम

[परिनियम 18 (3) (क) के साथ खंड 27 (ख) (ग)]

1. विश्वविद्यालय में परास्नातक उपाधि कार्यक्रम अध्ययन के पूर्णकालिक पाठ्यक्रम हैं जो दो वर्षों में चार शैक्षणिक सत्रों की अवधि के हैं। इन पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय द्वारा दिए जाने वाले अन्य किसी पूर्णकालिक पाठ्यक्रम अथवा किसी अंशकालिक परास्नातक पाठ्यक्रम के साथ मिलाया नहीं जा सकता है, सिवाय उनके जिन्हें

विश्वविद्यालय द्वारा सामान्यतः या विशेष रूप से विश्वविद्यालय के परास्नातक छात्रों के लिए परिकल्पित किया गया हो।

2. (क) किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के इच्छुक उम्मीदवार में, समय-समय पर विद्यापीठ बोर्ड द्वारा निर्धारित और विद्या परिषद् द्वारा यथा अनुमोदित की गई विनिर्दिष्ट योग्यताएं अवश्य होनी चाहिए।
- (ख) विभिन्न पाठ्यक्रमों में सामान्यतः प्रवेश प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में केवल प्रथम सेमेस्टर में ही किया जाएगा तब तक किसी पाठ्यक्रम के लिए विद्या परिषद् द्वारा विशेष रूप से निश्चित न किया गया हो।
- (ग) वे उम्मीदवार जिन्होंने त्रिवर्षीय उपाधि कार्यक्रम के अधीन पास अथवा आनर्स/सामान्य अथवा मुख्य में इस विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि ली है, वे ही विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित किए जा रहे पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन देने के पूर्व-अपेक्षाओं संबंधी (यदि कोई हो) विनियमों के प्रावधानों की शर्त पर पात्र होंगे। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु न्यूनतम अर्हक अंक विनियमों के अनुसार होंगे।
- (घ) पाठ्यक्रम में अंतिम प्रवेश संबंधित विभाग की प्रवेश समिति, यदि कोई है, द्वारा ली गई पात्रता परीक्षा में उम्मीदवार के निष्पादन और स्नातक पूर्व पाठ्यक्रम में शैक्षणिक निष्पादन के आधार पर किया जाएगा।
3. (क) विद्यापीठ बोर्ड में सामान्य दिशा निर्देशों की शर्त पर प्रत्येक पाठ्यक्रम में शिक्षण कार्य संबंधित विभागाध्यक्ष के नियंत्रण और मार्ग निर्देशन में होंगे।
बशर्ते कि सिद्धांत पाठ्यक्रम में भाषणों की संख्या सामान्यतः, प्रत्येक एक घंटे की अवधि के 45 से कम नहीं होगी।
- (ख) प्रत्येक छात्र पाठ्यक्रम में उसके कार्य तथा विश्वविद्यालय में उसके सामान्य आचरण के संबंध में विद्यापीठ के नियंत्रण और संबंधित विभाग के अनुशासन के अधीन रहेगा।
- (ग) विद्यापीठ बोर्ड विभाग की संस्तुतियों से गैर संतोषजनक निष्पादन अथवा अनुशासनहीनता के आधार पर किसी छात्र का नाम पाठ्यक्रम से हटाने की संस्तुति दे सकता है।
4. सामान्यतः एक छात्र को चार सत्रों की अवधि में सोलह पाठ्यक्रम/प्रश्न पत्र पूरे करने चाहिए। फिर भी, किसी छात्र को अधिकतम छः सत्रों तक शैक्षणिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनुमति दी जा सकती है।
5. कोई छात्र जो किसी पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों (उत्तीर्ण होने अथवा सत्रोप कार्य और सत्र समाप्ति

परीक्षा में बैठने में विफल होने के कारण) में सफल नहीं हो पाता है वह उन पाठ्यक्रमों को बाद के सत्रों में से किसी एक में जिनमें ऊपर धारा 4 के प्रावधानों के अधीन पाठ्यचर्या कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वह पात्र होगा, में उत्तीर्ण कर सकता है।

बशर्ते कि यदि कोई छात्र द्वितीय सत्र की समाप्ति तक पहले दो सत्रों के आठ पाठ्यक्रमों में से चार से अधिक में आंतरिक मूल्यांकन उत्तीर्ण करने में सफल नहीं होता है अथवा सफल हो जाने पर 4 से अधिक पाठ्यक्रमों में सत्रीय कार्य सहित अपने समग्र निष्पादन से सुधार करना चाहता है, जिस हेतु उसे नियमित कक्षाओं में उपस्थित रहना होगा, वह तीसरे सत्र में आगे जाने का पात्र नहीं होगा और उसे अगले बैच के साथ संबंधित पाठ्यक्रमों में उपस्थित होना होगा अथवा नया प्रवेश लेना होगा और एक नये उम्मीदवार के रूप में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम कार्य करना होगा।

6. (क) प्रत्येक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन सत्रीय कार्य और सत्र समाप्ति परीक्षा में उसके निष्पादन के आधार पर किया जायेगा।

(ख) प्रत्येक पाठ्यक्रम के अधिकतम अंक/जमा विद्यापीठ बोर्ड के द्वारा निर्धारित किए जायेंगे। किसी पाठ्यक्रम में छात्र द्वारा प्राप्त अंकों का निर्धारण करने के उद्देश्य हेतु सत्रीय कार्य और सत्रावसान परीक्षा का मापांक 30 : 70 होगा।

(ग) संबंधित विभाग की संस्तुति पर विद्यापीठ बोर्ड परिषद् द्वारा यथा अनुमोदित किसी सत्र में प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु सत्रीय कार्य की अनुसूची और मूल्यांकन के ढंग की जानकारी प्रत्येक सत्र के आरंभ में सभी छात्रों को दी जायेगी।

7. प्रत्येक सत्र के आरंभ और समाप्ति की तिथियां विद्या परिषद् द्वारा नियत की जाएंगी।

8. (क) परास्नातक उपाधि हेतु अर्हक होने के लिए किसी उम्मीदवार के प्रत्येक पाठ्यक्रम में कम से कम 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड और सभी पाठ्यक्रमों का कुल योग 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड अवश्य अर्जित किए होना चाहिए।

(ख) कोई ऐसा उम्मीदवार जो 40 प्रतिशत अथवा समकक्ष ग्रेड अथवा सभी पाठ्यक्रमों में कुल मिलाकर इसके ऊपर अंक परन्तु 50 प्रतिशत अंक अथवा इसके समकक्ष ग्रेड अर्जित करता है तो उसे अपने निष्पादन में सुधार लाने हेतु किसी पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों को दुबारा से करने और सत्रीय कार्य और परीक्षाओं में सम्मिलित होने की अनुमति दी जा सकती है। पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों को दुबारा से करने हेतु शर्त विनियमों द्वारा निदिष्ट की जाएंगी।

9. सफल उम्मीदवारों को निम्नलिखित वर्गीकरण के अधीन उपाधि प्रदान की जाएगी :—

प्रथम श्रेणी— 60 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक

द्वितीय श्रेणी : 50 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम।

तृतीय श्रेणी : 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक परन्तु 50 प्रतिशत से कम।

10. किसी उम्मीदवार को किसी पाठ्यक्रम के लिए दो से अधिक बार बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी तथा किसी उम्मीदवार को किसी कार्यक्रम में पहली बार उसके प्रवेश लेने के छः सत्रों से अधिक समय तक बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

11. प्रत्येक विषय में उपाधि हेतु अध्ययन का पाठ्यक्रम और परीक्षा योजना संबंधित विभाग के स्नातकोत्तर अध्ययन बोर्ड की संस्तुति पर विद्यापीठ बोर्ड के अनुमोदन के अनुसार होगी।

12. किसी विषय में पाठ्यक्रमों हेतु पाठ्यसूची संबंधित विभाग के अनुमोदन के अनुसार होगी। विभाग ही प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु पुस्तकें और अन्य पाठ्य सामग्री निर्धारित करेगा।

अध्याय-XXII

परास्नातक डिप्लोमा कार्यक्रम

[परिनियम 18 (3) (क) के साथ खंड 27 (ख) (ग)]

1. विश्वविद्यालय में परास्नातक डिप्लोमा कार्यक्रम एक पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है जो एक शैक्षिक सत्र वर्ष में दो शैक्षणिक सत्रों की अवधि का है। इन पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय द्वारा दिए जाने वाले अन्य किसी पूर्णकालिक पाठ्यक्रम अथवा किसी अंशकालिक परास्नातक पाठ्यक्रम के साथ मिलाया नहीं जा सकता है, सिवाय उनके जिन्हें विश्वविद्यालय के परास्नातक छात्रों के लिए परिकल्पित किया गया हो।

2. (क) किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के इच्छुक उम्मीदवार में, समय-समय पर विद्यापीठ बोर्ड द्वारा निर्धारित और विद्या परिषद् द्वारा यथा अनुमोदित की गई विनिर्दिष्ट योग्यताएं अवश्य होनी चाहिए।

(ख) विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश सामान्यतः प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में केवल प्रथम सेमेस्टर में ही किया जाएगा तब तक किसी पाठ्यक्रम के लिए विद्या परिषद् द्वारा विशेष रूप से निश्चित न किया गया हो।

(ग) वे उम्मीदवार जिन्होंने त्रिवर्षीय उपाधि कार्यक्रम के अधीन पास अथवा आनर्स/सामान्य अथवा मुख्य में इस विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य मान्यताप्राप्त

- विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि ली है, वे ही विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित किए जा रहे पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन देने के पूर्वविक्षाओं संबंधी (यदि कोई हो) विनियमों के प्रावधानों की शर्त पर पात्र होंगे। विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु न्यूनतम अर्हक अंक विनियमों के अनुसार होंगे।
- (घ) पाठ्यक्रम में अंतिम प्रवेश संबंधित विभाग की प्रवेश समिति, यदि कोई है, द्वारा ली गई पात्रता परीक्षा में उम्मीदवार के निष्पादन और स्नातक पूर्व पाठ्यक्रम में उसके शैक्षणिक निष्पादन के आधार पर किया जाएगा।
3. (क) विद्यापीठ बोर्ड में सामान्य दिशा निर्देशों की शर्त पर प्रत्येक पाठ्यक्रम में शिक्षण कार्य संबंधित विभागाध्यक्ष के नियंत्रण और निर्देशन में होंगे।
- बशर्ते कि सिद्धांत पाठ्यक्रम में भाषणों की संख्या सामान्यतः, प्रत्येक एक घंटे की अवधि के, 45 से कम नहीं होगी।
- (ग) विद्यापीठ बोर्ड विभाग की संस्तुतियों से गैर संतोषजनक निष्पादन अथवा अनुशासनहीनता के आधार पर किसी छात्र का नाम पाठ्यक्रम से हटाने की संस्तुति दे सकता है।
4. सामान्यतः एक छात्र को दो सत्रों की अवधि में आठ पाठ्यक्रम/प्रश्न पत्र पूरे करने चाहिए। फिर भी, किसी छात्र को अधिकतम चार सत्रों तक शैक्षणिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनुमति दी जा सकती है।
5. कोई छात्र जो किसी पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों (उत्तीर्ण होने अथवा सत्रीय कार्य और सत्र समाप्ति परीक्षा में बैठने में विफल होने के कारण) में सफल नहीं हो पाता है वह उन पाठ्यक्रमों को बाद के सत्रों में से किसी एक भाग में जिनमें ऊपर धारा 4 के प्रावधानों के अधीन पाठ्यचर्या कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वह पात्र होगा, में उत्तीर्ण कर सकता है।
6. (क) प्रत्येक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन सत्रीय कार्य और सत्र समाप्ति परीक्षा में उसके निष्पादन के आधार पर किया जायेगा।
- (ख) प्रत्येक पाठ्यक्रम के अधिकतम अंक/जमा विद्यापीठ बोर्ड के द्वारा निर्धारित किए जायेंगे। किसी पाठ्यक्रम में छात्र द्वारा प्राप्त अंकों का निर्धारण करने के उद्देश्य हेतु सत्रीय कार्य और सत्रावसान परीक्षा का मापांक 1 : 3 होगा।
- (ग) संबंधित विभाग की संस्तुति पर विद्यापीठ बोर्ड द्वारा यथा अनुमोदित किसी सत्र में प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु सत्रीय कार्य की अनुसूची और मूल्यांकन के तरीके प्रत्येक सत्र के आरंभ में सभी छात्रों को जानकारी दी जायेगी।
7. प्रत्येक सत्र के आरंभ और समाप्ति की तिथियां विद्या परिषद् द्वारा नियत की जाएंगी।
8. (क) परास्नातक डिप्लोमा हेतु अर्ह होने के लिए किसी उम्मीदवार के प्रत्येक पाठ्यक्रम में कम से कम 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड और सभी पाठ्यक्रमों का कुल योग 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड अवश्य अर्जित किए होना चाहिए।
- (ख) कोई ऐसा उम्मीदवार जो 40 प्रतिशत अथवा समकक्ष ग्रेड अथवा सभी पाठ्यक्रमों में कुल मिलाकर इसके ऊपर अंक परन्तु 50 प्रतिशत अंक अथवा इसके समकक्ष ग्रेड अर्जित करता है तो उसे अपने निष्पादन में सुधार लाने हेतु किसी पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों को दुबारा से करने और सत्रीय कार्य और परीक्षाओं में सम्मिलित होने की अनुमति दी जा सकती है। पाठ्यक्रम अथवा पाठ्यक्रमों को दुबारा से करने हेतु शर्त विनियमों द्वारा निर्दिष्ट की जाएंगी।
9. सफल उम्मीदवारों को निम्नलिखित वर्गीकरण के अधीन परास्नातक डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा :—
- प्रथम श्रेणी: 60 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक।
- द्वितीय श्रेणी : 50 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम।
- तृतीय श्रेणी : 40 प्रतिशत अंक अथवा समकक्ष ग्रेड सभी परीक्षाओं और सत्रीय कार्य के योग में अथवा अधिक परन्तु 50 प्रतिशत से कम।
10. किसी उम्मीदवार को किसी पाठ्यक्रम के लिए दो से अधिक बार बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी तथा किसी उम्मीदवार को किसी कार्यक्रम में पहली बार उसके प्रवेश लेने के छः सत्रों से अधिक समय तक बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
11. प्रत्येक विषय में उपाधि हेतु अध्ययन का पाठ्यक्रम और परीक्षा योजना संबंधित विभाग के स्नातकोत्तर अध्ययन बोर्ड की संस्तुति पर विद्यापीठ बोर्ड के अनुमोदन के अनुसार होगी।
12. किसी विषय में पाठ्यक्रमों हेतु पाठ्यसूची संबंधित विभाग के अनुमोदन के अनुसार होगी। विभाग ही प्रत्येक पाठ्यक्रम हेतु पुस्तकें और अन्य पाठ्य सामग्री निर्धारित करेगा।

यू. एस. रावत, रजिस्ट्रार

[सं. विज्ञापन -III/IV/असाधा./282/04]

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

Lucknow, the 23rd December, 2004

**FIRST
ACADEMIC ORDINANCES****Instalment I**

Submitted to

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

October, 1996

(Sent on 16-10-1996)

(Approved by the Ministry of Human
Resource Development, Department of
Education, Government of India, *vide*
letter No. F. 8-14/96-Desk (U) (A) dated
28th January, 1997.)**Chapter-I****SCHOOLS OF STUDIES AND DEPARTMENT/
CENTRES**[Secs. 4, 5(xii), 5(xiv) and
Statutes 17 (1) and 17 (5) (a)]**Schools
of Studies**1. The following Schools of Studies shall be
established in the University :

1. School for Ambedkar Studies
2. School for Information Science and Technology
3. School for Environmental Sciences
4. School for Earth Sciences
5. School for Bio-sciences and Technology
6. School for Home Sciences
7. School for Energy Studies and Technology
8. School for Social Sciences
9. School for Management Studies
10. School for Physical Sciences
11. School for Humanities
12. School for Languages and Literature
13. School for Fine Arts
14. School for Performing Arts
15. School for Commerce
16. School for Space Sciences and Technology
17. School for Legal Studies

Other Schools to be established may be
determined later on.**Departments**2. The following departments shall be established
in the University :

1. Department of Library and Information Sciences

2. Department of Information Technology
3. Department of Mass Communication and Journalism
4. Department of Environmental Impact Studies
5. Department of Restoration and Conservation Ecology
6. Department of Applied Geology
7. Department of Geophysics
8. Department of Geochemistry
9. Department of Applied Plant Sciences
10. Department of Applied Animal Sciences
11. Department of Bio-Technology
12. Department of Human Development and Family Studies
13. Department of Home Management
14. Department of Food and Nutrition
15. Department of Clothing and Textile
16. Department of Home Science Extension
17. Department of Renewable Energy
18. Department of Non-renewable Energy
19. Department of Economics
20. Department of Sociology
21. Department of Political Science
22. Department of Social Work
23. Department of Anthropology
24. Department of Law
25. Department of Buddhist Studies
26. Department of Rural Management
27. Department of Electronics and Telecommunications
28. Department of Applied Physics
29. Department of Applied Chemistry
30. Department of Applied Mathematics and Statistics
31. Department of History
32. Department of Education
33. Department of Philosophy
34. Department of Psychology
35. Department of Sanskrit and Pali
36. Department of Hindi
37. Department of English and European Language
38. Department of Urdu
39. Department of Asian Languages
40. Department of Painting
41. Department of Sculpture
42. Department of Muscology
43. Department of Applied Art
44. Department of Music

45. Department of Dance
46. Department of Drama
47. Department of Accountancy and Finance
48. Department of Business Studies
49. Department of Banking
50. Department of Pharmaceutical Sciences
51. Department of Space Sciences
52. Department of Computer Sciences
53. Department of Human Rights
54. Department of Environmental Science
55. Department of Continuing Education and Community Services.

Assignment of Departments to Schools

3. (I) The following Departments shall be assigned to the School for Information Science and Technology :

- (a) Department of Library & Information Science
- (b) Department of Information Technology
- (c) Department of Mass Communication & Journalism
- (d) Department of Computer Science
- (e) Department of Continuing Education and Community Services
- (f) Such other Departments as may be created in future.

(II) The following Departments shall be assigned to the School for Environmental Sciences :

- (a) Department of Environmental Impact Studies
- (b) Department of Restoration and Conservation Ecology
- (c) Department of Environmental Sciences
- (d) Such other Departments as may be created in future.

(III) The following Departments shall be assigned to the School for Earth Sciences :

- (a) Department of Applied Geology
- (b) Department of Geophysics
- (c) Department of Geochemistry, and
- (d) Such other Departments as may be created in future.

(IV) The following Departments shall be assigned to the School for Bio-Sciences and Technology :

- (a) Department of Applied Plant Sciences (Horticulture)
- (b) Department of Applied Animal Sciences (Sericulture)
- (c) Department of Bio-Technology
- (d) Department of Pharmaceutical Sciences

- (e) Such other Departments as may be created in future

(V) The following Departments shall be assigned to the School for Home Sciences :

- (a) Department of Human Development and Family Studies
- (b) Department of Home Management
- (c) Department of Food and Nutrition
- (d) Department of Clothing and Textile
- (e) Department of Department of Home Science Extension, and
- (f) Such other departments as may be created in future.

(VI) The following Departments shall be assigned to the School for Energy Studies and Technology :

- (a) Department of Renewable Energy
- (b) Department of Non-renewable Energy, and
- (c) Such other departments as may be created in future.

(VII) The following Departments shall be assigned to the School for Social Sciences :

- (a) Department of Anthropology
- (b) Department of Buddhist Studies
- (c) Such other departments as may be created in future.

(VIII) The following Departments shall be assigned to the School for Management Studies :

- (a) Department of Rural Management
- (b) Such other departments as may be created in future.

(IX) The following Departments shall be assigned to the School for Physical Sciences :

- (a) Department of Electronics and Telecommunication
- (b) Department of Applied Physics
- (c) Department of Applied Chemistry
- (d) Department of Applied Mathematics and Statistics, and
- (e) Such other departments as may be created in future.

(X) The following Departments shall be assigned to the School for Humanities :

- (a) Department of Psychology, and
- (b) Such other departments as may be created in future

(XI) The following Departments shall be assigned to the School for Languages and Literature :

- (a) Department of Sanskrit and Pali
- (b) Department of Hindi
- (c) Department of English and European Languages

- (d) Department of Urdu
- (e) Department of Asian Languages, and
- (f) Such other departments as may be created in future.

(XII) The following Departments shall be assigned to the School for Fine Arts :

- (a) Department of Painting
- (b) Department of Sculpture
- (c) Department of Muscology
- (d) Department of Applied Art, and
- (e) Such other departments as may be created in future.

(XIII) The following Departments shall be assigned to the School for Performing Arts :

- (a) Department of Music
- (b) Department of Dance
- (c) Department of Drama, and
- (d) Such other departments as may be created in future.

(XIV) The following Departments shall be assigned to the School for Commerce :

- (a) Department of Accountancy and Finance
- (b) Department of Business Studies
- (c) Department of Banking, and
- (d) Such other departments as may be created in future.

(XV) The following Departments shall be assigned to the School for Ambedkar Studies :

- (a) Department of Economics
- (b) Department of History
- (c) Department of Political Sciences
- (d) Department of Philosophy
- (e) Department of Social Work
- (f) Department of Education
- (g) Department of Sociology
- (h) Such other departments as may be created in future.

(XVI) The following Departments shall be assigned to the School for Legal Studies :

- (a) Department of Human Rights
- (b) Department of Law
- (c) Such other departments as may be created in future.

(XVII) The following Departments shall be assigned to the School for Space Sciences and Technology :

- (a) Department of Space Sciences
- (b) Department of Space Technology
- (c) Such other departments as may be created in future.

4. In addition, the following Centres shall be established in the University :

- (i) Centre for Continuing Education and Community Services
- (ii) Centre for Disaster Management
- (iii) Centre for Distance Education
- (iv) Centre for Instrumentation and Design Engineering, and
- (v) Such other Centres as may be created in future.

5. (i) The following Centres shall be assigned to the School for Information Sciences and Technology :

- (a) Centre for Continuing Education and Community Services, and
- (b) Such other Centres as may be created in future.

(ii) The following Centres shall be assigned to the School for Environmental Sciences :

- (a) Centre for Disaster Management, and
- (b) Such other Centres as may be created in future.

(iii) The following Centres shall be assigned to the School for Physical Sciences :

- (a) Centre for Instrumentation and Design Engineering, and
- (b) Such other Centres as may be created in future.

(iv) Other Centres shall be assigned to different Schools according to their academic relevance as and when they are created.

6. The organisational structure of the Centres and their academic programmes shall be prescribed by the School Boards to which the Centres are assigned.

CHAPTER-II

SCHOOL BOARD

[Statutes 17 (2), (3), (4)]

Constitution

1. Every school shall have a School Board. On the expiry of the term of the first School Board constituted under Statute 17(2) the School Board shall consist of the following members :—

- (i) The Dean of the School (ex-officio Chairman)
- (ii) Heads of Departments in the School (ex-officio)
- (iii) All Professors in the School
- (iv) One Reader and one Lecturer from each of the Departments by rotation according to seniority.
- (v) One teacher from the centre(s) assigned to the School nominated by the Vice-Chancellor

- (vi) One representative from each of the Board of other Schools, which have inter-disciplinary work with the School, to be nominated by the Vice-Chancellor.
- (vii) Not more than two educationists, preferably experts in the subjects, nominated by the Vice-Chancellor.
- (viii) Not more than five persons nominated by the Academic Council for their special knowledge of, or expertise in the concerned subjects, and who are not employees of the University or of any of its Colleges/Institutions.

Term of Office

2. The term of office of the nominated members shall be three years and they shall be eligible for re-nomination.

Chairman

3. The Dean of the School shall be the Chairman of the Board and shall convene the meetings of the Board.

Functions

4. The functions of the School Board shall be :
- (a) To co-ordinate the teaching and research work in the Departments/Centres of the School
 - (b) To appoint committees to organise the teaching and research work in subjects or areas which do not fall within the sphere of any Department in the School and supervise the work of such committees with the approval of the Vice-Chancellor.
 - (c) To approve the courses of study/synopsis of various programmes, including research degrees, offered by the Departments/Centres.
 - (d) To recommend to the Board of Management the names of examiners for the evaluation of theses for Ph. D. and other research degrees.
 - (e) To recommend to the academic Council creation or abolition of teaching posts after considering proposals received from the Departments/Centres.
 - (f) To consider and act on any proposal regarding the welfare of the students of the School.
 - (g) To consider schemes for the advancement of the standards of teaching and research and to submit proposals in this regard to the Academic Council.
 - (h) To perform all other functions which may be prescribed by the Act, Status and Ordinances and to consider all such matters as may be referred to it by the Board of Management/the Academic Council or the

Vice Chancellor.

- (i) To delegate to the Dean or to any other member of the Board or to a committee such powers, general or specific, as may be decided.

Meetings

5. Meetings of the Board shall either be ordinary or special.

Ordinary meetings shall be held twice in a year of which one shall be held in the first quarter of the academic session.

6. Special meetings with the approval of the Vice Chancellor may be called by the Dean on his own initiative or shall be called at the suggestion of the Vice Chancellor or on a written request from at least one third of the members of the Board.

Quorum

7. The quorum for a meeting of the Board shall be one-third of its total membership.

Notice

8. Notice for the ordinary meeting of the Board shall be issued by the Registrar office at least 14 days before the date fixed for the meeting, and for the special meeting at least five days before the date fixed for the meeting.

Rules of Business

9. Rules of conduct of the meetings shall be as prescribed by regulations to be framed in this regard. Regulations will be framed by the Academic Council.

CHAPTER-III

DEPARTMENTS

[Section 2 (g) read with Statute 17 (5)(c) and Statute 8 (5)]

Constitution

1. The members enumerated under Statute 17 (5)(c) shall be the members of the Departments.

Heads of the Departments and their functions Statute 8(5).—

2. The Head of the Department shall convene and preside over the meetings of the Department.

3. The Head of the Department shall :

- (a) Organise the teaching and research work in the department
- (b) Allocate teaching work to the teachers in the department and assign to them such other duties as may be necessary for the proper functioning of the department.
- (c) Co-ordinate the work of the department committees appointed for specific purposes, and
- (d) Perform such other duties as may be assigned to him by the Dean, the Board of the School, the Academic Council, the Board of Management or the Vice-Chancellor

CHAPTER-IV

BOARD OF POST-GRADUATE STUDIES

(Statute 18)

1. There shall be a Board of Post-graduate studies for each department.

Constitution

2. The Board of Post-graduate Studies shall consist of the following members:

- (i) Head of the Department
- (ii) All Professors of the Department
- (iii) Two Readers and two Lecturers, by rotation according to seniority.
- (iv) Not more than four teachers teaching the subject at Post-graduate level in its Colleges/Institutions, nominated by the Vice-Chancellor, due representation to be given to the Heads of Departments and other senior teachers of the Departments by turn.
- (v) Not more than three persons, nominated by the Board of the School, who have special knowledge in the discipline of the concerned Department and who are not employees of the University or of any of its Colleges/Institutions.
- (vi) In respect of the professional colleges, the Principal or the head of the Department of the concerned discipline, as the case may be shall be ex-officio Chairman of the Board of Studies.
- (vii) The Chairman shall have the power to co-opt experts to attend as observers at its specific meetings, as and when necessary, with prior permission of the Vice-Chancellor :

Term of Office

3. The term of office of the members of the Board of Studies shall be for a period of three years. Members shall be eligible for re-appointment, except those appointed vide clause 2 (iii) above.
4. The functions of the Board shall be as per Statute 18 (3).

Quorum

5. The quorum for a meeting of the Board shall be one-third of the total membership of the Board.

Notice

6. Notice of the meetings of the Board shall be issued by the registrar's office at least 14 days before the date fixed for the meeting.

Minutes

7. The Chairman of the Board shall keep the Minutes of the Meetings of the Board and endorse a copy of the same to Registrar.

Rules of Business

8. The Rules of conduct of the meeting shall be as may be prescribed by regulations in this regard by Academic Council.

FIRST

ACADEMIC ORDINANCES

Instalment II

CHAPTER-V

BOARD OF UNDER-GRADUATE STUDIES

[Statute 18(1) and (4)]

Constitution

1. There shall be a Board of under-graduate Studies for each subject/discipline taught at the degree level.

2. Each board shall comprise not less than nine members. The constitution of the Board shall be as follows:

- (i) The Head of the University Department teaching the subject who shall be the ex-officio Chairman.
- (ii) Professors in the Department.
- (iii) One Reader in the Department by rotation as per seniority.
- (iv) One Lecturers in the Department by rotation as per seniority.
- (v) Not more than Six teachers teaching the subject in its Colleges/Institutions, to be nominated by the Vice-Chancellor.
- (vi) Two outside experts nominated by the Vice-Chancellor in consultation with the Head of the Department.

Provided that in respect of subjects/discipline not taught in the university Departments/Schools, the Board of Studies shall consists of the following:

- (i) The Principal or the Head of the Department of the concerned discipline, as the case may be, who shall be the ex-officio Chairman of the Board of Studies.
- (ii) Not more than six teachers teaching the subject in its Colleges/ Institutions, to be nominated by the Vice-Chancellor.
- (iii) Not more than three outside experts who have special knowledge in the discipline, to be nominated by the Vice- Chancellor.

Term of Office

3. Members of the Board of Under-graduate Studies shall hold office for a period of 3 years and they shall be eligible for re-appointment except those appointed by rotation as per seniority.

Powers and Functions

4. The powers and functions of the Board shall be :
 - (a) To recommend the Board of management panel of names suitable for appointment as examiners, paper setters, etc., in a subject with which it deals in accordance with the provisions of regulations about the examinations of the University.
 - (b) To recommend text-books where necessary.
 - (c) To consult specialists who are not members of the Board, as and when necessary.
 - (d) To make recommendations to the Academic Council regarding the syllabi of the courses of study and examinations in the subjects with which it deals.
 - (e) To recommend to the School Board, steps/measures for improvement of the Standard of under-graduate courses and teaching in the subject for making necessary recommendations to the Academic Council and to consider and report on any matter referred to it by the board of the management, the Academic Council or the 'Dean of the School'.

The Chairman shall have the power to co-opt 'experts to attend as observers at its specific meetings, as and when necessary, with prior permission of the Vice-Chancellor.'

5. Meeting of the Board shall be convened by the Chairman of the Board.
6. Special meetings may be called by the Chairman on his own or on the request of the Dean of the School or at the suggestion of the Vice Chancellor or on written request from at least four members of the Board.

Notice

7. Notice of the meeting of the Board shall be issued by the Registrar's office at least 3 weeks before the date fixed for the meetings.

Quorum

8. Four members of the Board shall form quorum.

Rules of Business

9. The rules of conduct of the meeting shall be as prescribed by the Regulations in this regard.

CHAPTER-VI**DEAN OF SCHOOL OF STUDIES**

[Statute 7 (3)]

1. The Dean of the School shall:
 - (a) Co-ordinate and generally supervise the teaching and research work in the School through the Heads of Departments.
 - (b) Maintain discipline in the classrooms through the Heads of Departments.
 - (c) Keep a record of the evaluation of sessional work and the attendance of the students at lectures, tutorials or seminars wherever these are prescribed.
 - (d) Arrange for the examinations of the University in respect of the students of the School in accordance with such directions as may be given by the Academic Council.
 - (e) Convene and preside over the meetings of the Board of the School and keep the minutes of the meetings of the Board.
 - (f) Perform such other duties as may be assigned to him by the Academic Council, the Board of Management or the Vice Chancellor.

CHAPTER-VII**ADMISSION OF STUDENTS TO THE UNIVERSITY**

[Section 5(xx), 5(xxi) and 27(1)(a)]

1. Without prejudice to the provisions of the Act and the Statutes and other rules of the University, no student shall be eligible for admission to any under-graduate or post-graduate course of study in the University unless he/she has passed the examination or examinations prescribed by the University for admission to the concerned course or courses.
2. Application for admission to the University shall be made to the Dean of the concerned School in such form as may be prescribed and on or before the last date fixed in respect of each course.
3. The applications so received shall be forwarded by the Dean to the Admission Committee of the Schools/Departments concerned as may be constituted by the Vice-Chancellor.
4. The processing of admission in respect of each course may be completed by the Admission

committee concerned as per prescribed procedure and the list of candidates recommended for admission shall be forwarded to the Vice Chancellor for approval.

5. All admissions shall be provisional in the first instance and may be finalised within a time limit as may be fixed by the Vice-Chancellor.
6. No candidate shall claim admission as a matter of right.
7. Admission of foreign nationals, shall be regulated in accordance with the guidelines issued from time to time by the Government of India.
8. The University may make admission/enrolment of students for Ph.D. Programmes in various subjects/disciplines both on part-time and full-time basis including external registration for the Ph.D. Degree, details of which shall be prescribed through Regulations from time to time.

Normally, registration for Ph.D. Degree shall be done twice in a year (in April and October).

9. For the purposes of admission to all courses of study in the University, 50% of the seats shall be reserved for SC/ST students.

CHAPTER-VIII

REGISTER OF ENROLMENTS

Maintenance of

Register of

Enrolments

1. The University shall maintain a Register of Enrolments in which the names of the following classes of persons shall be registered:
 - (a) Candidates who have passed the Higher Secondary, Intermediate, Pre-Degree, S.S.C. of the respective Boards or any other examination approved as equivalent thereto, when admitted to a Course of Study in the University.
 - (b) Holders of any degree, title, diploma or certificate, other than those specified in (a) above on first admission to a University Course of Study.
 - (c) Persons, other than those specified in (a) or (b) who with or without exemption from attendance certificates, are permitted to appear for the first time for any examination of the University.
 - (d) Persons other than those specified in (a) (b) or (c) and who are candidates for admission to a Research Degree of the University.

CHAPTER-IX

MIGRATION OF STUDENTS

[Section 27(1)(q)]

Inter

University

Migration

1. Students transferred from other Universities and seeking admission in the University may be permitted to be admitted to the concerned course provided, however:—
 - (a) Equivalence of the qualifying examination/degree concerned is approved by Equivalence Committee of the University.
 - (b) They shall produce from the Head of the Institution in which they have last studied.
 - (i) A Transfer Certificate, and
 - (ii) A Conduct Certificate.
 - (c) They shall have passed all the examinations prescribed by the parent University for the duration of the course of study already put in and shall have to produce documentary evidence to that effect along with the application for admission.

CHAPTER-X

EQUIVALENCE COMMITTEE

[(Section 27(1)(q)]

1. There shall be an Equivalence Committee consisting of Deans of all School and its functions shall be as under:—
2.
 - (i) To recognise the examinations conducted by other Universities and Degrees awarded by them, on reciprocal basis.
 - (ii) To decide equivalence of such examination/degree as may be referred to it from time to time including those of foreign Universities.
 - (iii) To withhold, suspend or cancel recognition to any examination/degree for such reasons and such time as it may deem fit.
 - (iv) While considering the cases of equivalence and/or recognition, the committee may go through the syllabus, curriculum, etc., and may either have the views/options of the concerned Head/Dean or may seek clarification for which purpose the Equivalence Committee may request the concerned Head of Department to attend its meeting as a special invitee.
3. Notwithstanding any of the clauses above, the Vice-Chancellor may grant recognition/equivalence to any examination/degree and action taken by the Vice-Chancellor shall be reported to the Equivalence Committee at its next meeting.

4. The committee shall frame the rules of business and lay down guidelines for consideration and approval of the Academic Council. The Academic Council may delegate any of its powers, in this behalf, to the Equivalence Committee.

CHAPTER-XI

MEDIUM OF INSTRUCTION AND EXAMINATION

[(Section 27 (1)(c))]

The medium of instruction in respect of all courses conducted in the Schools and the Colleges/Institutions of the University shall be English/Hindi except in cases of studies/research in Languages.

Provided that the Vice-Chancellor may permit a student to write any examination in a language other than that of instruction in exceptional circumstances mentioned in writing.

CHAPTER-XII

FEES PAYABLE BY THE STUDENTS OF THE UNIVERSITY AND THE COLLEGES/INSTITUTIONS

[(Section 27 (1)(c))]

FEES:

1. Fees payable by the students of the University and the Colleges/Institutions, as the case may be, for various purposes, shall be as prescribed in Appendix-I which may be modified by the Board of Management from time to time.

Due date and Mode of payment

2. (i) Students shall deposit tuition fees in two instalments, the first at the time of their admissions and the next before 10th February. Examination fees and other deposits, if any, shall be paid in one instalment at the time of admission.
- (ii) Fees shall be payable in cash or through postal order or by a crossed bank draft drawn in favour of "The Finance Officer, Babasabeb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow" or in any other manner as may be decided by the University.

Delay or Default in payment

3. (i) If a Student does not pay fee in time, late payment fee shall be levied as follows at the time of payment :
 - (a) @ 50 paise per day for the first 10 days;
 - (b) @ Two rupees per day thereafter up to the last day of the month in which the fee is due.
- (ii) The Vice Chancellor, or on his behalf, any other officers to whom this power has been delegated, may relax any of the conditions for

payment of fees in special cases.

- (iii) Names of the defaulters shall be removed from the rolls of the University with effect from the first day of the following month.
- (iv) A student whose name has been struck off the rolls of the University, under the above clause, may be re-admitted on the recommendation of the Dean of the School concerned and on payment of arrears of fees in full and other dues including late payment fee together with a re-admission fee of Rs. 10.
- (v) Whenever a student proposes to withdraw from the University, he shall submit an application to the Dean of the School concerned through the head of the Department/Centre intimating the date of his/her withdrawal. If he/She fails to do so, his/her name shall continue to be kept on the rolls of the University for a maximum period of one month, following the month upto which he/she has paid the fees. He/She shall also be required to pay all fees/Charges that may fall due during this period.

Concession to Blind, SC/ST Students.

4. (i) Blind Students shall be exempted from payment of tuition fees.
- (ii) SC/ST Students shall be granted fee concession as per regulations.
5. (a) The Dean of the School, on the recommendation of a committee consisting of the following shall grant freeships upto a percentage which may be prescribed as per the guidelines of the University Grants Commission from time to time in this regard :
 - (i) One of the Deans in the University to be nominated by the Vice-Chancellor.
 - (ii) Three Heads of the Departments/Centres nominated by the Board of Management.

This committee shall also award scholarships as mentioned in Chapter XIII.
- (b) If the number of applicants for freeships is more than the number of freeships available, the committee referred to in clause 5 (a) above may recommend half freeships to some of the applicants ensuring at the same time that the total number of freeships does not exceed the prescribed limit.
- (c) Applications for concession in fees shall be submitted in the prescribed form to the Dean of the School concerned through the head of the Department/Centre by 31st August or by such other date as may be specified by the Dean. Applications received after that date shall not ordinarily be entertained.

- (d) The following factors shall be considered while making recommendations on the applications of students for grant of freeships.

- (i) Academic record of the student;
- (ii) His/her financial position;
- (iii) Any other relevant factor relating to the financial position of the student or of his/her parents/guardian.

The list of the students to whom concessions have been awarded shall ordinarily be notified by 30th September.

- (e) Feeships granted during the preceding academic year shall not be renewed automatically in the following year. The student in need of such concession shall submit fresh application every year which shall be considered alongwith new applications received in that year.
 - (f) A freeship granted to a student may be cancelled if his/her conduct or progress in studies is found to be unsatisfactory or if his/her or his/her parent's/guardian's financial condition improves and he/she is no longer in need of such fee concession.
6. (i) Security deposits, library caution money and any other deposits are refundable, on an application from the student on his/her leaving the University, after deduction of all dues against him/her.
- (ii) If any student does not claim the refund of any amount lying to his/her credit within one calendar year of his/her leaving the University, it shall be deemed to have been donated by him/her to the Students' Welfare Fund.

Explanation :

The period of one year shall be reckoned from the date of announcement of the result of the examination due to be taken by the student or the date from which his/her name is struck off from the rolls of the University, whichever is earlier.

- (iii) If, after having paid the fees, a candidate desires his/her admission to be cancelled, he/she shall be refunded all fees and deposits, except tuition fee, admission, enrolment and recognition fees, provided his/her application for withdrawal is received by the Dean of the School concerned at least five clear days before the commencement of the academic session concerned or within five clear days after the completion of admission.
- (iv) If, after having paid his/her fees, a candidate does not join the University, only the sports

fee and security deposit(s) shall be refunded provided his/her application for withdrawal is received by the Dean of the School concerned not later than fifteen clear days after the commencement of the academic session concerned.

- (v) Application for withdrawal received after the expiry of fifteen days from the commencement of the academic session would entitle a student for the refund of security deposit/caution money only.
- (vi) If a student owes any money to the University on account of any damage he/she may have caused to the University property, it, shall alongwith outstanding tuition fees and fines, if any, be deducted from the security deposit due to him/her.

7. Students shall not be issued hall tickets or allowed to appear at the examination unless they have cleared all their dues, paid the prescribed examination fee, and produced a "No dues" certificate from the Dean of the School/Head of the Department/Centre concerned.

CHAPTER-XIII

AWARD OF SCHOLARSHIPS, STUDENTSHIP, FELLOWSHIPS, MEDALS, PRIZES, ENDOWMENTS ETC.

Section 5(xiii)

1. In order to encourage meritorious and deserving students to pursue courses of studies and research in the University without great financial strain, the University shall strive to provide adequate number of scholarships, fellowships, studentships and freeships: for financial help, and also provide for award of medals and prizes on consideration of the pattern prevalent in other Central Universities in the country.

Award of
Scholarship
Freeship

2. The University shall institute scholarships in every subject to be awarded to the students of the University.

There shall be concession in the form of half and full freeships of tuition fees in each School/Department/Centre as per norms of the U. G. C. There shall be a scheme of merit scholarship where the first and second rank holders in every subject will be awarded scholarship, the quantum of which shall be decided by the University from time to time.

All types of Scholarships shall be administered at the University level by a Committee to be constituted by the Vice-Chancellor and mentioned in Chapter XI.

Fellowship

3. There shall be fellowships instituted in the University for studies or research as approved under the

norms of the U.G.C. or other funding agencies from time to time.

Studentship

4. There shall be a scheme to award medals/prizes to the meritorious students of the University for their best performance in various University Examinations.

Endowment

Vide Section

5(xxvii)

5. The University shall have power to institute endowments from time to time in accordance with the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Act.

There shall also be a Committee constituted by the Vice-Chancellor for administration of each endowment and to implement the objects of the endowment.

Detailed guidelines governing the administration of such endowments created in the University shall be framed from time to time by the Board of Management.

APPENDIX-I

SCHEDULE OF FEES

1. Every student of the University shall pay, alongwith the first instalment of fees, the following amounts under each head mentioned below :—

- | | |
|---|-----------|
| (i) Admission fee chargeable only once for each course | Rs. 50/- |
| (ii) Enrolment/Registration Fee payable only by students not enrolled in the University in any earlier course | Rs. 50/- |
| (iii) Caution Money | |
| (a) For each laboratory where the student may Undergo practical training | Rs. 100/- |
| (b) For each library of which the student may become a member | Rs. 100/- |
| (c) General caution money including hall/hostel caution money. | Rs. 150/- |

The full/part caution money under these heads may be refunded in the next academic session at the discretion of the University.

2. Every student of the School for Information Science & Technology and School for Environmental Studies, as well as Centre for Vocational Studies and Centre for Rural Technology shall pay the Laboratory Fee as per the following schedule :—

- | | |
|---------------|--|
| (a) For M.Sc. | Rs. 250/- per annum or
Rs. 125/- per semester |
|---------------|--|

- | | |
|---|--|
| (b) For Post-graduate Diploma Course | Rs. 250/- per annum or
Rs. 125/- per semester |
| (c) For Post-graduate Certificate Courses | Rs. 125/- |

3. Every student of the University shall pay, the following fees for each academic year (two semesters) :—

- | | |
|---|---------------|
| (a) Medical Examination Fee | Rs. 50/- |
| (b) Sports Fee | Rs. 50/- |
| (c) Library/Laboratory/Identity Card Fee | Rs. 10/- each |
| (d) Duplicate Library/Laboratory/Identity Card Fee chargeable in case the original is lost. | Rs. 50/- each |

4. Students enrolled in the School for Ambedkar Studies shall pay the following tuition fees :—

- | | |
|--------------------|----------------------|
| M. Phil. Programme | Rs. 1000/- per annum |
| Ph. D. Programme | Rs. 1000/- per annum |

5. Students enrolled in the School for Information Science and Technology and School for Environmental Studies shall pay the following tuition fees :—

- | | |
|-------------------|--|
| Diploma Course | Rs. 2000/- per annum or
Rs. 1000/- per semester |
| M.Sc. Course | Rs. 2000/- per annum or
Rs. 1000/- per semester |
| M. Phil Programme | Rs. 2500/- per annum |
| Ph. D. Programme | Rs. 2500/- per annum |

6. Students enrolled in the Centre for Human Rights shall pay the following tuition fees :—

- | | |
|-------------------|---|
| Diploma Course | Rs. 1000/- per annum or
Rs. 500/- per semester |
| M. Phil Programme | Rs. 1000/- per annum |
| Ph. D. Programme | Rs. 1000/- per annum |

7. Students enrolled in the Centre for Vocational Studies shall pay the following tuition fees :—

- | | |
|---|--|
| (a) Computer Software Applications Certificate Course | Rs. 2000/- |
| Diploma Course | Rs. 4000/- per annum or
Rs. 2000/- per semester |
| (b) Office Management and Secretarial Practice Certificate Course | Rs. 1000/- |

Diploma Course	Rs. 2000/- per annum or Rs. 1000/- per semester
----------------	--

8. Students enrolled in the Centres for Rural Technology shall pay the following tuition fees :—

Certificate Course	Rs. 1000/-
Diploma Course	Rs. 2000/- per annum or Rs. 1000/- per semester

9. Every student of the University shall be required to reside in University halls/hostels and shall pay a hall/ hostel fee of Rs. 1000/- every six months inclusive of electricity charges. He/she shall also have to pay mess charges as may be decided by Regulations.

10. Every student taking a university examination shall pay the examination fee as follows :—

All Certificate Courses	Rs. 150/-
All Diploma Courses	Rs. 300/-
All M. Sc. Courses	Rs. 300/-
All M. Phil. Programmes	Rs. 350/-
All Ph. D. Programme : evaluation of thesis	Rs. 350/- for
Exam.	Rs. 250/- for Viva Voce

11. The mode of payment of fees shall be laid down in the Ordinances and Regulations made for the purpose.

12. The University reserves the right to charge fees under additional heads, as and when necessary and/or alter the amount of fees charged under various heads.

13. The tuition and examination fees for other Schools/Centres shall be as decided from time to time.

14. Fee concessions to blind and SC/ST students shall be as per Ordinance 4 of Chapter XII (Fees Payable by the students of the University and the Colleges/ Institution).

FIRST

ACADEMIC ORDINANCES

Instalment III

CHAPTER XIV

CLASSIFICATION, EMOLUMENTS, QUALIFICATIONS AND OTHER TERMS AND CONDITIONS OF SERVICE OF THE TEACHERS AND OTHER ACADEMIC STAFF OF THE UNIVERSITY

[Section 27(1)(n) read with Statute 25(1)]

1. "Teachers of the University" means Professors, Reader, Lecturers and such other persons as may be appointed for imparting instruction or conducting research in the University or in any college or institution maintained

by the University and are designated as teachers by the Ordinances.

2. Emoluments :

The emoluments of the teachers, shall be as follows :—

(i) They will be paid salary in the scales of pay mentioned below :

Lecturers	— Rs. 2200-75-2800-EB-100-4000
Lecturer (Senior Scale)	— Rs. 3000-100-3500-125-5000
Lecturer (Selection Grade)	— Rs. 3700-125-4590-150-5700
Reader	— Rs. 3700-125-4950-150-5700
Professor	— Rs. 4500-150-5700-200-7300

The emoluments of a teacher will in addition to pay, include dearness allowance and other allowances as are applicable to Central Government employees drawing corresponding pay.

The appointment of a teacher on direct recruitment is to be made on the minimum of the scale prescribed for that post. However, on the recommendation of the selection committee and on the approval of the Board of Management, the pay of a teacher may be fixed at a higher stage :

Provided that the number of increments so sanctioned shall not exceed the maximum prescribed by the University Grants Commission.

Provided further that the Central Government Rules, for the time being in force concerning the fixation of pay and other related matters, shall be applicable in matters of appointment and promotion of the teachers of the University.

(ii) The salary and other emoluments shall be subject to revision of pay scales from time to time as per University Grants Commission/ Ministry of Human Resource Development's directives.

3. Recruitment and Qualification :

(1) Recruitment to the posts of Lecturers, Readers and Professors in the University shall be made on the basis of merit through all-India advertisement and selection.

(2) The minimum qualification required for appointment to the posts of Lecturers, Readers and Professors shall be those prescribed by the UGC from time to time. These are as follows :—

(a) Lecturers : Master's degree in the relevant subject with at least 55% marks or its equivalent grade and good academic record.

Besides fulfilling the above qualification candidates for the post of Lecturer should have cleared the National Eligibility Test (NET) for Lecturer conducted by UGC or

any other Test or Examination declared by the UGC to be equivalent to NET.

OR

Should have submitted their Ph.D. thesis, or completed their M. Phil. degree by 31st December, 1993.

- (b) Readers : Good academic record with a doctoral degree or equivalent published work. Evidence of being actively engaged in (i) research or (ii) innovation in teaching methods or (iii) production of teaching material.

Five years experience of teaching and/or research/ provided that at least three of these years were as Lecturer in a University/Institution imparting post graduate instruction or in an equivalent position.

This condition may be relaxed in the case of candidates with outstanding record of teaching/research.

EXPLANATION : For determining "good academic record" the following criteria shall be adopted in the cases of Readers and Lecturers :

- (i) A candidate holding a Ph.D. Degree should possess at least a second class (50%) Masters Degree; or
 - (ii) A candidate without Ph.D. Degree should possess a high second class (55% or above) Masters Degree and second class (50% or above) Bachelor's Degree.
- (c) Professors :

An eminent scholar with published work of high quality and actively engaged in research. Above ten years' experience of teaching and/or experience of guiding research at doctoral level.

OR

An outstanding scholar with established reputation who has made significant contribution to knowledge.

4. Career Advancement/Promotion :

(I) Every Lecturer will be eligible for placement in a senior scale of Rs. 3000—5000 if he/she has :

- (a) completed 8 years of service after regular appointment.
- (b) participated in two refresher courses/summer institutes, each of approximately four weeks duration, or engaged in other appropriate continuing education programmes of comparable quality, as may be specified by U.G.C.; and
- (c) consistently satisfactory performance appraisal reports.

Explanation :

- (i) 8 years of service in para (a) above means a total of eight years' service in Universities/recognised colleges or National Research Institutes/

Laboratories in identical/equivalent or comparable scale of pay.

- (ii) With reference to para (c) above, consistently satisfactory performance appraisal report shall be the "performance report" of the Lecturer as given by the concerned Head of the Department, Dean of the School and countersigned by the Vice-Chancellor.

(II) Every Lecturer in the senior scale of Rs. 3000—5000 will be eligible for promotion to the post of Lecturer (Selection Grade)/Reader in the scale of pay of Rs. 3700—5700 if he/she has :

- (a) completed 8 years of service in the senior scale provided that the requirement of 8 years will be relaxed if the total service of the Lecturer is not less than 16 years; vide not (I) above; and
- (b) obtained a Ph.D. degree, or an equivalent published work.

(III) Every Lecturer in the senior scale will be eligible for promotion to the post of Reader in the scale of pay Rs 3700—5700 if he/she has :

- (a) completed 8 years of service in the senior scale, provided that the requirement of 8 years will be relaxed if the total service of the Lecturer is not less than 16 years.
- (b) Obtained a Ph.D. degree or an equivalent published work;
- (c) made some mark in the areas of scholarship and research as evidence by semi-education innovation, design of new courses and curricula, etc.
- (d) participated in two refresher courses/summer institutes each of approximately 4 weeks duration or engaged in other appropriate continuing education programmes of comparable quality as may be specified by the UGC, after placement in the senior scale; and
- (e) consistently good performance appraisal/evaluation reports.

5. Promotion to the post of Lecturer (Selection Grade)/Reader will be through a process of selection by a Selection Committee to be set up under the Statutes/ Ordinances of the University or other similar committees set up by the University. Posts will stand created for this purpose by upgrading a corresponding number of posts of Lecturers in the University and Colleges.

- (a) Promotion to the post of Lecturer (Selection Grade)/Reader will be through a Selection Committee consisting of :
 - (i) The Vice-Chancellor or his nominee.
 - (ii) One Dean nominated by the Vice-Chancellor.

- (iii) The Head of the Department concerned.
- (iv) One person not in the service of the University nominated by the Board of Management having special knowledge or interest in the concerned subject.
- (b) Promotion of the post of Reader will be through a process of selection by a selection committee to be set up under the Statutes/Ordinances of the University.

Those lecturers in the senior scale who do not have a Ph. D. degree or equivalent published work and who do not meet the scholarship and research standards of a Reader but fulfil the other criteria mentioned in para 3(2)(b) and have a good record in teaching and/or participation in extension activities, will be placed in the grade of Rs. 3700—5000 subject to the recommendations of the above committee. They will be designated as Lecturers in the Selection Grade. Posts in the selection grade will be created for this purpose by upgrading the posts held by them. They could offer themselves for a fresh assessment after obtaining a Ph. D. degree and/or fulfilling other requirements for promotion as Reader, and if found suitable, could be given the designation of Reader.

Explanation :

Lecturers (Rs. 2200—4000) for promotion to Lecturer (Senior Scale) (Rs. 3000—5000) and/or Lecturer (Selection Grade)/Reader Rs. 3700—5000 will be entitled to the relaxation in the years of service by 3 years and 1 year respectively, if they had Ph.D. or M. Phil. degree.

Participation of teachers at regular intervals in appropriate continuing education programmes is envisaged as an integral part of the professional development of teachers. While there cannot and need not be any rigid requirement of participation in formal programmes, evidence of commitment to continuing education of any recognised means as may be specified by the UGC will be an essential requirement for career advancement. Relaxation from the requirement of participation in such programmes for specific period and for specific categories of posts, will be granted by the University in accordance with guidelines to be laid down by the UGC.

Regular and systematic appraisal of performance of teacher is to be an essential element in the management of education. Till it becomes operational, the existing screening mechanism/selection procedures or those prescribed on a provisional basis by the University/Central Government will apply to all placements/promotion referred to above.

6. Probation :

The period of probation of a teacher shall be 12 months. A Lecturer appointed on probation should be confirmed only after he/she has completed an appropriate short-term orientation programme and his/her performance appraisal reports are satisfactory.

7. Confirmation :

- (a) It shall be the duty of the Registrar to place before the Board of Management the case of confirmation of a teacher on probation not later than forty days before the end of the prescribed period of probation.
- (b) The Board of Management may then either confirm the teacher or decide not to confirm him/her or extend the period of probation for a period of six months/twelve months:

Provided that the total period of probation shall not exceed forty-eight months in all. In case the Board of Management decides not to confirm the teacher, whether before the end of the 12 months or before the end of the extended period of probation as the case may be, he/she shall be informed in writing to that effect, not later than thirty days before the expiry of that period. Provided that decision not to confirm a teacher shall require a two-thirds majority of the members of the Board of Management, present and voting.

- (c) A teacher appointed by the Board of Management under Statutes 21 and 22 shall be deemed to be confirmed with effect from date he/she joins duty.
- (d) Where a teacher appointed to a post under the University on probation is during his period of probation, found unsuitable for holding that post or has not completed the period of probation satisfactorily, the appointing authority may :
 - (i) In the case of teacher appointed by promotion revert him to the post held immediately before such placement/promotion.
 - (ii) In the case of a teacher appointed by direct recruitment, terminate his services under the University by giving one month notice.

8. Increment :

Every teacher shall draw increment in his/her scale of pay unless it is withheld or postponed by a Resolution of the Board of Management on a reference by Vice-Chancellor and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

9. Resignation :

- (a) A permanent teacher of the University may at any time, resign from his duty by giving three months notice in writing to the Board of Management.
- (b) In the case of temporary teacher, the period of notice shall be one month.

Provided that the Board of Management may waive the requirement of notice period at its discretion.

10. Superannuation and re-employment:

The age of superannuation for teachers shall be 60 years and thereafter no extension in service shall be given.

Provided that if the Board of Management is satisfied as per the U.G.C. guidelines that such an appointment is in the interest of the University it may, on the recommendation

of the Vice-Chancellor, make ex-cadre appointment in respect of a teacher of the University in sound health who has attained the age of 60 years and is able to perform his/her duties satisfactorily, on such terms and conditions as the Board of Management may specify, for a period not exceeding three years in the first instance :

Provided further that no further contract or extension shall be granted to teacher who has attained the age of 65 years :

Provided further that the teacher re-employed by the University after attaining the age of 60 years shall not hold the appointment of Head of the Central/Department or Dean of School or any other administrative post such as Chief Proctor, provost etc.

11. Fixation of pay of re-employed pensioners :

The initial pay of pensioner including teachers drawing pension and retired on contributory Provident Fund, re-employed in the University shall be fixed at the minimum stage of the scale of pay prescribed for the post in which the individual is re-employed. In addition, he/she may be permitted to draw separately any pension sanctioned to him/her and to retain any other form of retirement benefit (C. P. Fund, gratuity, commuted value of pension etc.), provided that the total amount of initial pay plus the gross amount of pension and/or the pension equivalent of other forms of retirement benefits does not exceed.

- (i) the pay he/she drew before his/her retirement (pre-retirement pay);
- (ii) the amount prescribed as per Central Civil Services (Fixation of pay of Re-employed Pensioners) orders for the time being in force.

Notes :

1. In all cases where either of these limits is exceeded, the pension and other retirement benefits may be paid in full and the necessary adjustment made in the pay so as to ensure that the total of pay and pensionary benefits is within the prescribed limits.

Where after the pay is fixed at the minimum or any lighter stage, it is reduced below the minimum as a result of the said adjustments, increase in pay may be allowed after each year of service at the rate of increments admissible, as if the pay had been fixed at the minimum or the higher stage as the case may be.

2. Pay last drawn before retirement will be taken to be substantive pay plus special pay, if any, pay drawn in an officiating appointment may be taken into account if it was drawn continuously for at least one year before retirement.

In case where the minimum pay of the post in which the teacher is re-employed is more than the last pay drawn the teacher concerned may be allowed the minimum of the prescribed scale of the post less pension and pension equivalent of other retirement benefits.

Once the initial pay of a re-employed pensioner

has been fixed in the manner indicated above, he/she may be allowed to draw normal increments in the time scale of the post to which he/she is appointed provided that the pay and gross pension/pension equivalent of other retirement benefits taken together does not at any time exceed the amount prescribed as per Central Civil Services (Fixation of Pay of Re-employed Pensioners) for the time being in force.

In case where the pay is proposed to be fixed at a stage higher than that admissible under the above provisions, each such case shall be referred to the Ministry of Human Resource Development, Govt. of India/University Grants Commission and approval obtained. No such reference, however, need be made in respect of academic staff member of the University whose pay is proposed to be fixed in accordance with the normal rules on their re-employment after retirement.

3. In case of any doubt, ambiguity, the Central Civil Services (Fixation of Pay of Re-employed Pensioners) Order for the time being in force shall be applicable.

12. Grievance redressal mechanism :

Appropriate mechanism for the redressal of teachers' grievances will be established in the University as per the guidelines issued by the U.G.C.

13. General conditions of service :

- (i) No teacher of the University shall without the permission of the Board of Management engage directly or indirectly in any trade or business whatsoever or any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached :

Provided that nothing contained herein shall apply to the work undertaken in connection with examination of Universities or learned bodies or Public Service Commissions or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures or with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

- (ii) Every teacher of the University shall be bound by the statutes, ordinances and regulations for the time being in force in the University :

Provided that no change in the terms and conditions of service of a teacher shall be made after his/her appointment in regard to designation, scale of pay, increment, provident fund, retirement benefits, age of retirement, probation, confirmation, leave, leave salary and removal from service etc. so as to adversely affect him/her.

- (iii) Every teacher shall take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by

and in accordance with act, the statutes and ordinance framed thereunder for the time being in force whether the same relates to organisation of instruction or teaching, or research of the examination of students or their discipline or their welfare and generally to act under the direction of the authorities of the University.

Explanation :

For purposes of this ordinance 'teacher' means a whole-time salaried teacher of the University and does not include honorary, visiting or part-time teachers.

14. Code of professional ethics :

All teachers shall be governed by the code of professional ethics as formulated and prescribed by the U.G.C. under the guidelines from time to time.

15. Leave :

The various kind of leave admissible to a teacher of the University and other provisions relating thereto are given in Chapter XV of these Ordinances.

16. Contract :

The written contract between a teacher and the University required to be entered into as per clause (2) of Statute 25 of the University shall be in the form given in Appendix II or as nearly or substantially to like effect.

17. Special contracts :

Notwithstanding anything contained in these Ordinances the Board of Management may, in special cases, appoint teachers on contract basis on such terms and conditions as it may deem fit. The model of the contract, in this regard, is given in Appendix-III.

Provided that no appointment shall be made under this clause for a period exceeding five years at a time.

WRITTEN CONTRACT

Memorandum of agreement made this the.....Day of One thousand nine hundred and.....between.....(hereinafter called the "Teacher") of the first part and the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow being a body corporate constituted under the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Act 1994 No. 58 of 1994 (hereinafter called the "University") of second part. It is hereby agreed as follows:

1. That the University hereby appoints.....to be a member of the teaching staff of the University with effect from the date the said.....take charge of the duties of his/her post and said.....hereby accepts the engagement and undertakes to take such part in the activities of the university and perform such duties in the university as may be required by and in accordance with the said Act, the statutes and ordinances framed thereunder, for the time being in force, whether the same relate to organisation of instruction or teaching or research or the examination of students or their discipline or their welfare and generally to act under the directions of the authorities of the university.

2. (a) The teacher shall be on probation for a period of 12 months.

(b) If the university is satisfied with the performance of the teacher for confirmation he/she shall be confirmed in the post to which he/she was appointed at the end of the period of his/her probation.

(c) If the university is not satisfied with the performance of the teacher his/her period of probation may be extended by another 12 months.

(d) In case the university decides not to confirm the teacher whether at the end of 12 months period of his/her probation or at the end of the extended period of probation as the case may be, the teacher shall be informed in writing at least 30 days before the expiry of that period that he/she would not be confirmed and would consequently, cease to be in the service of the university at the end of the period of his/her probation.

3. That the said.....shall be a whole time teacher of the university and unless the contract is terminated by the Board of Management or by the teacher as hereinafter provided shall continue in the service of the university until he/she completes the age of sixty years.

4. That the university shall pay.....during the confirmation of his/her engagement hereunder as a remuneration for his/her service a salary of Rs.....per mensem, raising by annual increment of Rs.....to a maximum salary of Rs.....per mensem.

Provided that whatever there is any change in the nature of the appointment or the emoluments of the teacher, particulars of the change shall be recorded in the Schedule annexed herein, under the signature of both the parties and the terms of this agreement shall apply mutatis, mutandis, to the new post and the terms and conditions attached to the post.

Provided further that no increment shall be withheld or postponed save by the resolution of the Board of Management on a reference by the Vice Chancellor to it and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

5. That the said teacher agrees to be bound by the Statutes, Ordinances, Regulations and rules for the time being in force in the University, provided that no change in the terms and conditions of service of the teacher shall be made after his/her appointment in regard to designation, scale of pay, increment, provident fund, retirement benefits, age of retirement, probation, confirmation, leave, leave salary and removal from service so as to adversely affect him/her.

That the teacher shall devote his/her whole time to the service of the University and shall not, without the written permission of the University, engage, directly or indirectly in any trade or business whatsoever or in any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached but this prohibition shall not apply to work undertaken in connection with service commissions or to any literary work or publication or radio talk of extension lectures or with the permission of the Vice Chancellor to any other academic work.

6. It is further agreed that this engagement shall not be liable to be determined by the University except on the grounds specified and in accordance with the procedure laid down in Clauses (1), (2), (3), (4) and (5) of statute 28 (reproduced below) :

(i) Where there is an allegation of misconduct against a teacher, a member of the academic staff or other employee of the university, the Vice Chancellor in the case of teacher or member of the academic staff, and the authority competent to appoint (hereinafter referred to as the appointing authority) in the case of other employee, may, by order in writing, place such teacher, member of the academic staff or other employee, as the case may be, under suspension and shall forthwith report to the Board of Management the circumstances in which the order was made.

Provided that the Board of Management may, if it is of the opinion that the circumstances of the case do not warrant the suspension of the teacher or the member of the academic staff, revoke such order.

- (ii) Notwithstanding anything contained in the terms of the contract of appointment or any other terms and conditions of service of the employees, the Board of Management in respect of teachers and other academic staff, and the appointing authority in respect of other employees shall have the power to remove a teacher or a member of the academic staff, or else the case may be, other employee on grounds of misconduct.
- (iii) Save as aforesaid the Board of Management or as the case may be, the appointing authority shall not be entitled to remove any teacher, member of the academic staff or either employee except for a good cause and after giving three months notice or on payment of three months salary in lieu thereof.
- (iv) No teacher, member of the academic staff or other employee shall be removed under clause (ii) or clause (iii) unless he has given a reasonable opportunity of showing cause against the action proposed to be taken in regard to him.

- (v) The removal of a teacher member of the academic staff or other employee shall take effect from the date on which the order of removal is made.

Provided that where the teacher, member of the academic staff or other employee is under suspension at the time of his removal, such removal shall take effect from the date on which he was placed under suspension.

- (vi) Notwithstanding anything contained in the foregoing provisions of this Statute, a teacher, member of the academic staff or other employee may resign.

(a) If he is a permanent employee, only after giving three months notice in writing to the Board of Management or the appointing authority, as the case may be, or by paying three months salary in the lieu thereof.

(b) If he is not a permanent employee, only after giving one month's notice in writing to the Board of Management or, as the case may be, the appointing authority or by paying one month salary in lieu thereof.

Provided that such resignation shall take effect only on the date on which the resignation is accepted by the Board of Management or the appointing authority, as the case may be.

8. Any dispute arising out of this contract shall be in accordance with the provisions of Clause (2) of Section (31) (reproduced below) :

"Any dispute arising out of a contract between the University and any employee shall at the request of the employee be referred to a Tribunal of Arbitration consisting of one member appointed by the Board of Management, one member nominated by the employee concerned and an umpire appointed by the Visitor. The decision of the Tribunal in such matters shall be final. Every such request shall be deemed to be a submission to arbitration upon the terms of this section within the meaning of the Arbitration Act, 1940."

9. The teacher may at any time, terminate his/her engagement by giving the Board of Management three months notice in writing provided that the Board of Management may waive the requirement of notice at its discretion.

10. On the termination of this engagement, from whatever cause, the teacher shall deliver up to the University all books, apparatus, records and such other articles belonging to the University as may be due from him/her.

11. In witness where of the parties hereto affix their hands and seal.

Signature

Designation

In the presence of

1. Signature

Designation

2. Signature

Designation

Signed and sealed on behalf of the University under the authority of the Board of Management by :

Signature

Designation

In the presence of

1. Signature

Designation

2. Signature

Designation

SCHEDULE

NAME OF TEACHER IN FULL

ADDRESS

DESIGNATION

SALARY Rs.

in the grade of

Note : The changes in grade, salary or designation should be briefly described.

Change of Designation

of Signature

or grade

of officer

of the University

Date of approval

of Board of

Management

Date from which

change takes

effect

Signature

teacher

APPENDIX-III

Form of contract for short-term appointment of Teachers

Memorandum of Agreement made this the day of
One thousand nine hundred and
between (hereinafter called the 'Teacher')
of the first part and the Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University being a body corporate constituted under the
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Act, 1994
(No. 58 of 1994) (hereinafter called the 'University') of the
second part.

It is hereby agreed as follows :

1. That the University hereby appoints to be a member of the teaching staff of the University with effect from and the said hereby accepts the engagement and undertakes to take such part in the activities of the University and perform such duties in the University as may be required by and in accordance with the said Act, Statutes and Ordinances framed thereunder, for the time being in force, whether the same relate to organisation of instruction, or teaching, or research or the examination of students or their discipline or their welfare, and generally to act under the direction of the authorities of the University.

2. That the said shall be a whole time teacher of the University and unless the contract is terminated by the Board of Management or by the teacher before the expiry of the term of his appointment of which he is appointed or is terminated as hereinafter provided, shall continue in the service of the University for the period of his appointment as aforesaid.

3. That the University shall pay during the continuance of his/her service a salary of Rs.
to a maximum salary of Rs.
Per mensem.

Provided that no increment shall be withheld or postponed save by a resolution of the Board of Management on a reference by the Vice-Chancellor to it and after the teacher has been given sufficient opportunity to make his/her written representation.

4. That the said teacher agrees to be bound by the Statutes, Ordinance, Regulations and Rules for the time being in force in the University, provided that no change in the terms and conditions of service of the teacher shall be made after his/her appointment in regard to designation, scale of pay increment and provident fund so as to adversely affect him/her.

5. That the teacher shall devote his/her whole-time to the service of the University and shall not, without the written permission of the University, engage directly or indirectly, in any trade or business whatsoever, or in any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached but this prohibition shall not apply to work undertaken in connection with the examination of Universities or learned bodies of Public Service Commissions, or to any literary work or publication or radio talk or extension lectures, or, with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

6. It is further agreed that his engagement shall not be liable to be determined before the expiry of the aforesaid period of appointment by the University except on the grounds specified and in accordance with the procedure laid down in clauses (1), (2), (3), (4), (5) and (6) of Statute 28 (reproduced below) :

- (i) Where there is an allegation of misconduct against a teacher, a member of the academic staff or other employee of the University, the Vice-Chancellor, in the case of the teacher or member of the academic staff, and the authority competent to appoint (hereinafter referred as the appointing authority) in the case of other employee, may, by order in writing, place such teacher, member of the academic staff or other employee, as the case may be, under suspension and shall forthwith report to the Board of Management the circumstances in which the order was made;

Provided that the Board of Management may, if it is of the opinion that the circumstances of the case do not warrant the suspension of the teacher or the member of the academic staff, revoke such order.

- (ii) Notwithstanding anything contained in the terms of the contract of appointment or any other terms and conditions of service of the employees, the Board of Management in respect of teachers and other academic staff, and the appointing authority in respect of other employees, shall have the power to remove a teacher or a member

of the academic staff, or as the case may be, other employee on grounds of misconduct.

- (iii) Save as aforesaid, the Board of Management or as the case may be, the appointing authority, shall not be entitled to remove any teacher, member of the academic staff or other employee except for a good cause and after giving three months' notice or on payment of three months' salary in lieu thereof.
- (iv) No teacher, member of the academic staff or other employee shall be removed under clause (ii) of (iii) unless he has been given a reasonable opportunity of showing cause against the action proposed to be taken in regard to him.
- (v) The removal of a teacher, member of the academic staff or other employee shall take effect from the date on which the order of removal is made :
- Provided that where the teacher, member of the academic staff or other employee is under suspension at the time of his removal, such removal shall take effect from the date on which he was placed under suspension.
- (vi) Notwithstanding anything contained in the forgoing provisions of this Statute, a teacher, member of the academic staff or other employee may resign :

- (a) if he is a permanent employee, only after giving three months' notice in writing to the Board of Management or the appointing authority, as the case may be, or by paying three months' salary in lieu thereof;
- (b) if he is not a permanent employee, only after giving one month's notice in writing to the Board of Management or, as the case may be, the appointing authority or by paying one month's salary in lieu thereof;

Provided that such resignation shall take effect only on the date on which the resignation is accepted by the Board of Management or the appointing authority, as the case may be.

7. Any dispute arising out of this contract shall be settled of in accordance with the provisions of clause (2) Section 31 (reproduced below) :

“Any dispute arising out of a contract between the University and any employee shall, at the request of the employee, be referred to a Tribunal of Arbitration consisting of one member appointed by the Board of Management, one member nominated by the employee concerned and an umpire appointed by the Visitor. Every such request shall be deemed to be a submission to arbitration upon the terms of this section within the meaning of the Arbitration Act, 1940.”

8. The teacher may, at any time, terminate his/her engagement by giving the Board of Management three months' notice in writing, provided that the Board of Management may waive the requirement of notice at its discretion.
9. On the termination of this engagement, from whatever cause, the teacher shall deliver up to the University all books, apparatus, records and such other articles belonging to the University as may be due from him/her.

In witness whereof the parties hereto affix their hands and seal.

Signature

Designation

In the presence of

- | | |
|--------------|--------------|
| 1. Signature | 2. Signature |
| Designation | Designation |

Signed and sealed on behalf of the University under the authority of the Board of Management by

Signature

Designation

In the presence of

- | | |
|--------------|--------------|
| 1. Signature | 2. Signature |
| Designation | Designation |

FIRST ACADEMIC ORDINANCES

Installment IV

CHAPTER-XV

EXAMINATIONS

[Section 5(II) read with Section No. 27(c)]

1. Examinations of the University other than the doctorate examinations shall be open to regular students i.e. candidates who have undergone a regular course of study in the University or in a College or Institution

admitted to the privileges of the University for a period specified for that course of study.

2. A candidate shall be deemed to have undergone a regular course of study for the period specified for that course if he/she has fulfilled the requirements as given below :

- All candidate must put in 75% of attendance for each semester/year as the case may be. The attendance should be reckoned in terms of number of working days only and not subject-wise.
- Principals of Colleges/Institutions and Heads of Departments of University are authorized to condone deficiency in attendance up to a maximum of 15% of the number of days for each semester/year, as the case may be, it being assumed that Colleges/Institution of the University will normally put in not less than 90/180 working days per semester/year, as the case may be.
- All candidates prior to their permission to appear at the examination should produce a certificate of attendance, clearance of dues from the Principal, Head of the College/Institution or Department as the case may be and also from the hostel/library/student welfare authorities.

3. The conditions regarding manner of applying, certificates to be sent alongwith the application, examination fees etc. shall be as may be prescribed from time to time.

4. Application for permission to appear at examination shall be submitted alongwith prescribed fees and certificates within the time limit may be prescribed. Candidate who fails to appear at an examination shall not be entitled to refund of the examination fee paid by him/her.

5. A candidate whose application fulfills all the requirements compliance of the rules, regulations and ordinance shall be given a number. Admission to the examination hall shall be only on the production the hall ticket bearing roll number.

6. Question papers of all examinations shall be set in English and candidate may answer in English or Hindi script.

Question papers of all languages shall be set and answered in respective languages.

Provided that candidates appearing at the examination in languages other than English/Hindi may be permitted to answer a part of the question paper in English and the rest in the language concerned.

Provided also that the Vice-Chancellor may permit the student to write any examination in any language mentioned in VIIIth Schedule of the Constitution of India in exceptional circumstances mentioned in writing.

7. All examination of the University shall be held at various Centres approved by the University.

8. The Schedule of various examination, probable dates of such examinations and publication of results thereof shall be as notified by the University.

CHAPTER-XVI

EXAMINERS

[Section 27(g) read with Statute 18(3)(a)]

1. Appointment of examiners shall be made by the Board of Management in accordance with the rules as may be framed by the Board of Management from time to time for selection an appointment of examiners.

2. The Board of Management may at any time cancel the appointment of any examiner on the recommendation of the Academic Council.

3. The Examiners appointed by the Board of Management will be of following categories;

- (i) Examiner who will set the question paper for various examinations and/or examinee the answer books.
- (ii) Examiners for the purpose of conducting the practical examination or viva-voce where necessary.

4. The duties of examiners shall be :—

- (a) to evaluate answer books,
- (b) to report upon the performance of examinee to the control examinations,
- (c) such other work as may be assigned to them by the Board of Management.

5. Question paper-setters shall ordinarily be from outside the University. Examiners shall be appointed for one year and shall be eligible for re-appointment.

6. There shall be a Board of Moderators for moderating the question paper in each Deptt./Centre.

Each Board shall have (i) a Chairman who shall be the Head of Deptt./Centre and (ii) two senior most teachers (other than the Head) of the Deptt./Centre.

7. The following persons shall not ordinarily be eligible for appointment as a examiners.

- (a) Persons with less than five years teacher experience in a University/College/Institution.
- (b) Members of the Board of Management except for special reasons which shall be recorded in writing.
- (c) Persons who have any of their relative appearing in the examination in question. A List of such relative shall be laid down by the Regulations.

8. The remuneration and allowances payable of examiners and Moderators appointed under clauses 1 & 6 of this Chapter shall be as indicated in the Appendix IV

and as modified by the Board of Management from time to time. Other scales of remuneration and allowances connected with examination work.

Shall be indicated in the Appendix V and as modified by the Board of management from time to time.

The total remuneration payable to any single person for all the examination work in an academic year shall not be more than Rs. 10,000.

All examiners shall carry out the instructions issued by the Board of management from time to time.

CHAPTER-XVII

EXAMINATION COMMITTEE

[Section 27(g) read with Statute 5(7)(e)]

1. There shall be an examination committee in the University.

2. The Committee shall consist of the following persons :

- | | | |
|--------|--|-------------------------------|
| (i) | The Vice-Chancellor or his Nominee | Chairman |
| (ii) | The Pro-Vice Chancellor | Member |
| (iii) | Three Deans of Schools, to be appointed by the Vice-Chancellor | -do- (Ex-Officio) |
| (iv) | Registrar | -do- |
| (v) | The Dean, Students Welfare | -do- |
| (vi) | Three Principals of College/ Institutions to be nominated by the Vice-Chancellor | -do- |
| (vii) | Two person appointed by the Academic Council | -do- |
| (viii) | The controller of Examinations | (Member Secretary Ex-Officio) |

3. The nominated members and the members appointed by the Academic Council shall hold Office for a period of three years and shall be eligible for renomination/ re-appointment.

4. Four members shall form quorum for a meeting of the Committee.

5. The Committee shall consider the consolidated results forwarded by the various Board of Examiners, approved the same and arrange for the declaration of all examination results in the University.

6. The Committee shall have power to award grace marks in deserving cases according to the rules framed in this regard.

7. The Committee shall submit a report every year to the Academic Council on the working of the University Examination and make recommendations for effecting improvement.

8. The Committee shall also make rules regarding disciplinary action to be taken against candidate using unfair means in examinations or contravening in any manner the rules for the conduct of examination.

9. It shall perform such other duties and functions as may be assigned to it by the Academic Council :

Provided that the Examination Committee may be delegate any or all of its powers mentioned above to any Office of the University.

CHAPTER-XVIII

AWARD OF DEGREES, DIPLOMA'S, CERTIFICATES AND OTHER DISTINCTIONS

[Section 27(d) read with Statute 29 & 30]

1. Degrees, Diplomas, Certificates and other Academic Distinctions shall be conferred by the University on the students who have been duly certified to be qualified for such award by the Academic Council.

2. The Board of Management may, on the recommendation of the Academic Council and by the majority of not less than two-thirds of the members present and voting, make, proposals to the Visitor for the conferment of Honorary Degrees :

Provided that in case of emergency, the Board of Management may, on its own, make such proposals. The following Honorary Degrees conferred upon a person on the ground that he/she is by reason of eminent position and attainments or by virtue of his/her contribution to learning or eminent services to the cause of education or society, a fit and proper person to receive such Degree(s):

Doctor of Laws (L.L.D.)

Doctor of Letters

Doctor of Literature

Doctor of Science (D.Sc.)

3. Honorary degrees shall be conferred only at a Convocation and may be taken in person or in absentia.

CHAPTER-XIX

CONVOCATION FOR CONFERRING DEGREES

(Statute 32)

1. A convocation for the purpose of conferring degrees shall ordinarily be held once in a year on such date and place as may be fixed by the Vice-Chancellor with prior approval of the Chancellor.
2. A special convocation for the purpose of conferring honorary degrees may also be held at such time and place as may be decided by the board of management.
3. The convocation shall consist of the body corporate of the university.
4. The chancellor shall, if, present, preside at the convocation of the university for conferring degrees in the absence of the chancellor, the Vice-Chancellor shall preside at the convocation.

5. Not less than four weeks notice shall be given by the registrar of all meetings of the convocation.

6. The registrar shall, with the notice, issue to each member of the convocation, programme of the procedure to be observed thereat.

7. (i) The Candidates who have passed their examinations in the year which the convocation is held shall be eligible to be admitted to the Convocation :

Provided that this will not be applicable to the First Convocation at which candidates of all the preceding years shall also be admitted their respective degrees:

Provided also that in case the Convocation could not be held in a particular year, the Vice-Chancellor shall be competent to admit candidates to the respective degrees without waiting for formal convocation but on payment prescribed fees.

(ii) Such recipients of degree shall, however, sign the usual exhortation which they are required to do while convocation ceremony is normally held :

Provided also that in case the Convocation is not held in a particular year, the Vice-Chancellor shall be competent to authorise admission of all those eligible candidates who so wish to obtain their degrees through a Convocation to the next Convocation and confer on them the respective degrees on payment of the prescribed fees:

Provided further that those who wish to obtain their degree in absentia when convocation is held regularly, may also do so after payment of prescribed fees.

8. A candidate for the degree must submit to the Registrar his/her application on or before the date prescribed for the purpose, for admission to the degree at the convocation in person, alongwith the prescribed fees.
9. Such candidates as are unable to present themselves in person at a Convocation shall be admitted to the degree in absentia by the Chancellor or in his/her absence by the Vice-Chancellor and their Diploma shall be given by the Registrar on application and payment of the prescribed fees.
10. The fees for admission to the degree at the Convocation in person shall be as prescribed from time to time.
11. Honorary degree shall be conferred only at the Convocation and may be taken in person or in absentia.
12. The presentation of the persons at the convocation on whom honorary degrees are to be conferred shall be made by the Vice-Chancellor or his nominee.
13. Candidates at the Convocation shall wear gowhs and hoods appropriate to their degrees as may be specified by executive orders. No candidate shall be

admitted to the Convocation who is not in proper academic costume as prescribed by the University.

14. For the award of degrees at the Convocation candidates present shall be formally presented to the Chancellor or in his/her absence to the Vice-Chancellor for admission to their respective degrees as follows :

The Deans of respective School will present candidates for the award of Doctor's, master's and Bachelor's degrees, in that order. The Principals of Colleges/Institutions, nominated for the purpose by the Vice-Chancellor will present the candidates, belonging to their Colleges/Institutions for the awards of Bachelor's degrees :

Provided that candidates belonging to different Schools, Colleges/Institutions shall be presented in the alphabetical order in which the names of such Schools, Colleges/Institutions may happen to occur.

The name of the recipients of medals and prizes shall be read by the Registrar or the person nominated by the Vice-Chancellor.

The Registrar or the person appointed for the purpose, will present the candidates for conferment of degrees in absentia.

Degree certificates shall be supplied to the candidate in a manner prescribed by the Vice-Chancellor after the Convocation is over.

15. The Chancellor, the Chief Reactor, the Chief Guest, the Vice-Chancellor, the Pro-Vice Chancellor, the Deans of Schools, the Directors, the Registrar, the Finance Officer, the Controller of the Examinations, the Heads of the Departments and the Members of the University authorities shall wear their special robes prescribed by the University and further procedure for the conduct of the Convocations shall be prescribed by the Executive orders.

APPENDIX-IV

SCALE OF REMUNERATION OF EXAMINATIONS

- | | |
|--|----------|
| 1. For examining D.Litt., LL.D or D.Sc. thesis
(Payable to each examiner) | Rs. 1000 |
| 2. For examining Ph.D. thesis
(Payable to each examiner) | Rs. 500 |
| 3. For conducting viva-voce examination of doctorate candidate
(Payable to each examiner) | Rs. 400 |
| 4. For examining M.Phil./LL.M. Thesis,
(Payable to examiner per candidate) | Rs. 300 |
| 5. For conducting viva-voce of M.Phil candidate
(Payable to each examiner per candidate) | Rs. 100 |

For M.Phil., M.Sc., Part I and II and other Master's degree and P.G. Diploma Examinations

- | | |
|---|---------|
| 6. For setting each question paper | Rs.500 |
| 7. For examining each answer-book
(with a minimum of Rs. 150) | Rs. 10 |
| 8. For examining each dissertation or project report excluding M.Phil/LL.M. | Rs. 100 |
| 9. For practical examination per candidate
(with a minimum of Rs. 150) | Rs. 10 |
| 10. For viva-voce examination per candidate
(with a minimum of Rs. 150) | Rs. 10 |

APPENDIX-V

SCALE OF REMUNERATION AND OTHER ALLOWANCES FOR EXAMINATION PURPOSES

Sl. No.	Category	Remuneration Recommended
1	2	3
1.	Center Suprentendents	Rs.150 per session
2.	Assistant Superintendent/Invigilators	Rs. 100 per session
3.	Members of Flying Squad/Observers	Rs.250 per session
4.	Clerical Assistant	Rs. 50 per 200 candidates Minimum: Rs. 50 Maximum: Rs. 300 per day
5.	Daftary/Helper	Rs. 30 per session
6.	Waterman	Rs. 30 per session
7.	General Arrangements	Rs. 50 per 100 candidates or part thereof (including preliminary arrangements calculated on the largest number of candidates and arrangements during the examination) who sat on any one session of the examination.
8.	Charges for sewing cloth bags for despatch of answer books	Rs. 7 per bag.
9.	Laboratory Assistant for Practicals	Rs. 50 per day
10.	Safai Karmachari	Rs. 10 per session
11.	Tabulation charges	Re. 1 per candidate subject to minimum of Rs. 100

1	2	3
12.	Coding/Decoding of answer books	25 paise per candidate subject to minimum of Rs. 50
13.	Conveyance Allowance	Rs. 25 per session to Group A Officers and Rs. 10 per session to other employees on examination duty.
14.	Chairperson, Board of Moderators/ Unfair Means Committee	Rs. 150 per meeting
15.	Members, Board of Moderators/ Unfair Means Committee	Rs. 100 per meeting

FIRST
ACADEMIC ORDINANCES
Instalment-V
CHAPTER - XX
LEAVE ADMISSIBLE TO TEACHERS OF THE
UNIVERSITY

INDEX

Clause No. Particulars

A - Permanent Teachers

1. Kinds of leave admissible
2. Casual Leave
3. Special Casual Leave
4. Duty Leave
5. Earned Leave
6. Half pay Leave
7. Commuted Leave
8. Extraordinary Leave
9. Leave not due
10. Study Leave
11. Sabbatical Leave
12. Maternity Leave
13. Special Disability Leave
14. Quarantine Leave
15. Vacation

B- Teachers Appointed on Probation

16. Teachers appointed on probation

C- Teachers Re-employed after Retirement

17. Teachers - Re-employed after retirement

D- Temporary teachers

18. Temporary Teachers.

E - Teachers Appointed on Contract Basis

19. Teachers appointed on contract basis

F - Honorary and Part - time Teachers

20. Honorary and part - time teachers

G - General

21. General conditions regarding grant of leave
22. Authorities empowered to sanction leave
23. Leave Salary
24. Cash payment in lieu of leave beyond the date of retirement or quitting of service
25. Making rules under this Ordinance
26. Appendix

**LEAVE ADMISSIBLE TO TEACHERS OF THE
UNIVERSITY**

(A) PERMANENT TEACHERS

1. KINDS OF LEAVE ADMISSIBLE :

The following kinds of Leave would be admissible to permanent teachers—

- (i) Leave treated as duty—
Casual Leave
Special Leave
Duty Leave
- (ii) Leave earned by duty—
Earned Leave
Half pay Leave
Commuted Leave
- (iii) Leave not earned by duty—
Extraordinary Leave
Leave not due
- (iv) Leave not debited to Leave account—
(a) Leave for academic pursuits
Study Leave
Sabbatical Leave/Academic Leave
(b) Leave on grounds of health—
Maternity Leave
Special disability Leave
Quarantine Leave

The Board of Management may, in exceptional cases, grant, for the reasons to be recorded, any other kind of leave, subject to such terms and conditions as it may deem fit to impose.

2. CASUAL LEAVE

(i) Casual leave is not earned by duty. Total Casual leave granted to a teacher shall not exceed eight/ten days in an academic year.

(ii) Casual Leave cannot be combined with any other kind of leave except special casual leave. It may be combined with holidays including Sundays. Holidays or Sundays falling within the period of casual leave shall not be counted as casual leave.

3. SPECIAL CASUAL LEAVE

(i) Special casual leave not exceeding ten days in an academic year may be granted to a teacher:—

- (a) to conduct examination of a University, Public Service Commission, Board of Examination or other similar bodies/institutes;
- (b) to inspect academic institutions attached to a Statutory Board etc.;
- (c) to participate in a literary, scientific or educational conference, symposium or seminar or cultural or athletic activities conducted by Bodies recognised by the University Authorities;
- (d) to do such other work as may be approved by the Vice-Chancellor as academic work.

Note - In computing the ten days leave admissible, the days of actual journey, if any, to and from the places where such conference/activity takes place will be excluded.

(ii) In addition, special casual leave to the extent mentioned below may, also be granted:—

- (a) to undergo sterilization operation (Vasectomy or Salpinagectomy) under Family Planning Programme. Leave in this case will be restricted to six working days.
- (b) to a female teacher who undergoes non-puerperal sterilization. Leave in this case will be restricted to fourteen days.

(iii) Special casual leave cannot be accumulated nor can it be combined with any other kind of leave except casual leave. It may be granted in combination with holidays.

4. DUTY LEAVE

(i) Duty leave not exceeding 14 days in a semester may be granted for:—

- (a) attending conferences/congresses/symposia/seminars and other activities of similar nature, on behalf of the University for where invitations are accepted with the prior approval of the University;
- (b) delivering lectures in Institutions and Universities at the invitation of such Institutions or Universities received by this University and accepted by the Vice-Chancellor;

(c) working in another Indian or foreign University, any other agency, institution or organisation when so deputed by the University, or for performing any other duty for the University;

(d) working on a delegation or committee appointed by the Govt. of India, State Governments, UGC, Universities or any other academic or public body;

(e) teachers deputed abroad under cultural/bilateral exchange programme in which it is conditioned that the teacher deputed will have to go on duty leave; and

(f) undertaking field works in India or abroad.

(ii) The leave may be granted on full pay. Provided that if the teachers receives a fellowship or honorarium or any other financial assistance beyond the amount needed for normal expenses, he will be sanctioned duty leave on reduced pay and allowances as per University regulations in this regard.

(iii) Duty leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave.

5. EARNED LEAVE

(1) Earned leave admissible to a teacher shall be 12 days per calendar year.

(2) (a) The leave account of teachers shall be credited in advance with earned leave of 12 days on the first January every year.

(b) If a teacher has availed of leave other than Casual leave, Special Casual leave or duty leave or the period of his absence has been treated as during the previous year, the credit to be afforded to his leave account shall be reduced by 1/30th of the period of such leave or absence subject to maximum of 12 days.

(c) The credit of earned leave for the calendar year in which a teacher is appointed/ceases to be in service shall be allowed at the rate of one day for each completed calendar month of service which he had rendered or is likely to rendered in that year.

(d) The credit of earned leave for the calendar year in which a teacher is due to retire or resigns from service shall be allowed at the rate of one day for each completed calendar month up to the date of retirement or resignation.

(e) When a teacher is removed or dismissed from service or dies while in service, credit of earned leave shall be allowed at the rate of one day per completed calendar month up to the end of the calendar month preceding the calendar month in which he is removed or dismissed from service or dies in service.

(3) A teacher shall also be entitled to earned leave at the rate of 1/3rd of period of vacation, if any, during which he is required to perform duty.

Provided that the teachers of the University shall be considered on duty upto a maximum of 30 days or less during the vacation wherever indicated for their having actively participated in the evaluation work of entrance examination during vacation.

(4) Earned leave at the credit of teacher shall not accumulate beyond 300 days. The maximum earned leave that may be sanctioned at a time shall not exceed 120 days. Earned leave exceeding 120 days may, however be sanctioned in the case of higher study or training or leave on medical certificate when the entire leave or a portion thereof is spent outside India.

Note—1. When a teacher prefixes and suffixes earned leave to vacation, the period of vacation shall be reckoned as leave in calculating the maximum amount of leave on average pay which may be included in the particular period of leave.

Note—2. In case where only a portion of the leave is spent outside India, the grant of leave in excess of 120 days shall be subject to the condition that the portion of the leave spent in India shall not in the aggregate exceed 120 days.

6. HALF PAY LEAVE

(1) The half pay leave account of every permanent teacher shall be credited with half pay leave in advance, in two instalments of ten days each on the first days of January and July of every calendar year. Such leave may be granted on medical certificates, private affairs or for academic purposes.

- (2) (i) The leave shall be credited to the said leave account at the rate of 5/3 days for each completed calendar month of service which he is likely to render in the half year of the calendar year in which the teacher is appointed.
- (ii) The credit for the half year in which a teacher is due to retire or resigns from the service shall be allowed at the rate of 5/3 days per completed calendar month upto the date of retirement or resignation.
- (iii) When a teacher is removed or is dismissed from service or dies while in service, credit of half pay leave shall be allowed at the rate of 5/3 days per completed calendar month upto the end of calendar month preceding the calendar month in which he is removed or dismissed from service or dies in service.

7. COMMUTED LEAVE

Commutated leave not exceeding half the amount of half pay leave due may be granted on medical certificate to a permanent teacher subject to the following conditions :

- (i) When commuted leave is granted, twice the

amount of such leave shall be debited against the half pay leave.

- (ii) No commuted leave shall be granted under this Ordinance unless the authority competent to sanction leave has reason to believe that the teacher will return to duty on its expiry.
- (iii) Where a teacher who has been granted commuted leave resigns from service or at his request is permitted to retire voluntarily without returning to duty, the commuted leave shall be treated as half pay leave and the difference between the leave salary in respect of commuted leave and half pay leave shall be recovered :

Provided that no such recovery shall be made if the retirement is by reason of ill health incapacitating the teacher for further service or in the event of his death.

- (iv) Half pay leave upto a maximum of 180 days may be allowed to be commuted during the entire service (without production of medical certificate) where such leave is utilised for an approved course of study certified to be in the University's interest by the leave sanctioning authority.

Note—Commutated leave may be granted at the request of the teacher even when earned leave is due to him.

8. EXTRAORDINARY LEAVE

(i) A permanent teacher may be granted extraordinary leave—

- (a) When no other leave is admissible; or
- (b) When other leave is admissible, the teacher applies in writing for the grant of extraordinary leave.

Provided, however, that save under provisions of sub-clauses (ii) to (iv) below, no extraordinary leave shall be granted to a teacher for holding an appointment or a fellowship outside the university.

- (ii) The Board of Management may grant on the request from the institution concerned and on application of the teacher extra ordinary leave to hold an appointment or a fellowship under a Govt., a University, a Research Institute or other similar important institution, if in the opinion of the Board of Management, such leave does not prejudice the interest of the University. This leave can be allowed only to a teacher who has been confirmed in the post held by him and has served the University for a period of at least two years provided that the Board of Management may grant exemption for the requirement of two years service in very exceptional cases. Provided

further that such leave shall not be granted until after the expiry of five years after return from a previous spell of extraordinary leave sanctioned under this sub-clause and sub-clause (iii) below. Provided further that the applicability of five years gap may not be applied in the case of faculty members who proceed on EOL upto one month and further that in case a faculty member proceeds on EOL for more than one month and less than one year he will not be eligible for grant of EOL for a period of three years and those who proceed on EOL for a period of one year or more the existing provision that he will not be eligible for grant of EOL for 5 years will apply.

The application for such leave shall be sent through the Dean of the School concerned and the latter shall give his recommendations taking into account the strength of teaching staff of the particular Centre/Department. Except in special cases, at no time more than 20% of the strength of teachers of a Centre/Department shall be allowed to be absent from the Centre on extraordinary leave study leave and/or sabbatical leave. Provided further that if there are four or less than four teachers in a Centre/Department, except in special cases, at no time more than one teacher of a Centre/Department shall be allowed to be absent from the Centre/Department on extraordinary leave.

In case of his failure to return to duty immediately at the end of the period of leave sanctioned to him the services of a teacher shall be liable to be terminated from the date of commencement of the period of leave granted to him. He shall also refund to the University pay and allowance, if any received by him during the leave (including other kinds of leave taken in continuation) sanctioned to him for the purpose.

- (iii) The Board of Management may also grant, at its discretion, extraordinary leave to a permanent teacher who has been selected for a teaching or research assignment in a University, a Research Institute or other similar important Institution provided he has served the university for a period of at least two years and the application had been sent through and forwarded by the University. The leave in such cases shall not exceed a maximum period of two years. Notwithstanding any other leave which may be due to a teacher the entire period for which the teacher holds the appointment outside the University shall be without pay. The period so spent shall count for seniority. The period shall not count for pensionary/contributory provident fund benefits unless are paid by the teacher or the foreign employer.

If the teacher does not resume his duties in the University at the end of the period of extraordinary leave granted to him, he shall be treated as having resigned the post held by him in the University.

- (iv) Subject to the provisions of sub-clause (vii) below, the total amount of extraordinary leave granted to a teacher under sub-clauses (ii) and (iii) above shall not exceed five years during his entire service.

Provided that the teachers of the University who are given career award will be eligible for grant of extraordinary leave for the period of award in addition to the above provisions on the condition that they stay on in the University during the period of this award.

- (v) Extraordinary leave shall always be without pay. Payment of allowances during the period of extraordinary leave shall be governed by the relevant rules.

- (vi) Extraordinary leave shall not count for increment except in the following cases :

- (a) Leave taken on medical certificate.
- (b) Cases where the Vice-Chancellor is satisfied that the leave was due to causes beyond the control of the teacher, such as inability to join or rejoin duty due to civil commotion or a natural calamity, provided the teacher has no other kind of leave to his credit.
- (c) Leave taken for prosecution of studies.
- (d) Leave granted to accept an invitation to a teaching post or fellowship or research curm-teaching post or an assignment for technical or academic work of importance.
- (vii) Extra-ordinary leave may be combined with any other leave except casual leave and special casual leave provided that the total period of continuous absence from duty on leave (including periods of vacation when such vacation is taken in conjunction with leave) shall not exceed three years except in cases where leave is taken on medical certificate. The total period of continuous absence from duty shall in no case exceed five years in all.
- (viii) The authority empowered to grant leave may commute retrospectively periods of absence without leave into extraordinary leave.

9. LEAVE NOT DUE

- (i) Leave not due may, at the discretion of the Vice-chancellor be granted to a permanent teacher for a period not exceeding 360 days during the entire service, out of which not more than 90 days at a time and 180 days in all may be otherwise than on medical certificate. Such leave shall be debited against the half pay leave earned by him subsequently.

- (ii) Leave not due shall not be granted unless the Vice-Chancellor is satisfied that as far as can reasonably be foreseen, the teacher will return to duty on the expiry of the leave and earn the leave granted.

- (iii) A teacher to whom 'Leave not due' is granted shall not be permitted to tender his resignation from service

so long as the debit balance in his leave account is not wiped off by active service, or he refunds the amount paid to him as pay and allowances for the period not so earned. In a case where retirement is unavoidable on account of reason of ill health incapacitating the teacher for further service, refund of leave salary for the period of leave to be earned may be waived by the Board of Management.

Provided further the Board of Management may, in any other exceptional case, waive, for reasons to be recorded, the refund of leave salary for the period of leave still to be earned.

10. STUDY LEAVE

(i) (a) Study leave may be granted to a permanent whole-time Professor/Reader with not less than three years continuous service to pursue a special line of study or research or to make a special study of the various aspects of University/Organisation and methods of education, if the university is likely to benefit by the course of study or programme of research which the applicant wishes to undertake.

(b) Study leave may be granted to a permanent whole-time Lecture with not less than two years continuous service, to pursue a special line of study of research directly related to his work in the University/Organisation and methods of education giving full plan of work.

Explanation :

In computing the length of service, the time during which a person was on probation or engaged as a research assistant may be reckoned provided.

- (a) the person is a teacher on the date of the application; and
- (b) there is not break in service.

(ii) Study leave shall be granted on the recommendation of the Committee for Advanced Studies and Research. The leave shall not be granted for more than two years save in very exceptional cases in which the Board of Management is satisfied that such extension is unavoidable on academic grounds and necessary in the interest of the University. The period of study leave shall in no case exceed three years.

(iii) Study leave shall not be granted to a teacher who is due retire within three years of the date on which he is expected to return to duty after the expiry of study leave.

(iv) Study leave may be granted more than once provided that not less than five years have elapsed after the teacher returned to duty on completion of earlier spell of study leave, the teacher shall indicate the work done during the period of earlier leave as also give details of work to be done during the proposed spell of study leave.

(v) No teacher who has been granted study leave shall be permitted to alter substantially the course of study or the programme of research without the permission of

the Board of Management. When the course of study falls short of the study leave sanctioned, the teacher shall resume duty on the conclusion of the course of study unless the previous approval of the Board of Management to treat the period of shortfall as ordinary leave has been obtained.

(vi) (a) Subject to the provisions of sub-clause (vii) and (viii) below, study leave may be granted on full pay for the first year and half pay for the second year and no pay shall be admissible thereafter to Professors and Readers. The Lecturers granted study leave would be entitled to continue to draw their total emoluments for the duration of the study leave as are applicable to teacher granted fellowships under the Faculty improvement programme of the UGC except the living expenses allowance depending on U.G.C. norms.

Note : The term 'pay' refer to average pay and shall be calculated as mentioned in the relevant ordinance.

(b) The teacher shall not ordinarily be intitled to house rent allowance or city compensatory allowance during the period of study leave. Provided that the Vice-Chancellor may in view of the special circumstances of a case, sanction the payment of such allowances in the part or in full.

(vii) The amount of scholarship, fellowship or other financial assistance that a teacher granted study leave has been awarded will not preclude his being granted study leave with pay and allowances but the scholarship etc., so received shall be taken into account in determining the pay and allowances on which the study leave may be granted.

(viii) If a teacher, who is granted study leave is permitted to receive and retain any remuneration in respect of part-time employment during the period of study leave, he shall ordinarily not be granted any study, Leave Salary, but in cases, where the amount of remuneration received in respect of part-time employment is not considered adequate, the Board of Management may determine the study leave salary payable in each case.

Note : It shall be the duty of the teacher granted study leave to communicate immediately to the University about financial assistance in any form received by him during the course of study leave from any person or institution whatsoever.

(ix) Subject to the maximum period of absence from duty on leave not exceeding three years, study leave may be combined with earned leave, half pay leave, extraordinary leave or vacation provided that the earn leave at the credit of the teacher shall be availed of at the commencement of the study leave. When study leave is taken in continuation of a vacation, the period of study leave shall be deemed to begin to run on the expiry of the vacation.

(x) The teachers granted study leave will be also be sanctioned necessary increment(s) as and when due. However, the amount of emoluments payable to the teachers on study leave shall be reduced subject to the provisions of sub-clauses (vii) and (viii) above.

(xi) Study leave shall count as service for pension/ contributory provident fund provided the teacher rejoins the University on the expiry of his study leave and serves for the period for which bond has been executed.

(xii) Study leave granted to a teacher shall be deemed to be cancelled, in case it is not availed of within 12 months of its sanction. Provided that where study leave granted has been so cancelled the teacher may apply again for such leave.

(xiii) A teacher availing of study leave shall undertake that he shall serve the University continuously for double the period of study leave or for a period of three years whichever is less, to be calculated from the date of resuming duty after expiry of the study leave.

(xiv) A teacher :—

- (a) who is unable to complete his studies within the period of study leave granted to him or
- (b) who fails to rejoin the service of the University on the expiry of his study leave, or
- (c) who rejoins the University but leaves the service without completing the prescribed period of service after rejoining the service, or
- (d) who within the said period is dismissed or removed from service by the University.

shall be liable to refund to the University the amount of leave salary and allowances and other expenses, incurred on the teacher or paid to him or on his behalf in connection with the course of study.

Provided that if a teacher has served the University for a period of not less than half the period of service under the Bond on return from study leave, he shall refund to the University half of the amount calculated as above. In case the teacher has been granted study leave without pay and allowance, he shall be liable to pay the University an amount equivalent to his four month pay and allowances last drawn as well as other expenses incurred by the University during the course of study.

Explanation :

If a teacher asks for extension of study leave and is not granted the extension but does not rejoin on the expiry of the leave originally sanctioned, he will be deemed to have failed to rejoin the service on the expiry of his leave for the purpose of recovery of the dues under this ordinance.

(a) Notwithstanding the above, the Board of Management may order that nothing in this Ordinance shall apply to a teacher who within the prescribed period of service under the bond is permitted to retire from service on medical grounds. Provided further that the Board of Management may, in any other exceptional case, waive or reduce for reasons to be recorded, the amount refundable by a teacher under this Ordinance.

(xv) After the leave has been sanctioned the teacher shall, before availing of the leave, execute a bond in favour of the University binding himself for the fulfilment of the conditions laid down in sub-clauses (xiii) and (xiv) above and give security of immovable property to the satisfaction of the Finance Officer or a Fidelity Bond of an insurance Company, or a Guarantee by a Scheduled Bank or furnish security of two permanent teachers for the amount which might become refundable to the University in accordance with sub clauses above.

(xvi) The teacher shall submit to the Registrar six monthly reports of progress in his studies from his supervisor or the Head of the Institution. This report shall reach the Registrar within one month of the expiry of every six months of the study leave. If the report does not reach the Registrar within the time specified, the payment of leave salary may be deferred till the receipt of such report.

11. SABBATICAL LEAVE

(i) Permanent whole-time teachers of the University who have completed three years of service in case of Professor, five years of service in case of Reader, ten years of service in case of Lecturer may be granted sabbatical leave to undertake study or research or other academic pursuits solely for the object of increasing their proficiency and usefulness to the University. This leave shall not be granted to a teacher who has less than one year of service in the University to retire.

(ii) A teacher shall, during the period of sabbatical leave be paid full pay and allowances (subject to the prescribed conditions being fulfilled) at the rates applicable for leave.

The University shall not, however, fill up his post or make other alternative arrangements involving additional expenditure.

(iii) A teacher on sabbatical leave shall not take up during the period of this leave, any regular appointment under another organisation in India or abroad. He may, however, be allowed to accept a fellowship or research scholarship or ad-hoc teaching and research assignment with honorarium or any other form of assistance, other than a regular employment in an institution of advanced studies, provided that in such cases the Board of Management may, if it so desires, sanction sabbatical leave on reduced pay and allowances.

(iv) During the period of sabbatical leave the teacher shall be allowed to draw the increment on the due date. The period of leave shall also count as service for purpose of pension/contributory provident fund provided the teacher rejoins the University on the expiry of his leave. Sabbatical Leave will be allowed only twice during the entire service period. No Sabbatical leave will be allowed within six years of availing of first sabbatical leave.

Note :

1. The programme to be followed during sabbatical leave shall be submitted to the University for approval along with the application for grant of leave.

2. On return from leave the teacher shall report to the University the nature of studies, research or other work undertaken during the period of leave.

12. MATERNITY LEAVE

(i) Maternity leave on full pay may be granted to a woman teacher with less than two surviving children for a period of 135 days from the date of commencement of leave.

(ii) Maternity leave may also be granted in case of miscarriage, including abortion, induced under Medical Termination of Pregnancy Act, 1971, subject to the condition that the leave applied for does not exceed six weeks and the application for leave is supported by a medical certificate.

(iii) Maternity leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave but any leave applied for in continuation of maternity leave may be granted if the request is supported by a medical certificate.

(iv) Notwithstanding the provision contained in clause 12 (iii) any leave (including commuted leave for a period not exceeding sixty days, applied for in continuation of maternity leave) may be granted without production of medical certificate.

(v) Leave in further continuation of the leave granted under clause 12 (iv) may be granted on production of a medical certificate for the illness of the female University teacher. Such leave may also be granted in case of illness of a newly born baby, subject to production of medical certificate to the effect that the condition of the ailing baby warrants mother's personal attention and that her presence by the baby's side is absolutely necessary.

(vi) Paternity leave for a period of 15 days during the confinement of his wife may be granted to a male teacher with less than two surviving children. During the period of such leave, he shall be paid leave salary equal to the pay drawn immediately before proceeding on leave. Paternity leave shall not be debited against the leave account and may be combined with any other kind of leave (as in case of maternity leave). It may not be normally be refused under any circumstances.

13. SPECIAL DISABILITY LEAVE

(A) SPECIAL DISABILITY LEAVE FOR INJURY INTENTIONALLY INFLICTED

(i) Special disability leave may be granted to a teacher who is disabled by injury intentionally inflicted or caused in, or in consequence of the due performance of his official duties or in consequence of his official position.

(ii) Such leave shall not be granted unless the disability manifested in itself within three months of the occurrence to which it is attributed and the person disabled acted with due promptitude in bringing it to notice.

Provided that the authority competent to grant leave may, if it is satisfied as to the cause of the disability, permit leave to be granted in cases where the disability manifested

itself more than three months after the occurrence of its cause.

(iii) The period of leave granted shall be such as is certified by an authorised Medical attendant and shall in no case exceed 24 months.

(iv) Special disability leave may be combined with leave of any other kind.

(v) Special disability leave may be granted more than once if the disability is aggravated or re-manifests in similar circumstances at a later date but not more 24 months of such leave shall be granted in consequence of any one disability.

(vi) Special disability leave shall be counted as duty in calculating service for pension and shall not, except the leave granted under the provision to clause (b) of sub-clause (vii) of this Ordinance be debited against the leave account.

(vii) Leave salary during such leave shall.

(a) for the first 120 days of any period of such leave including a period of such leave granted under sub-clause (v) above the equal to leave salary while on earned leave; and

(b) for the remaining period of any such leave, be equal to leave salary during half pay leave.

Provided that a member of the staff, may at his option, be allowed leave salary as in sub clause (a) above for period not exceeding another 120 days, and in that event the period of such leave shall be debited to his half pay leave account.

B. SPECIAL DISABILITY LEAVE FOR ACCIDENTAL INJURY

(viii) The provisions in part (A) of this Clause shall apply also to a teacher who is disabled by injury accidentally incurred in, or in consequence of the due performance of his official duties or in consequence of his official position, or by illness incurred in the performance of any particular duty which has the effect of increasing his liability to illness or injury beyond the ordinary risk attaching to the post which he holds.

(ix) The grant of special disability leave in such cases shall be subject to the further conditions:—

(a) that the disability, if due to disease, must be certified by an authorised medical attendant to be directly due to the performance of the particular duty;

(b) that, if the teacher has contracted such disability during service, it must be, in the opinion of the authority competent to, sanction leave, exceptional in character;

(c) that the period of absence recommended by an authorised medical attendant may be covered in part by leave under the clause and

in part by any other kind of leave, and that the amount of special disability leave granted on leave salary equal to that admissible on earned leave shall not exceed 120 days.

14. QUARANTINE LEAVE

- (i) Quarantine leave is leave of absence from duty necessitated in consequence of the presence of an infectious disease in the family or household of a teacher.
- (ii) Quarantine leave may be granted on medical certificate for a period not exceeding 21 days. In exceptional cases this limit may be raised to thirty days. Any leave necessary for quarantine purposes in excess of this period shall be treated as ordinary leave. Quarantine leave may be combined with earned leave, half pay leave or extraordinary leave. A teacher on quarantine leave is not treated as absent from duty and his pay is not affected.

15. VACATION

- (i) Vacation may be taken in combination with any kind of leave except casual and special casual leave provided that vacation shall not be both prefixed and suffixed to leave.
- (ii) Except in special circumstances vacation and earned leave taken together shall not extend beyond one semester.
- (iii) When a vacation falls between two periods of leave so as to result in a continuous period of absence from duty during the entire period, such vacation shall be treated as part of the leave.
- (iv) For the vacation period, a teacher shall be entitled to the same pay as when on duty. A teacher will, however, be entitled only to half of such pay if he has given notice of resignation and the period of such notice expires during vacation or within one month from the last pay thereof.

16. TEACHERS APPOINTED ON PROBATION

A teacher appointed as a probationer against a substantive vacancy and with definite terms of probation shall during the period, of probation be granted leave which would be admissible to him if he held his post substantively otherwise than on probation. If for any reason it is proposed to terminate the services of probationer, any leave granted to him should not extend beyond the date on which his services are terminated by the orders of the Board of Management. On the other hand, a teacher appointed "on probation" to a post not substantively vacant to assess this suitability to the post, shall until he is substantively confirmed, be treated as a temporary teacher for purposes of grant of leave. If a person in the permanent service of the University is appointed "on probation" to a higher post he shall not during probation, be deprived of the benefit of leave rules applicable to his permanent post.

17. TEACHER RE-EMPLOYED AFTER RETIREMENT

In the case of a teacher re-employed after retirement the provisions of these ordinance shall apply as if he had entered service for the first time on the date of his re-employment. Re-employed pensioners who are treated as new entrants in the matter of leave may also be granted terminal leave under sub-clause 12 of the clause 21 below. Subject to the condition that they will not be entitled to draw their pension during the terminal leave if the pension was held in abeyance during the period of re-employment.

18. TEMPORARY TEACHERS

Temporary teachers shall be governed by the provisions of part (A) of this ordinance subject to the following conditions and exceptions :

(1) Earned Leave

- (a) A temporary teacher shall be entitled to earned leave like a permanent teacher as follows :

- (i) 1/30th of the period actual service including vacation plus.
- (ii) 1/3rd of the period, if any, during which he is required to perform duty during vacation.

(2) Half pay leave—

No half pay leave may be granted to a temporary teacher unless the authority competent to sanction leave has reason to believe that the teacher will return to duty on the expiry of such leave.

(3) Commuted leave—

Temporary teachers shall not be entitled to commute any portion of the half pay leave.

(4) Extraordinary leave—

In the case of a temporary teacher the duration of extraordinary leave on any occasion shall not exceed the following limits—

- (a) Three months at a time;
- (b) Six months in cases where the teacher has completed three years continuous service and the leave application is supported by a medical certificate;
- (c) Eighteen months where the teacher is undergoing treatment in a recognised hospital for tuberculosis, cancer or leprosy;
- (d) (i) 24 months in cases where the leave is required for prosecuting studies, certified to be in the University interest, provided that the teacher has completed three years continuous service on the date of commencement of extraordinary leave. in case, where this condition is not satisfied, extraordinary leave to this extent may be sanctioned in continuation of any other kind of leave due and applied for (including three months extraordinary leave under (a) above, if the teacher completes three years continuous service on the date of expiry or such leave).
- (ii) When a temporary teacher fails to resume duty on the expiry of the maximum period of extraordinary leave granted to him or where a

teacher who is granted a lesser amount of leave remains absent from duty for any period which together with the extraordinary leave granted exceeds the limit up to which he could have been granted such leave as under (i) above, he shall unless the Board of Management, in view of the exceptional circumstances of the case otherwise determines, be deemed to have resigned his appointment and shall accordingly cease to be the University employee.

- (5) Leave not due, study leave and sabbatical leave—

Temporary teachers shall not be entitled for the grant of leave not due, study leave and sabbatical Leave.

- (6) Vacation—

- (i) A teacher who is appointed as a temporary measure shall be entitled to pay for the following summer vacation only if he joins duty within two months of the beginning of the academic year and has worked continuously and satisfactorily from the date of joining up to the last working day of the session.
- (ii) In other cases, the vacation salary may be paid to the teacher, if the temporary appointment continued for a part of whole of the next academic year and the teacher joins on the opening day and has also served on the last working day before the vacation.

(E) TEACHER APPOINTED ON CONTRACT BASIS

Teacher appointed on contract basis shall be entitled to leave as under :

19. (i) Earned leave/Half pay leave/Casual Leave as admissible to whole time temporary teachers of the University.

- (ii) (a) In the case of contract appointments for one year or less, no Extra-ordinary leave;
- (b) In the case of contract appointments for more than one year but not more than 5 years, extraordinary leave as admissible to temporary teachers subject to the condition that the total period of extraordinary leave during the entire contract period shall not exceed 90 days.
- (c) Where the contract appointment, is for an indefinite period or is for more than 5 years, extraordinary leave as admissible to whole time temporary teachers.

20. (F) HONORARY AND PART TIME TEACHERS

Honorary and part-time teachers of the University shall be entitled to leave on the same terms as are applicable to whole time temporary

teachers in the University.

21. (G) GENERAL

General Conditions:

- (1) Leave how earned:

Leave is earned by duty only. The period spent in foreign service counts as duty.

If contribution towards leave salary is paid for such period.

- (2) Right to leave:

- (a) Leave cannot be claimed as a matter of right. Leave of any kind may be refused or revoked by the competent authority empowered to grant it without assigning any reason, if the authority considers such action to be in the interest of the University.

- (b) No leave shall be granted to a teacher when a competent authority has decided to dismiss, remove or compulsorily retire from service nor shall any leave be granted to a teacher when he is under suspension.

- (3) Maximum period of absence from duty on leave:

- (a) No teacher shall be granted leave of any kind for a continuous period exceeding five years.
- (b) Where a teacher does not resume duty after remaining on leave for a continuous period of five years or where a teacher after the expiry of his leave remains absent from duty, otherwise that on foreign assignment or on account of suspension, for any period which together with the period of leave granted to him exceeds five years, he shall, unless the Board of Management in view of the exceptional circumstances of the case otherwise determines, be removed from service after following the prescribed procedure.

- (4) Application for leave:

Leave should always be applied for in advance and the sanction of the competent authority be with possible reasons obtained before it is availed of except in cases of emergency and for satisfactory reasons.

Note:—Faculty member should not leave station without informing to competent authority/or till the leave is sanctioned by the authority.

- (5) Commencement and termination of leave:

- (a) Leave ordinarily begins from the date on which leave as such is actually availed of and ends on the day the teacher resumes his duty.
- (b) Sundays and other recognised holidays may be prefixed and or suffixed to leave with the permission of the authority competent to sanction. The vacation may be combined with leave subject to the provisions of ordinance 5, 8 and 14.

- (6) Rejoining of duty before the expiry of the leave:

- (a) A teacher on leave may return to duty before the expiry of the period of leave granted to him if he is permitted to do so by the authority which sanctioned him the leave.
- (b) Notwithstanding anything contained in (a) above, a teacher on leave preparatory to retirement shall be precluded from withdrawing his request for permission to retire and from returning to duty, save with the consent of the Board of Management.

(7) Leave on medical grounds to be supported by medical certificates.

A teacher who applies for leave on medical grounds shall support his application with a medical certificate from an Authorised Medical Officer of the University or where no Such Medical officer has been appointed, from a Registered Medical Practitioner. The authority competent to sanction leave may, however, require the applicant to appear before a Medical Board. Leave or extension of leave on medical certificate shall not be granted beyond the date on which a teacher is pronounced by a Medical Officer or Board to be permanently incapacitated for further service.

(8) Rejoining duty on return from leave on medical grounds :

No teacher who has been granted leave (other than casual leave) on medical grounds shall be allowed to return to duty without producing a medical certificate of fitness.

(9) Employment during leave;

A teacher on leave shall not, without the written permission of the University, engage directly or indirectly in any trade or business whatsoever or in any private tuition or other work to which any emolument or honorarium is attached but this prohibition shall not apply to work undertaken in connection with the examination of a University, Public Service Commission, Board of Education or similar Bodies. Institutions or any literary work or publication or radio or extension lectures or with the permission of the Vice-Chancellor, to any other academic work.

The leave salary of a teacher who is permitted, to take any employment during leave shall be subject to such restrictions as the Board of Management may prescribe.

(10) Absence without leave or overstay of leave;

A teacher who abstains himself without leave or remains absent without leave after the expiry of the leave granted to him, shall be entitled to no leave allowance or salary for the period of such absence, such period shall be debited against his leave account as leave without pay unless his leave is extended by

the authority empowered to grant the leave.

Wilful absence from duty may be treated as misconduct.

(11) Leave beyond the date of retirement;

- (a) No leave shall be granted beyond the date on which a teacher must compulsorily retire. Provided that if, insufficient time before the date of retirement on superannuation. A teacher has been in the interest of the university, denied in whole or in part any leave which was due to him and applied for as preparatory to retirement then he may be granted after the date of superannuation subject to a maximum of 120 days. This limit may be extended upto 180 days if the entire leave or any portion thereof is spent outside India. Provided that when earned leave exceeding 120 days is granted under this Ordinance, the period of such leave spent in India shall not in the aggregate exceed 120 days. The leave so granted including the leave granted to him between the date from which the leave preparatory to retirement was to commence and the date of retirement, shall not exceed the amount of leave preparatory to retirement actually denied, the half pay leave, if any, applied for as preparatory to retirement and denied in the exigencies of the University service may be exchanged with earned leave to the extent such leave was earned between the date from which the leave preparatory to retirement was to commence and the date of retirement.

(b) Provided further that a teacher :

- (i) who after having been under suspension is reinstated within 120 or 180 days, as the case may be, preceding the date of his retirement on superannuation and was prevented by reason of having been under suspension from applying for leave preparatory to retirement, shall be allowed to avail of such leave as he was prevented from applying, subject to a maximum of 120 or 180 days as the case may be, reduced by the period between the date of reinstatement and the date of retirement.
- (ii) Who attained the age of superannuation while under suspension and was thus prevented from applying for leave preparatory to retirement, shall be allowed to avail of the leave to his credit, subject to a maximum of 120 days or 180 days, as the case may be, after termination of proceeding as if it had been refused as aforesaid, if in the opinion of the authority competent to order reinstatement, he has been fully exonerated and the suspension was wholly unjustified. Provided further that a teacher whose service has been extended in the interest of the University beyond the date of his superannuation may be granted leave as under :

During the period of extension any leave due in

respect of the period of such extension and to the extent necessary, earned leave which would have been granted to him under sub-clause (a) above, had he retired on the date of superannuation.

Explanation :

In determining the quantum of earned leave that could accumulate during the period of extension, the leave, if any, admissible under sub-clause (a) shall also be taken into account.

(i) After the expiry of the period of extension :

(a) the earned leave which could have been granted to him under sub-clause (a) above had he retired on the date of superannuation, diminished by the amount of such leave as was availed of during the period of extension; and

(b) Earned leave earned during the period of extension and formally applied for as leave preparatory to retirement in sufficient time before the date of final cessation of his duties and refused in the interest of the University.

Note—A teacher who avails himself of the refused leave in full or in part immediately after the date of his superannuation or the expiry of extension of service will be deemed for purposes other than pensionary contributory provident fund benefits and lien, to be in service till the expiry of the refused leave. He will retire and become eligible for all pensionary benefits as due to him on the date of superannuation (or on such other later date if any extension of service is granted) from the date of expiry of such leave only.

12. Conversion of one kind of leave to another:

(a) At the request of the teacher concerned, the University may convert retrospectively any kind of leave including extraordinary leave into a leave of different kind which was admissible to him at the time the leave was originally taken, but he cannot claim such conversion as a matter of right.

(b) If one kind of leave is converted into another, the amount of leave salary and the allowances as admissible shall be recalculated and arrears of leave salary and allowances paid withdrawn recovered as the case may be.

13. Increment during leave :

If increment of pay falls during any leave other than casual leave, special casual leave, duty leave, study leave or sabbatical leave, the effect of increase of pay will be given from the date of the teacher resumes duty without prejudice to the normal date of his increment, except in those cases where the leave does not count for increment.

14. Leave Year :

For the purpose of these Ordinances, unless otherwise specified the term 'year' shall mean an academic year running from the commencement of the academic

session to the end of the academic session.

22. AUTHORITIES EMPOWERED TO SANCTION LEAVE.

The authorities specified in column (2) of the table below, are empowered to sanction leave to the extent shown in column (3) thereof. Cases for sanction of leave in excess of these limits or of leave not mentioned below shall be submitted to the Board of Management. Before sanctioning the leave, the sanctioning authority shall ensure that leave asked for is admissible and is at the credit of the teacher concerned.

Kind of leave of	Sanctioning Authority	Extent of Power
(i) Casual/special casual Leave to		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Full
(b) Head of the	Deans of School Depts./Centre	Full
(c) Other teachers	Head of the Centres/Deptt.	Full
(ii) Duty leave to—		
Deans of Schools	Vice-Chancellor	Full
Other teachers	Dean Vice-Chancellor	Upto 10 days Beyond 10 days
(iii) Earned Leave/Half pay Leave/Com-muted Leave and Maternity leave to—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor	Full
(b) Heads of Centres/Depts.	Deans of Schools	Upto 90 Days
	Vice-Chancellor Beyond 90 days	
(c) Other teachers	Dean of School	Full
(iv) Extra-ordinary leave—		
(a) Deans of Schools	Vice-Chancellor Board of Management	Upto 90 days Full
(b) Other teachers	Deans of Schools Vice Chancellor Board of Management	upto 30 days upto 90 days Full.

23. LEAVE SALARYS

- (1) A teacher granted casual leave or special casual leave is not treated as absent from duty and his pay is not intermitted. During duty leave, study leave and sabbatical leave, a teacher will draw.
- (2) A teacher on earned leave is entitled to leave salary equivalent to the pay drawn immediately before proceeding on leave.
- (3) A teacher on commuted leave is entitled to leave salary equal to the amount admissible under sub-clause 23(2).

- (4) A teacher on half pay leave or leave not due is entitled to leave salary equal to half the amount specified in sub-clause 23 (2).
- (5) A teacher on extraordinary leave shall not be entitled to any leave salary.
- (6) A teacher on special Disability leave is entitled to leave salary.
- (7) A teacher on Maternity leave and Quarantine leave is entitled to draw pay at the time of proceeding on leave.
- (8) Payment of dearness, house rent and city compensatory allowances during leave shall be governed by the provisions of the rules regarding the payment of those allowances.
- (9) A teacher who is granted leave beyond the date of compulsory retirement/or quitting of service as the case may be, as provided under ordinance 21 (11) shall be entitled during such leave, leave salary as admissible under this ordinance reduced by the amount of pension and pensionary benefits equivalent of other retirement benefits.
- (10) Where such teacher is re-employed during such leave, the leave salary shall be restricted to the amount of leave salary admissible while on half pay leave and further reduced by the amount of pension and pension equivalent of other retirement benefits. Provided that it shall be open to the University teacher not to avail himself of the leave but to avail of full pension.

If during such re-employment he is granted leave earned by him during period or re-employment, the leave salary shall be based on the pay drawn by him exclusive of the pension and pension equivalent of other retirement benefits.

24. Cash payment in lieu of leave beyond the date of retirement or quitting of service.

(i) No leave shall be granted to a teacher beyond :

- (a) the date of his retirement, or
- (b) the date of his final cessation of duties, or
- (c) the date on which he retires by giving notice to University or he is retired by University by giving him notice or pay and allowances in lieu of such notice in accordance with the terms and conditions of his service, or
- (d) the date of his resignation from service.

(ii) Retirement on Superannuation :

Where a teacher retires on attaining the normal age prescribed for retirement under the terms and conditions governing his service, the authority competent to grant leave shall *suo-motu* issue an order granting cash equivalent of leave salary for earned, if any, at the credit of the teacher on the date of his retirement, subject to a maximum of 300 days.

(iii) Retirement while under suspension :

A teacher, who retires from service on attaining the age of retirement while under suspension, shall become

eligible for the benefit of cash equivalent of earned leave that was at his credit on the date of his retirement, on conclusion of the proceedings against him, if the authority competent to re-instate him in service holds that the suspension was wholly unjustified.

(iv) Retirement before Superannuation :

A teacher who retires or is retired from service in the manner mentioned in clause 24 (1) (c) may be granted *suo-motu*, by the authority competent to grant leave, cash equivalent on leave salary in respect of earned leave at his credit subject to maximum of 300 days and also in respect of all the half pay leave at his credit provided this period does not exceed the period between the date on which he so retires or is retired from service and the date on which he would have retired in the normal course after attaining the age prescribed for retirement under the terms and conditions governing his service. The cash equivalent shall be equal to the leave salary as admissible for earned leave and/or equal to the leave salary as admissible for half pay leave plus dearness allowance admissible on that leave salary for the first 300 days, at the rates in force on the date the University employee so retires or is retired from service. The pension and pension equivalent of other retirement benefits and *ad-hoc* relief/graded relief on pension shall be deducted from the leave salary paid for the period of half pay leave, if any, for which the cash equivalent is payable. The amount so calculated shall be paid in one lump-sum as a one time settlement. No House Rent Allowance or City Compensatory Allowance shall be payable :

Provided that if leave salary for the half pay leave component falls short of pension and other pensionary benefits, cash equivalent of half pay leave shall not be granted :

Provided further that a teacher who is retired by University by giving him pay and allowances in lieu of notice, cash equivalent of leave salary shall be allowed only for the period of leave excluding that period for which pay and allowances in lieu of notice have been allowed.

(v) Resignation/Termination/Re-employment :

(a) Termination :

Where the services of a teacher are terminated by notice or by payment of pay and allowances, in lieu of notice, or otherwise in accordance with the terms and conditions of his appointment, he may be granted, *suo-motu* by the authority competent to grant leave, cash equivalent in respect of earned leave at his credit on the date on which he ceases to be in service subject to a maximum of 300 days.

(b) Resignation :

If a teacher quits service, he may be granted *suo-motu* by the authority competent to grant leave cash equivalent in respect of earned leave at his credit on the date of cessation of service, to the extent of half of such leave at his credit, subject to a maximum of 120 days.

(vi) Re-employment after retirement :

A teacher who is re-employed after retirement may on termination of his re-employment be granted, *suo-motu*, by the authority competent to grant leave, cash equivalent in respect of earned leave at his credit on the date of termination or re-employment subject to a maximum of 300 days, including the period for which encashment was allowed at the time of retirement.

(vii) Teachers appointed on contract :

The teachers appointed on contract will *suo-motu* be allowed encashment of earned leave at their credit on the date of termination of contract subject to the ceilings mentioned below :

period of contract	maximum earned leave for which encashment will be allowed at the time of termination of contract
2 years of less	No encashment
more than 2 years upto 5 yrs.	30 days
more than 5 years upto 10 yrs.	60 days
more than 10 years upto 15 yrs.	90 days
more than 15 years upto 20 yrs.	120 days
more than 20 years upto 25 yrs.	150 days
more than 25 years	180 days

(b) The encashment of earned leave above will, however be subject to the condition that the total earned leave for which encashment will be allowed to gether with the earned leave or full pay leave for which encashment has been allowed in previous appointments, if any, under the Government, an autonomous body or bodies or public sector, undertaking (s) is not more than 300 days.

(viii) Calculation of cash equivalent of leave.

The cash equivalent under clause 24 shall be calculated as follows and shall be payable in one lump-sum as a one time settlement. No House Rent Allowance or City Compensatory Allowance shall be payable :

Pay admissible on the date of retirement plus dearness allowance admissible on that date.

Cash equivalent = $\frac{\text{Number of days of unutilised earned leave at Credit on the date of retirement subject to a maximum of 240 days.}}{30}$

(ix) leave encashment when permanently incapacitated:

(a) Permanent incapacitation:

A teacher who is declared by a medical authority to have been completely and permanently incapacitated for further service may be granted, *suo-motu*, by the authority competent to grant leave, cash equivalent of leave salary in respect of earned leave due and admissible on the date of his invalidation from service, provided that the period of leave for which he is granted cash equivalent does not extend beyond the date on which he would have retired in the normal course after attaining the age prescribed for retirement under the terms and conditions governing his service. The cash equivalent thus payable shall be equal to the leave salary as calculated under clause (viii) or Ordinance 24.

(b) Dismissal/Removal:

When a teacher is dismissed or removed from service, he shall not be eligible for leave encashment.

(c) Leave at the credit of a teacher who dies in harness.

In case a teacher dies in harness, the cash equivalent of the leave salary that the deceased teacher would have got, had he gone on earned leave, but for the death, due and admissible on the date immediately following the date of death subject to a maximum of leave salary for 300 days shall be paid to his family. Further such cash equivalent shall not be subject to reduction on account of pension equivalent of death-cum-retirement gratuity.

Note 1 : The above provision is applicable in case of re-employed pensioners also. However, in their case no deduction on account of pension equivalent of DCRG, gratuity need be made from the cash equivalent in respect of the leave earned during re-employment which has to be calculated on the basis of pay drawn by him during the period of re-employment (exclusive of pension and pension equivalent of other retirement benefits).

Note 2 : In the case of teachers governed by the contributory provident fund rules no deduction need be made out of cash equivalent of leave salary on account of University contribution of C.P. Fund.

25.

APPENDIX-VI

Bond to be executed by the Faculty members when granted Study Leave exceeding the period of one year.

[Sec Rule 10(xv)]

This agreement made on this _____ day of _____ 19____ between the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University being, a body corporate constituted under the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Act, 1994 (53 of 1994) (hereinafter called the University of the one part) and

- (i) resident _____ of _____ (hereinafter called the Obliger of the second part); and
- (ii) resident of _____; and
- (iii) resident _____ and _____ (iii)

(hereinafter called -(ii)- jointly the sureties of the third part).

WHEREAS the Obliger is employed in the Babasaheb Bhimrao Ambedkar University in the

AND WHEREAS THE Obliger has applied for Study Leave for the following purpose:

AND WHEREAS the University has agreed to grant Study Leave on the condition that after the completion of studies, the Obliger will re-join the University and serve the University for a minimum period of 2 years. The Obliger has agreed to this condition and the sureties have also assured the University that the Obliger will perform these obligations faithfully.

1. THAT the obliger undertakes that after completion of studies as aforesaid shall re-join the University and shall serve under the University for a minimum of 2 years.
2. THAT in case the obliger fails to complete studies within the period of Study Leave or fails to re-join the service of the University on the expiry of Study Leave or resigns from the service of the University at any time before the expiry of the agreed period of service after return to duty at the University or is dismissed or removed from the service by the University within the period aforesaid the obliger and the sureties shall forthwith pay to the University or as may be directed by the University a sum of Rs. as liquidated damages and refund the advances received by the obliger from the University and shall pay all the expenses incurred by the University on the Obliger consequent on the grant of study leave, provided always that if the Obliger completes 18 months service after return from study leave, then the sureties and the Obliger shall be liable to pay only half the amount of the liquidated damages.
3. THAT the Obliger and the sureties shall pay interest at the rate of 6% per annum on the amount payable as per clause 2 above.
4. THAT the liability of the Obliger and the sureties to pay the amount due to the University shall be joint and several and the University shall be competent to recover the amount due from all or either or them.
5. That the herein above given is a continuing surety and shall not be impaired or discharged by reason of any time being granted or by any forbearance, act or omission of the University or any person authorised by it or any other indulgence or concession shown by the University to the Obliger or to anyone surety and the University shall be competent to recover the amount due from all or either or them.

6. THAT the University may at its discretion extend the study leave of the Obliger from time to time without any reference to the sureties and the sureties shall remain liable in all respects for the amounts payable under these present rules during the original period as well as during the extended period.

7. THAT if any amount is paid by the University outside India then the Obliger and the sureties shall be liable to pay the equivalent amount in Indian currency according to the prevalent official rate of exchange at the time of payment.

IN WITNESS WHEREOF the parties have set their hands hereto in presence of witness :

Witness No. 1. Sig. _____

(Name : _____) (Obliger)

No. 2. Sig. _____

(Name : _____) Surety No. 1

Witness No. 1. Sig. _____

(Name : _____) (Surety No. 1)

No. 2. Sig. _____

(Name : _____)

Witness No. 1. Sig. _____

(Name : _____) Surety No. 2

No. 2. Sig. _____

(Name : _____)

Witness No. 1. Sig. _____

(Name : _____)

No. 2. Sig. _____

(Name : _____)

CHAPTER XXI

MASTERS DEGREE PROGRAMMES

[Section 27(b)(c) read with Statute 18(3)(a)]

1. The Masters Degree Programmes in the University are full time courses of study spread over a period of four academic semesters in

two academic years. These courses cannot be combined with any other full-time courses or any part time post-graduate courses offered by the University except those, which may be designed by the University generally or specially for the Post-graduate students of the University.

2. (a) A candidate seeking admission to any of the courses must possess the qualifications prescribed by the Board of the School as approved by the Academic Council from time to time.
- (b) Admission to different courses shall ordinarily be made only in the first semester in the beginning of each academic year unless specifically decided for a course by the Academic Council.
- (c) Candidates who have taken the Bachelors Degree under three year degree course in pass or honours/general or major, of this University or any other recognised University shall be eligible to apply for admission to courses offered by the University subject to provisions of the regulations relating to prerequisites, if any. The minimum qualifying marks for admission to the different courses shall be as per the regulations.
- (d) Final admission to a course will be made on the basis of the candidate's performance at the eligibility test by the admission committee of the concerned Department, if any, and his academic performance in the under graduate course.
3. (a) Subject to the general guidance of the Board of the school, the instruction and in each course shall be under the control and direction of the head of the department concerned :
Provided the number of lectures in a theory course shall ordinarily be not less than forty-five of one hour duration each.
- (b) Each student, with respect to his work in the course as well as his general conduct in the University, shall remain under the control of the School and the discipline of the concerned Department.
- (c) The Board of the School on the recommendations of the Department, may recommend the removal of the name of a student from the course on the basis of unsatisfactory performance or indiscipline.
4. Ordinarily a student should complete sixteen courses/papers during the period of four semesters. However, a student may be allowed to participate in the academic programme upto a maximum of six semesters.
5. A student who does not clear a course or courses (owing to failure to pass, or to appear in the Sessional work and end-Semester Examination), may clear the course subsequently in one of the remaining semesters during which he is eligible to participate in the curricular programme under the provisions of 4 above :
Provided that if a student by the end of the second semester has not been able to clear internal assessment in more than four of the eight courses of the first two semesters or having cleared the course desires to improve his over all performance including the sessional work in more than four courses thus obliging him to attend regular classes, he shall not be eligible to move on to the third semester and will have to attend the concerned courses with the next batch or seek fresh admission and pursue the entire course-work as a fresh candidate.
6. (a) Evaluation for each course shall be done on the basis of performance in sessional work and End-Semester Examination.
- (b) Each course shall carry maximum marks/credits as may be prescribed by the Board of School. For the purposes of determining the marks obtained by student in any course, the weightage assigned to Sessional work and End-Semester Examination shall be 30:70.
- (c) The pattern and schedule of Sessional work and evaluation for each course in a semester, as approved by the Board of the School on the recommendation of the concerned Department, shall be made known to the student at the commencement of each semester.
7. The dates of commencement and termination of each semester shall be fixed by the Academic Council.
8. (a) In order to qualify for the Master's Degree a candidate must have secured at least 40 % marks or equivalent grade in each course and 40% marks or equivalent grade in the aggregate of all courses.
- (b) A candidate who obtains 40% marks or equivalent grade or above in the aggregate of all courses but below 50 % marks or its equivalent grade may be permitted to repeat any course or courses and to participate in the sessional work and the semester examinations in order to improve his/her performance. The conditions for repeating a course or courses shall be prescribed by the Regulations.
9. Successful candidates shall be awarded the Degree under the following classification :
First Division : 60 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all the examinations and sessional work.

Second Division : 50 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all examinations and sessional work but less than 60 per cent.

Third Division : 40 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all examinations and sessional work, but less than 50 per cent.

10. No candidate will be allowed to appear in any course more than twice and no candidate shall be allowed to appear in any course beyond six semester of his first admission to the programme.
11. The course of study and the scheme of examination for the Degree in each subject shall be such as may be approved by the Board of the School on the recommendation of the Board of Post-graduate Studies of the Department concerned.
12. The syllabi for the courses in any subject shall be such as may be approved by the concerned department, which shall also prescribe books and other reading material for each course.

CHAPTER XXII

POST GRADUATE DIPLOMA PROGRAMMES

[Section 27(b)(c) read with Statute 18(3)(a)]

1. The Post Graduate Diploma Programmes in the University are full time courses of study spread over a period of two academic semesters in one academic year. These courses cannot be combined with any other full-time courses or any part time post-graduate courses offered by the University except those, which may be designed by the University.
2. (a) A candidate seeking admission to any of the courses must possess the qualification prescribed by the Board of the School as approved by the Academic Council from time to time.
(b) Admission to different courses shall ordinarily be made only in the first semester in the beginning of each academic year unless specifically decided for a course by the Academic Council.
(c) Candidates who have taken the Bachelor's Degree under three year degree course in pass or honours' general or major, of this University or any other recognised University shall be eligible to apply for admission to course offered by the University subject to provisions of the regulations relating to prerequisites, if any. The minimum qualifying marks for admission to the different courses shall be as per the regulations.
(d) Final admission to a course will be made on the basis of the candidate's performance at the eligibility test by the admission committee of the

concerned Department, if any, and his academic performance in the under graduate course.

3. (a) Subject to the general guidance of the Board of the School, the instruction and in each course shall be under the control and direction of the Head of the department concerned :
Provided the number of lectures in a theory course shall ordinarily be not less than forty-five of one hour duration each.
(b) Each student, with respect to his work in the course as well as his general conduct in the University, shall remain under the control of the School and the discipline of the concerned Department.
(c) The Board of the School on the recommendations of the Department, may recommend the removal of the name of a student from the course on the basis of unsatisfactory performance or indiscipline.
4. Ordinarily a student should complete eight courses during the period of two semesters. However, a student may be allowed to participate in the academic programme upto a maximum of four semesters.
5. A student who does not clear a course or courses (owing to failure to pass, or to appear in the Sessional work and End-Semester Examination), may clear the course subsequently in one of the remaining semesters during which he is eligible to participate in the curricular programme under the provisions of 4 above.
6. (a) Evaluation for each course shall be done on the basis of performance in Sessional work and End Semester Examination.
(b) Each course shall carry maximum marks/credits as may be prescribed by the School/Board. For the purposes of determining the marks obtained by student in any course, the weightage assigned to Sessional work and End-Semester Examination shall be 1:3.
(c) The pattern and schedule of Sessional work and evaluation for each course in a Semester, as approved by the Board of the School on the recommendation of the concerned Department, shall be known to the student at the commencement of each semester.
7. The dates of commencement and termination of each semester shall be fixed by the Academic Council.
8. (a) In order to qualify for the Post Graduate Diploma, a candidate must have secured at least 40% marks or equivalent grade in each course and 40% marks or equivalent grade in the aggregate of all courses.
(b) A candidate who obtains 40% or equivalent grade or above in the aggregate of all courses

but below 50 % marks or its equivalent grade may be permitted to repeat any course or courses and to participate in the sessional work and the semester examinations in order to improve his performance. The conditions for repeating a course or courses shall be prescribed by the Regulations.

9. Successful candidates shall be awarded the Post Graduate Diploma under the following classifications :

First Division : 60 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all examinations and sessional work.

Second Division : 50 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all examinations and sessional work, but less than 60 per cent.

Third Division : 40 Per cent marks or equivalent grades or more in the aggregate of all examinations and sessional work but less than 50 per cent.

10. No candidate will be allowed to appear in any course more than twice and no candidate shall be allowed to appear in any course beyond four semesters of his first admission to the programme.
11. The course of study and the scheme of examination for the Post-Graduate Diploma in each subject shall be such as may be approved by the Board of the School on the recommendation of the Board of Post-Graduate Studies of the Department concerned.
12. The syllabi for the courses in any subject shall be such as may be approved by the concerned Department, which shall also prescribe books and other reading material for each course.

U. S. RAWAT, Registrar.
[ADVT. III/IV/Exty/282/04]